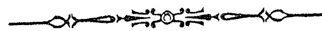
श्रीः ।

रसमोदक-हजारा ।

भाषा-काव्यम् ।



जिसको

श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत् कुँवरस्कंद गिरिजीने
नाना प्रकारके छंदोंमें निर्मित किया ।

जिसमें

सुरस नायक नायिका भेद विस्तारपूर्वक वर्णित है ।

वही

पन्ड्या रामनाथजी मु० पन्ना-बुन्देलखण्ड
द्वारा प्राप्तकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

कार्तिक संवत् १९५७.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

रसमोदक हजारा.

प्रथमोल्लासः १.

दोहा ।

मन भज तनय महेशको, नेक न रहै कलेश ।
ध्यान करे फल होत है, सुक्ख बुद्धिबल वेश ॥ १ ॥
शिवसुत षोडश नामके, बलप्रताप सुखपाइ ।
रसमोदक शुभ ग्रंथको, बिरच्यो सरस बनाइ ॥ २ ॥

कवित्त ।

हरन सुदुःखहूके दलन दरिद्रहूके,
करन जु सुक्खहूके देनहारे ज्ञानके ।
पापनके जेते जे समूह भवसागरके,
तेते सब छूटिजात नेक धरे ध्यानके ॥

भनत स्कंद ऋद्धि सिद्धि अरु संपदाहूके,
विनश्रम पावहीसो कीन्हें गुणगानके ।
शत्रुदल गंजन सु भंजन कलेशहूके,
ऐसे पदपद्म शिव करुणानिधानके ॥ ३ ॥

दोहा ।

हरत दुःख दारिद्रको, तुरत गरीबनिवाज ।
अष्टसिद्धि नवनिद्धिवश, होहिं सकलशुभकाज ४

कवित्त ।

भूषण अनेक साजे सिंहपै सवार राजै,
शोभा यों अनूप छाजै अर्द्धचंद्र भालिका ।
दुष्टमुखभंजनी महेशमनरंजनी है,
श्यामतनुमंजनी सुजनप्रतिपालिका ॥
भनत स्कंद धरैध्यान सो विशाल काये,
सोहै मुंडमालिका करै सो जमजालिका ।
हरत कलेश सुख भरत हमेश वेश,
करत सुबुद्धि स्वच्छ नित्य प्रतिपालिका॥५॥

दोहा ।

जगदंबा अब कृपाकरु, पूत निकंबा जान ।
हे अंबा तेरी शरण, दास आपनो मान ॥ ६ ॥

सोरठा ।

शिवसुत प्रथम गणेश, द्विती शिवाशिव भज चरण।
तृतिय सुकबि उपदेश, वंदि रचौं यह ग्रंथको॥७॥
कृपा शारदा कीन, हिये शारदा अति बढ़ी ।
जिमि जल चाहत मीन, सुमति शारदाको चह्यो ८

दोहा ।

प्रथम कहत शृंगार रस, नव रसमें कविराव ।
होत नायका नायकहि, आलंबन रस भाव ॥ ९ ॥
ताते प्रथमहि नायिका, नायक बहुरि बनाय ।
भाव हाव जे तरुणके, ते पीछे कहगाय ॥ १० ॥
उर उपजत लखि जाहिको, रस शृँगारको भाव ।
ताहीको कहि नायिका, वर्णत जे कविराव ॥११॥

नायिकाको उदाहरण–कवित्त।

कीरति किशोरी छबि वरणी न जात मोपै,
कोटि मेनकाकी गति होत मतवारे हैं।
अंग अंग शोभितही लोभित निरखि होत,
प्रगट प्रदीप्तमान उपमा न टारे हैं॥
भनै अक्षकंद रच्यो वदन विरंचि जबै,
आभा जौ न रही तासु करन मँझारे हैं।
दीन्ह्यों जो निचोय धोय एकठौर चंद्र भयो,
छिरकेते बूँद भये तौन नभतारे हैं॥ १२॥

दोहा।

भौंर मयूर चकोर शुक, करकच आनन बिंब।
लखि अनंद हिय सरसते,कंज मेघ शशि बिंब१३
तीनभाँति सो वरणिये, प्रथमहि सुकिया नारि।
परकीया पुनि दूसरी,गणिका तृतिय निहारि १४

सुकियालक्षण–दोहा।

पूरण पतिकी प्रीति मन, दिन दिन अति सरसाहि।

लज्जा शील पतिव्रता, सुकिया कहिये ताहि १५॥

यथा–कवित्त ।

कंचन वरण नैन खंजन अधरबिंब,
पंकज कपोल कंठ राजतकपोत है ।
सास दिवरानी औ जिठानी मनमानी वेश,
सुनिमृदुवानी झरै सुमन सुगोत है ॥
भनत स्कंद पिय आनँद अनंद भरी,
सौत सतसंग रंग रंगन उदोत है ।
ऊनीहू न होति होति दूनी द्युति आननकी,
सहज सुभाय बढ़ै जगमग जोत है ॥ १६ ॥

दोहा ।

सास सराहत रीतिकुल, ननँद सराहत चैन ।
पीय सराहत प्रीति मन, सौत सराहत वैन ॥१७॥
तीनभाँति सुकिया कही, मुग्धा मध्या जान ।
पुनि प्रौढ़ा परवीन कहि, सकल केलि सुखदान १८

मुग्धालक्षण—दोहा ।

जाके तनुमें होत है, यौवन उमँग नवीन ।
ताको मुग्धा कहत हैं, जे कवि रसिक प्रवीन १९

यथा—कवित्त ।

होनलागी वंदन विलोकै द्युति चंद मंद,
मृदु मुसक्यानको कपोलनपै ढार है ।
सुखद सुवैन कोकिलान मान खंडनको,
नैन नये खंजनकी उपमा निसार है ॥
भनत स्कंद कछू अंकुर उरोजनसों,
अंचल उचाइ दिन दिन अनुसारहै ।
देखतही अधिक अनंद नंदनंदनके,
सौतनके शाल बाल अति सुकुमार है ॥ २० ॥

दोहा ।

वार दियो मन लालने, लखि नवरूप रसाल ।
दिनप्रति दूनी द्युति बढै, सौतिनके हियशाल२१॥

पुनः कवित्त ।

सुख सरसातदेखैं कंचन वरणगात,
लाल मन मोहिरही खेलत अलीनमें ।
मृदु मुसक्यानकी कपोलनमें गाड देखि,
मन गड़जात कौन ऐंचत बलीनमें ॥
भनत स्कंद स्वच्छ आनन विमल बाल,
पेखे सम चंद्र प्रभा रहत मलीनमें ।
गोरे गोरे गातन उरोज छबि दूनी बढै,
उपमा न पाई जात कमलकलीनमें ॥ २२ ॥

दोहा ।

ता मुग्धाके कहतहैं, कवि द्वै भेद विचारि ।
प्रथम कही अज्ञात पुनि, ज्ञात यौवनानारि ॥२३॥

अज्ञात लक्षण-दोहा ।

निज तरुणाई को जिहै, आगम जानि न जाइ ।
ताहि कहत अज्ञातहैं, जे सुजान कविराइ ॥२४॥

यथा-कवित्त ।

रहस रच्यो वृंदावन गोपी ग्वाल आये वन,

राधिकारमणसह राधिका सुहायेहैं ।
मंज मंज कुंजनमें जाइछिपैं चारों ओर,
देखे जो जहाँई तहाँ कौतुक दिखाये हैं ॥
भनत स्कंद भई तृषावंत प्यारी अति,
नीर तट जाइ दुवे कर पर शाये हैं ॥
अंजलि भरत छोड अंजलि भरत देख,
पीवत न मीन मृग खंजन रमाये हैं ॥ २८ ॥

दोहा ।

रहसकेलि श्रम तृषावर, यमुनातटपै जाइ ।
अंजलि भरिछोडत भरत,पियत न मन अकुलाइ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

खेलन नवेली संग लाग गई कुंजनमें,
लखिकैनँदलाल ख्याल दीन्ह्योहै मचाइकै ।
दौरि दुरि हेली सब सघन लतान बीच,
आप चले ढूँढ़नको प्रेम सरसाइकै ॥
भनत स्कंद मिस छुवन सुधाइ गहि,

लेत भरि अंक नेह नूतन लगाइकै ।
रसवश चातुरी न जानै कछु बाल लाल,
अधिक अनंद होत मन सुखपाइकै ॥ २७॥

दोहा ।

छुवत छिपावत जोरसों, मोहिं लगावत अंग
ऐसो खेल न खेलिहौं, लाल तिहारे संग ॥ २८॥

बरवै ।

अब नहिं कुंजन जैहौं पियके संग ।
आइ अचानक मोसन मिलवत अंग ॥ २९ ॥

दोहा ।

करिमंजन ठाढ़ी कहै, कालिंदीके तीर ।
मो कटिभार सु आज यह, सह्यो परत नहिं वीर ३०

ज्ञातलक्षण–दोहा ।

चढ़त जासुके तरुणई, जानत जो बरनार ।
ज्ञातयौवना कहतहैं, विमलबुद्धि आगार ॥ ३१ ॥

यथा--कवित्त ।

लोचन विमल नवीन दलपंकजसे,
होनलागे सरस रसीले सुखचैनसों ।
गोल गोल गहब गुलाबी हैं कपोलदुवौ,
बोल अति रसकी निसासी लगे देनेसों ॥
भनत अस्कंद जोर यौवन जनायो ताहि,
वरषन लाग्यो अति प्रेमसुधा बैनसों ।
गजगति चलत नवेली निज छाँह देखि,
भेंट होत मनमें अचानकही मैनसों ॥ २२

दोहा ।

चलत नवेली छाँह लखि, सखियन डीठि बचाइ
मनमतंग जबते कियो, मैन महावत आइ ॥ २३

पुनःकवित्त ।

रूपगुण सरस नवेली अलबेली सुन,
नेकहूँ न मानै बालि सुवश हुलासमें ।

द्वारपर आवै छिन छिनपै कहाँलौं कहौं,
सीखत न सीख नये गुणन विकाशमें ॥
भनत स्कंद देखि अधिक ढिठाई यह,
मोहिं कहिआई तोहिं लगत निराशमें ॥
दिन दश बीशहीमें छूटि लरिकाई गई,
तिमिर नशात जैसे रविकेप्रकाशमें ॥३४॥

दोहा ।

रहत अकेली सुमनवश, छाँह विलोकत बाल ।
ताछबि देखैं चोपसों, पगे रहत नँदलाल ॥३५॥

पुनः यथा–सवैया ।

नित दूनी बढ़ै द्युति आननकी,औ विचार करै रतिकी छतियाँ । कछु कामकलानके कौतुकसों, रसके चसकेकी सुनै बतियाँ ॥ असकंद प्रतीति न प्रीतमकी, सखियानके संगरहै रतियाँ । कर कंजसों आरसी लै मिसकै, मन मौजसों बैठिलखै छतियाँ ॥ ३६ ॥

दोहा ।

नवल बाल छबि नवल सुख,नवल काम छबिचोप
नवल तरुणई तनु चढ़त, लखत आलसी ओप३

पुनःयथा–सवैया ।

दृग अंजन दै रुचि सों रचि अंग, उमंग मनो
कछू दरशात । सुनै मृदुवैन अलीगणसे, मनसं
करमोद किये सकुचात ॥ भनै असकंद उरोजन
कंज, कलीसम चारु कहै मुसकात । लिये क
आरसी आनन ओप, शशी दिन रैन विलोकत
जात ॥ ३८ ॥

दोहा ।

करि मंजन सौरभ सहित, लहि केसरमुखचंद ।
बैठ आदरस भवन रुचि, तनु द्युति निरखि अनंद॥

पुनर्यथा–सवैया ।

अंग अंग उदित अनूप अधिकान लागे, पागे

प्रेम वैन सुधा बुंदन झरतहै । उरज उँचाइनपै चाह चित चौप चारु, कंचुकी कसत हिय शंकहि करत है ॥ भनत स्कंद रसप्रीतिहि सयान सीख, प्रगट दुराउ कामरीति न डरतहै। बैठि निज मंदिर विलोकि मुख कंज दीठि, सखिन बचाइ मन आनँद भरतहै ॥ ४० ॥

दोहा ।

अंजन दै खंजन निरखि, उरज कोक शिशुदेष ।
करदल पंकज परसकरि, सखिन छिपाइ निमेष॥

नवोढालक्षण–दोहा ।

लाज धरै उरमें डरै, रति नचहै सुकुमारि ।
ता मुग्धाको कहत हैं, सुकवि नवोढा नारि॥४२॥

सवैया ।

शुभ नूतन रूप विशाल बन्यो, लखिकै मुख चंद मलीन परै। मृग खंजन देखत नैनन

को, सुनि बैनन कोकिल धीर धरै ॥ असकंद भनै निशि होत जबै, तबहीं अतिहीं उर बीच डरै । ननदीन सखीनके संग परै, पियके हियकी न प्रतीति करै ॥ ४३ ॥

दोहा ।

नेह सखिनके संगमें, अधिक लगावति बाल ।
नेक प्रतीति न लालकी, सौत हियेमें शाल॥४४॥

पुनः सवैया ।

कर मंजन भौनमें ठाढ़ी भई, नवबाल विशाल सुछैल छरी । सजि अंबर भूषण अंग सबै, छतिया अँगिया बिच एक परी ॥ असकंद भनै भयो आइबो त्यों, पटओट छिपी डर लाज भरी । मनौ पंकजकी लखिकै पियको, मुखचंद कलीसी लपेटधरी ॥ ४५ ॥

दोहा ।

सुनि आगम पियको तिया, डरी खरी लजिआइ

बाह छुवत निज सखिनके, लगी धाइ उर धाइ ४६

पुनर्यथा--कवित्त ।

बाल नव सरस विशाल छबि छाई अति,
श्याम हित चाहिकै लगाई यों सरोदनी ।
बातन लगाइ चली कुंजन लिवाइ लियो,
बीच मग जाइ किये सुरत विनोदनी ॥
भनत स्कंद देख मन वश ताके भयो,
भुजभर लीन्हीं जान मनकी प्रमोदनी ।
अंक इमि त्रासमान ज्यों लखि प्रकाशमान,
भासकर आसमान रहत कुमोदनी ॥ ४७ ॥

दोहा ।

लखी लाल सूने भवन, गही अचानक आइ ।
झझक छुटी कंपत परी, धरक न हिये समाइ ४८

सवैया ।

निकुंजमें खेलनको गई दौर, हँसै विहरै वही केलितरंग । तहाँ लखि कोकिल कीर कपोत, रहे

थकि और अनेक विहंग । भनै असकंद समौ लहि श्याम, दुरे निकरे कर प्रेम उमंग । विलोकतही डरलाजभरी, सुकँपी छिपी जाइ सखीनके संग ॥ ४९ ॥

दोहा ।

खेलत सँग सखियानके,अति मन प्रफुलित गात ।
लखत लाल उर बालडर, धरकन हिये समात ५०

विश्रब्धनवोढा लक्षण ।

कछू कछू उरमें धरै, प्रीतम प्रीति प्रतीति ।
डरै नवोढा रतिविषे, सो विश्रब्धकी रीति ॥ ५१ ॥

यथा--कवित्त ।

चंपक वरण रूप रतिकी हरन प्यारी,
वारी मत देख कह्यो कछुना सरोदनी ।
कंचन महल जहाँ मन अनमोल ताते,
प्रीतम बुलायो गई रतिकी विनोदनी ॥

भनत स्कंद अति छबि छकि आतुरसों,
कर गहि लीन्ह्यों चाहि मनकी प्रमोदनी ।
देखि मुख लाजभरी अति सकुचात ऐसे,
लखिकै लजात जैसे रविको कुमोदनी ॥ ६२ ॥

दोहा ।

ज्यों मर्कट रवि अंत लखि, रहत लता सों जाय ।
त्यों ब्रज बाल विलोकिनिशि, कछुमनमाहिं सकाय

पुनर्यथा--कवित्त ।

नव ब्रजनारि रूप रति अनुहार भली,
नितप्रति आवै करि बतियाँ सुनाय जाय ।
नैन सैन करिकै मनोज भरी चातुरी सों,
रसहूको चाहै डर वसहू भगाय जाय ॥
भनत स्कंद उठी छातियाँ नुकीली तासों,
चोप चसकीली चारु चौगुणी चढ़ाय जाय ।
पिय रति चाहै तब अति सकुचाय रहे,
छाँह परे जैसे लाजवतिहू लजाय जाय ॥६४॥

दोहा ।

चख जोरत पिय चोपसों, लाज करति सुकुमार ।
ज्यों कुमोदनी रवि लखै, करै न तनु विस्तार ५५

पुनर्यथा--कवित्त ।

मृदुल कपोल लागे विहसन मंद मंद,
आनँदकी कंद शोभा सुरत समीरहै ।
अंबुज अमल दल विमल सुहाये नैन,
सरस सुबैन जाके बसत अमीरहै ॥
भनतस्कंदशुभ आनन छटाकी छूट,
निपट कलानिधिकी कौमुदी कमीरहै ।
मैन हिय वास बढ़ी रतिकी हुलास ताते,
प्रीतमके आस पास रमक रमीरहै ॥ ५६ ॥

दोहा ।

आवै नितप्रति प्रेमसों, डरवशजाय भगाय ।
पिय रति चाहै प्रीतिसों, तबहीं अति सकुचाय५७॥

यथा-सवैया।

रहै आठहु याम मुकाम यही, निजधाम सखीनके संगपरै। बतियाँ जु कहै कोउ आवनकी, छतियाँ लखि डीठि बचाइ डरै॥ असकंद ह्वैजात जु भेट कहूँ, अतिप्रेम बढ़ा हिय शंक करै। पिय चाहत प्यारी न अंक भरै, घनके वश दामिनि ज्यों न परै॥ ८८॥

दोहा।

चसकीली वह चोपसों, रसहित आवत धाय।
परवश परत न जानकै, डरवश जातभगाय॥८९॥

यथा-सवैया।

साहसकै रसके वशमें गई, देखन आनन पीकर साजहि। लाल निहाल भये अवलोकि, लई भरि अंक विशाल विराजहि॥ त्यों असकंदभनै करते छुटिजाइ छिपी धरिकै उर लाजहि। भामिनी

ढूँढ़े न पावत हैं हरि, चाँदनीमें मिलिकै दुर भाजहि ॥ ६० ॥

दोहा ।

रस चाहति हिय डरति कछु, रहत सखिनकेसंग ।
होत अचानक भेंट जो, नेक न छ्वावत अंग ॥६१॥

मध्यालक्षण–दोहा ।

लाज काम सम जासुके, मनमें दोई होइ ।
मध्या तासों कहत हैं, कवि कोविद सबकोइ ॥६२॥

यथा–कवित्त ।

आई सजि अगन उमंग केलि मन्दिरलौं,
सुंदर सुजान लखि मोहन निहारिबो ।
ताही समै सहित सकोचवश लोचनके,
समुद सरोजसे निचौंहैं छबि धारिबो ॥
भनत अस्कंद परयंकपै पियारो तहाँ,
अंकभरि लेत है निशंक सुखसारिबो ।

सरस सुधासे प्रेम मधुर विलासेवैन,
बार बार मंजुमुख नाहींको उचारिवो ॥ ६३ ॥

दोहा ।

सुघर सुघर सुघरी घरी, धरी न धरकहि मैन ।
भरी लाज मन दल कमल, पियके देखत नैन६४

यथा—सवैया ।

परयंकपै पौढ़े दुहूं सजि अंग, प्रसंग अनंग हियेमें चहै । तजि नूपुरदूपुर पाँइनके चित चाइन चाप प्रमोदलहै ॥ असकंद भनै पिय चाहत अंक, तहीं अनखाइ सकोच सहै । मन मोहन सुंदर केलि करै, छतियाँके लगै वतियाँ न कहै ॥ ६५ ॥

दोहा ।

छवि लखि मूरति श्याम वह, आनँदउरनसमात ।
सखि भरि आवत प्रेम उर, कहत वनै नहिं बात६६

पुनः--दोहा ।

जो सोवत पिय मुखहि की, होत विलोकन हान ।
जो न नींदवश होइतौ, गहन चहत पिय पान६७

प्रौढा लक्षण ।

पतिहीके रसलीन मन, केलि कलनकी खान ।
प्रौढा तासों कहतहैं, जे कवि बुद्धि निधान॥६८॥

यथा--कवित्त ।

सुरति रची यों विपरीति प्राण प्रीतमसों,
विज्जुल छटासी करै श्यामघन नीचै है ।
झुकिझुकि वारबार मिलि मुख चूमि चूमि,
अधिक अनंद भरी सुख तनु सींचै है ॥
भनत स्कंद त्यों अनंग की उमंगनमें,
धरत न धीर परी कंचुकी दरीचै है ।
वेंदा लगि मोतिनकी टूटि लर छूटि भई,
मानो मुख चंद्रकी प्रकाशित मरीचै है ॥६९॥

पुनर्दोहा ।

पगी सुरति विपरीतिमें, प्यारी हितहि लगाइ ।
पिय जब मुख चूमन चहै, तबै रहै शिरनाइ ७०॥

पुनर्यथा-सवैया ।

रंग भरे हितसों मिलिकै, परयंकपै पौढ़े दुवो सुख पाई । होनलगी रतिकी विपरीति, अनंगने आपनी रीति जनाई ॥ त्यों असकंद चह्यो पियने मुख चूमन लाज करी शिरनाई । आननपै लट आनपरी शुभ चंद्रने मानौ दरार-सी खाई ॥ ७१ ॥

दोहा ।

छूटिपरी मोतिन लरी, बेंदाके चहुँ ओर ।
मनौ चन्द्रमुख ने करी, प्रगट मरीचै जोर ॥७२॥

प्रौढाभेद-दोहा ।

रतिमें जाकी प्रीति अति, रतिप्रीता कहि सोइ ।
आनँद आनँद मोहिता, प्रौढा भेद सु दोइ ॥७३॥

रतिप्रीता--यथा सवैया ।

भली जो बनी वह माधुरी कुंज, घने द्रुमपुंज मवीसी मवास । पियासँग केलि कियो निशिमें मन दै रतिमें अति कीन्हें हुलास ॥ भने अस-कंद परी चकचौंध उदै सुध आइ भई है निरास । लख्यो मुखचंद्र चकोरिनह्वै, लखि कंज प्रकाश विसारे बिलास ॥ ७४ ॥

दोहा ।

पगी रही रतिरंगमें, निशिभर प्रीतम संग ।
लखे कंज मुकुलित जबै, भई पीयरे रंग ॥ ७५ ॥

पुनः–दोहा ।

लखि रवि पीरे पहुफटे, ह्वै उदास ब्रजबाल ।
कहत न कछु चुपचाप ह्वै, रही देख मुखलाल७६

आनंदात्संमोहा--कवित्त ।

प्रातसमै प्यारी उठि प्रीतमके संगतै सु,
आई रतिरंग तेरी सुखको निबाहिकै ।

युग्मश्रुतिभूषण कपोलनपै दीप्तवान,
द्वैरवि फँसेहैं मनौ पंकज सराहिकै ॥
भनत अस्कंद केश छुटके छबीलीके सु,
मानौं अलि पुंज पुंज छाये हैं सलाहिकै ।
शुभ मुख तापै तिल दौर सुधाहेत मनौ,
चूमत पिपीलिकाहै चंद्रबिंब चाहिकै ॥७७॥

दोहा ।

रति करि प्रीतम सँग उठी, आनँद वश तिय भोर।
विहँसत सुधि न शृँगारकी, छुटे कंचुकी छोर ७८

पुनर्यथा--सवैया ।

पगी रतिरंग लगी पियसंग, अनंग उमंग जगी सब रैन । छुटे कुच कंचुकीके छराछोर, चुरी करकीं करकी सुध हैन ॥ भनै असकंद खुलीं अलकैं, बिथुरे कच त्यों बलि अंजन नैन ॥ हिये हुलसी मन मोद भरी सु, कहै इमि प्यारी सखीनसों बैन ॥ ७९ ॥

दोहा ।

जो सखि तुम मोहित कही, भई सही वह बात ।
मुक्तमाल विगलित लखी, आनँद उर न समात ८०

पुनर्यथा--सवैया ।

लई भरिअंक निशंक निहारि, पिया परयंकपै प्रेम बढ़ाइ । रची विपरीति तची रति अंग, उमंग मनोज करी सरसाइ । भनै असकंद अनंदमें वीर, रही न हमैं सुध प्रीतसमाइ । हरा कुच कंचुकी केशलौं छूट, छरा गहि गोद रही सकुचाइ ॥८१॥

दोहा ।

रची सुरति विपरीतिअलि,भरि भुजपियनिजअंक।
छकित छबीली छवि सरस,बैठीसमुद निशंक८२॥
मान समैमें होतहै, मध्या प्रौढा दोइ ।
धीरा बहुरि अधीर गण, धीराधीरा सोइ ॥ ८३ ॥
चतुराईके वचन कहि, कोप गोप कर सोइ ।
मध्याधीरा कहतहैं, जे प्रवीन कविलोइ ॥ ८४ ॥

मध्या धीराको उदाहरण।

यथा–सवैया।

अनूप बनी बलि रूप रसाल, प्रमोद भरी मुख राजत चंद। मयूर कपोत सु कोकिल कीर, चकोर रहे छकि प्रेम अनंद॥ भनै असकंद तहाँ गये श्याम, पगे सुखकोक कलानके छंद। विलोकत नैन किये अरविंद, रही चुप लाज मनोजके फंद॥ ८९॥

दोहा।

ललित लाल लोचन निरखि, मनु पाटल द्युति ऐन।
पलन परत कल विन लखे, यह छवि मूरति मैन॥

पुनर्यथा–सवैया।

साजि शृँगार विचार खड़ी, निज भौनमें कंचनसी लसै डाली। प्रेम समेत परी रसमें, हितसों

तहाँ आय गये वनमाली । देखतही असकंद भनै इमि, वैन कहै दृगमें करि लाली ॥ आज छकी छवि मैं इनकी, यहमूरतिमाधुरी मोहन आली८७

दोहा ।

आये छवि छाये छटनि, पगे प्रेम बड़ भाग ।
मोहित रति पति सम दृगन, वरषावत अनुराग८८

यथा—कवित्त ।

सरस रसीली सब गुणन उजागरसी,
बैठी तहाँ अमित प्रकाश उजियारीको ।
चंचरीक चारों ओर मोदित मदंध ताके,
तनुकी सुगंध मान खंडित निवारीको ।
भनत अस्कंद तहाँ आये नदनंद प्यारे,
अंग अंग रूप दरशात उरधारीको ॥
विनगुणमाल लाल उरमें विशाल देखि,
पंकज समान भयो चंद्रमुख प्यारीको ॥ ८९॥

बरवै ।

ललन ललित लखि लोचन यह सुखदैन ॥
मोचन विरह विथा भल मूरत मैन ॥ ९० ॥

मध्याअधीरालक्षण–दोहा ।

कहै कठोर वचन प्रगट, पियसों कोप जनाइ ॥
मध्या कहत अधीर तिय, तासों सुकवि बनाय९१

उदाहरण–कवित्त ।

कौन हित मानिकर ह्यांलगि पधारे आइ,
कठिन कठोर चित्त काविधि इतै ढरचो ।
रूप गुणआगर अनूप रस सागर हौ,
परतिय चाहि मोंहिं आनँद हिये भरचो ॥
भनत स्कंद कोक कलन प्रवीन प्यारे,
वह क्यों सहैगी यों विछोह दिनको परचो ।
मोंहिं समझावत रिझावत मिलैगो कहा,
रैन जित जागे उत जाव इत का धरचो॥९२॥

दोहा ।

आये वनवानिक भले, छाये छवि अनुराग ।
पाये सुख तित जाहु किन, भाये रति निशि जाग९३

पुनर्यथा—सवैया ।

बैठी हती निज मंदिरमें, रतिके अनुहार नये रस पागी । वैन कछू अनखाय कहे, लखिकै तिय दूसरेके अनुरागी ॥ आये कहा किहि कारणको, असकंद भनै तुमतो बड़भागी । रोकै नकोऊ तुम्हैं हितसों, जित रैन जगे तितहीं मत लागी ॥ ९४ ॥

दोहा ।

रैन जगे रसमें पगे, परतिय संग सुजान ।
तुमसे प्रीतम पाइकै, किहिविधि कीजत मान॥९५॥

पुनः-दोहा ।

तुम्हैं वसी करकै वसी, भली उरवसी आन ।
क्यों न मनायो मानहै, जोकर जानत मान ॥९६॥

मध्याधीराधीरा लक्षण–दोहा ।

रूखे कहिकै वचन कछु, रोइ सुरोष जनाइ ।
मध्याधीराधीर तिय, ताहि कहत कविराइ ॥९७॥

यथा उदाहरण–सवैया ।

गये घर श्याम विलोकत बाल, कहे इमिवैन कछूक विनिंद । भनै असकंद नयो रस चाखि, वसे कित रैन मलिंदमदिंद॥ अहो धन भाग कहा कहिये सु, मिले तुमसे पति मोहिं गुविंद । गिरे चखसों अँसुवानके बुंद, मनो मकरंद झरै अरविंद ॥ ९८ ॥

दोहा ।

सहित स्वेद सीकर सुमुख, निरखन किय हिय चैन।
वचन रचन भरि वारि दुहूँ, कहि वलि वारिज नैन॥

पुनसवैया ।

आये घरे नँदनंदन ज्यों, अस्कंद भनै लखिकै

ब्रजबाल है । नैनन नीर भरयो करिरोष,कहै इमि
बैन कियो उरशाल है ॥ क्यों सहों एतो बिछोह
घनो, उत जाब हमैं विधनै लिख्यो भाल है
प्राणपियारो मिलै तुमको, अति छैलछबीलो कौं
सो निहाल है ॥ १०० ॥

दोहा ।

पिय लखि वारिजनैन भरि, बोली वचन रिसाइ ।
तुमसे पति जाको मिलै, ताको सुख सरसाइ १०१॥

प्रौढाधीरा लक्षण–दोहा ।

रतिते रहै उदास अति, प्रगट न कोप दिखाइ ।
प्रौढाधीरा नायिका, ताहि कहत कविराइ॥ १०२॥

उदाहरण–सवैया ।

पिया परयंकपै पौढ़ि रहे पिय प्यारी बिलो-
किकै मूध सुभाइ । जुही वर मालती हार शृँगा-
रके, हारदये उरमें पहिराइ ॥ भनै असकंद गहे

करके द्युति, क्षीण भई मनमें रिसछाइ । मनौ बिन नीर गुलाबके फूल, तिहूंपर ग्रीषम आतप पाइ ॥ १०३ ॥

दोहा ।

लखि आगम आनँदभरी, खरी प्रेम परवीन ।
छुवत छरा छरकत छटनि, आनन घिरी लईन १०४

यथा–कवित्त ।

छैल ब्रजचंद्र आये मिलन छबीली काज,
रजनी बिताये नेह अधिक लगाये मन ।
प्रफुलित गात भये देखि शुभरूप अति,
कंज कर लीन्हो गहै मैनहू बढ़ाये पन ।
भनत स्कंद अंक भरत सु बोली बैन,
सकुच दुराये कुच छीजिये न मेरो तन ॥
औसर व्यतीत भये सुन नँदनंद प्यारे,
भरन न देत नीर बारिधि बलाहकन॥१०५॥

दोहा ।

पति हित प्रेम अनूप लहि, हरषित सहज सुभाव।
हाव भाव अनुभावको, अनुचित लखत न चाव॥

प्रौढा अधीरा लक्षण-दोहा ।

डर दैके तिय पीयको, फूलमार जो देइ ।
प्रौढा कहत अधीर यह, कविकोविद मत सेइ ॥

उदाहरण-सवैया ।

गह्यो कर यूथ सहेलिन बीच, लिआइ विलोकत सो अँग अंग। बताइ कछू सखियान सुनाइ रिसाय कहै तजौ यौन कुसंग॥ भनै असकंद प्रसन्न भरे,परनारिन सों विरच्यो रसरंग। सुधारत मालतीकी छरी सों, पियके हिय होत मनोज उमंग॥ १०८॥

दोहा ।

मृदुलकंज कर मालती, लै लचकीली डार ।
हनत हेर हँसि श्याम तनु, किय परातियको प्यार॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

जाइकै लिवाइ आइ रास केलि मंदिरते,
करिकर रोष यों सुनावै बैन आलीको ।
कीजियो न ऐसो काम प्रीतम हमारे तुम,
लीजो उर लाइ फेर सौत प्रीति पालीको॥
भनत असकंद तूतौ छैल ब्रजनारिनको,
गैल जाइ रोंकै गाय गाय राग तालीको ।
करि हग लाल रोष रस ब्रजबाल खड़ी,
फूलनकी माल लये मारै वनमालीको॥११०॥

दोहा ।

कहत सुनाइ सखीनको, अब न लीजिये नाम ।
मारदेत बनमाल लै,त्यों हरषत मन श्याम१११॥

प्रौढा धीराधीरा लक्षण–दोहा ।

है उदास रतिते रहै, पियपै भय दरशाइ ।
प्रौढा धीराधीर तिय, कहत सुजन रसगाइ११२॥

तथा-सवैया ।

कछु नैन उनींदे झुकी पलकैं अलकैं बिथुरीं रस चाखि नयो । इहि भाँति छके मदश्याम गये, लखि बाम अनूप प्रमोद ठयो ॥ असकंद भनै भरि अंक लयो, मनसों नवप्रेम मनोज दयो। मनभावतीको मुखचंद्र भलो, रिसके वशमें अरविंद भयो ॥ ११३ ॥

दोहा ।

परसत परम सुजानके, तनु छिन छरक रिसाइ ।
तेह तरेरे त्योरकरि, बैठी भौंह चढाइ ॥ ११४ ॥

पुनर्यथा-सवैया ।

बनी अलि रूपकी रास घनी, रतिकी द्युति कोटिन वारई देत । गये तहँ श्याम चढ्यो मन चोप बढ्यो,अति प्रेम करै हियहेत। भनै असकंद विलोकि रही, कछु भौंह चढ़ावत मान समेत ॥

गहे करके मुखरोष चढ्यो रग चंद मनौ अर-
विंदको लेत ॥ ११८ ॥

दोहा ।

गये श्याम शोभा निरखि, बोली कछू न बैन ।
गहे कंज करवालनै, करे तरेरे नैन ॥ ११६ ॥

ज्येष्ठाकनिष्ठालक्षण–दोहा ।

ज्येष्ठ कनिष्ठा कहत हैं, जहँ द्वै व्याही नार ।
जेठी प्यारी कविकहैं,लहुरी घट निरधार॥११७॥

यथा–कवित्त ।

बैठीं ब्रजबाल दुवो साज निज मंदिरमें,
आये नँदनंद तहाँ अमित अनंद सों ।
चंदन प्रसूनहार हिय पहिराये देख,
दरपन दिखाइ एक रूप कर फंदसों ॥
भनत स्कंद दूजी नजर बचाइवेश,
विमल कपोल दुवो परसत छंद सों ॥
भरभर भौंरनके डर वर कंज मानो,

सरवर छोड़ मिल्यो पगपरचंद सों ॥ ११८ ॥

दोहा ।

एक पीतपट ओट करि, एक अंकभरिऐन ।
मुखपर फेरत कंज कर, दूजीके उर चैन ॥११९॥

परकीयाभेद–दोहा ।

ऊढ़ अनूढ़ा भेद द्वै, कहत सुकवि अभिराम ।
चाहै जो परपुरुषको, परकीया वह वाम॥१२०॥
करै प्रीति परपुरुषसों, व्याही औरै जाइ ।
ऊढ़ा तासों कहतहैं,रसिक सुजन कहिगाइ१२१॥

यथा ।

तनु नूतन विशाल छबि छाई अति,
शोभा अनूप मनौ विधि रति गढ़ी रहै ।
अमल कपोलनको मृदु मुसक्यान देखि,
मुनि मन मोहिजात लालसा बढ़ी रहै ॥
भनत स्कंद नेह लगन लगाई मैन,
ताते निजमंदिरके द्वारही खड़ी रहै ।

कल छिन एकहू न परति विलोके विन,
मोहनकी प्रीति नई चितमें चढ़ी रहै॥१२२॥

दोहा।

लगी रहैं चहुँओरते, चुगल चवाई नार।
नेहलगेकी वात यह, कीजै कहा विचार॥१२३॥

पुनर्यथा–सवैया।

न जो बैठिये संग सखीनके तौ कहै, का करै बैठी अकेली जुदै। फँसी नेहके जालमें कैसी भई, सो कहा कहिये अपनो मनुदै॥ असकंदभनै यह प्रीतिकी रीति, हियेमें लगी छुटै कैसे मुँदै। मति साँवरे रंग रँगी सो कहै, चकही कब चाहत चंद उदै॥ १२४॥

दोहा।

नई लगन नँदलालकी, चढ़ी हियेमें ऐन।
खड़ी रहै निज द्वारपै, विन देखे नहिं चैन॥१२५॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

सघन लतान बृंदावन बीच आयो कान्ह,
ताहि लखिबेको करी इन चतुराईये ।
मैन भरे अधिक रसीले ऐन चैन देखि,
सरस सुशील भये तजिकै रुखाईये ॥
भनत स्कंद समै भूलत न येरी वह,
सहठ सुजान मान लहट लगाईये ।
शशिमुख वाको ताको सरस अमी पी छके,
अंचलके ओट दृग चंचल चवाईये १२६॥

बरवै ।

सखि विचार यह मनमें कहिये कौन ।
आवै जो इह मगमें रहिये मौन ॥ १२७ ॥

पुनः—सवैया ।

गइ वा दिन खेलन कुंजमें फाग, बदी यह बात वहाँकी रहै । तहँ आइगयो रँगमें सरबोर, विशाल बनी वह झाँकी रहै ॥ असकंद भनै

लखिकै सबरी, गहिबेको चलीं हम ताकी रहै ।
तबते कछु नैक न चैन परै, मति मेरी भटू
छवि छाकी रहै ॥ १२८ ॥

दोहा ।

बढ़ी प्रीति उर श्याम तनु, घटत घटाये नाहिं ।
देखनके मिस एक कर, चढ़त अटारी माहिं १२९

पुनः-दोहा ।

मेरे मनमें चढ़ि गयो, वह रँग रूप रसाल ।
कहौ सखी कैसे छुटै, विना मिले नँदलाल १३०॥

अनूढालक्षण-दोहा ।

अनव्याही अनुरागनी, और पुरुष सों तौन ।
कहत अनूढा ताहिसों, कवि पंडित मति भौन ॥

यथा-कवित्त ।

पूजन गिरीश गई बाल नई मंदिरमें,
मोद लहि अमित प्रमोद उर ठानै है ।
दोनों कर मलयागिरि चंदन विशाल लैकै,

अक्षत परश शीश सरस सुहानै है ॥
श्याम श्याम सुमन चढ़ाइ मन मानै सबै,
भनत अस्कंद बेशकौतुक दिखानै है ।
चंद्र जान उदित सुपंकज मुदित जान,
केश निशि मान मानौ भौंर भहरानैहै १३२

दोहा ।

लगी प्रीति पूरण हिये, लखि लोचन अभिराम ।
मिलै मोहिं विधि विनव वह, ब्रजजीवन घनश्याम ॥

परकीयाभेद-दोहा ।

गुप्ताविदग्धा लक्षिता, कुलटा मुदिता सोइ ।
अनुसैना युत भेद छै, ये परकीया जोइ ॥ १३३ ॥

भूतगुप्ता लक्षण-दोहा ।

सुरत करै कर गोवही, गुप्ता भूत बखान ॥
कहत ग्रंथमत देखिकै, जेकवि सुमति निधान ॥

यथा-सवैया ।

एक दिना तनु साजि प्रसूनन, हेतु गईवनतूसुन

लेरी। सो चहुँ ओर विलोकि चकोर, समौ लहि साँझ दशौ दिशि घेरी ॥ त्यों असकंद छटा घनश्याम, निहारि डरी करि लाज घनेरी। भागत केतकी कंटक लागि फटी रँग चौपरी चूनर मेरी॥१३५॥

दोहा।

अब न जाव पनिया भरन, चाहै सास रिसाइ।
चतुर चवाइन चौगुनी, देती दोष लगाइ ॥१३६॥

पुनः—सवैया।

यमुनातट कुंज कदंवके पुंज, प्रसूनन हेतु पठावती हौ। श्रम स्वेद विलोकि विना समुझे, मनमें जु कहा दरशावतीहौ ॥ असकंद अबै न कहौ हमसे, हकनाहक मोंहि लजावती हौ। सब बैठ भटू गुरुलोगनमें, किहिकाज कलंक लगावती हौ॥ १३७॥

दोहा।

भीजी रंग गुलालमें, नेक न परचो लखाइ।

करगहि मुख केसर मली, वीर कौनने आइ १२८॥

पुनर्यथा-सवैया ।

आज प्रभात गई यमुनाजल, मोद भरी मनमें मति ठानी ॥ देख चहूँदिशि धाये भटू, तजि पुंज मलिंद सुगंध सुहानी । त्यौं असकंद भनै लहि प्रेम, घिरी चहुँ ओर हिये अकुलानी ॥ का कहिये यह कंप अरी, तबते यह देहदशा दरशानी १२९॥

दोहा ।

ललित लता कंटक कलित, कुंजगैल लपटात ।
दसनफटे उत जात सखि, मो मन अति सकुचात ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

कासों कहौं आजकी कथा मैं यह मेरी भटू,
बीती जो बिथाहै काहि काविधि सुनैहौं मैं ।
सहजसुभाय चित्त चाहिकै विनोद मान,
मंजन अनेक कर कुंज छवि छैहौं मैं ॥

भनत स्कंद किन कोटि उपहासैं मोहिं,
तासे वहु सासकी अनेक सहिलैहौं मैं।
सैहौं ना चकोरनकी चुंग चोट चारों ओर,
आजतें न भूलहू कालिंदीकूल जैहौं मैं॥१४१॥

दोहा।

सखि गुलावके फूलकी, डार नवाई आज।
करते छुटि अँगियाफटी, हिये धरक अति लाज ॥

भविष्यगुप्ता लक्षण-दोहा।

करन सुरति चाहै हिये, आगूसे कर गोइ।
गुप्ता ताहि भविष्यकाहि, बर्णत कवि सबकोइ १४२

यथा-सवैया।

मौरसिरी जहँ हैरी भली विध, सोनजुहीकी लगी गति प्यारी। नीकी लगी भली माधवीकी छवि, सेवती चारु अनारकी वारी॥ चंपन भौंर भनै असकंद सु, केतकी वेलमें पेंच निवारी।

आज मैं देखन जैहौं वहाँ जहाँ, फूली गुलावकी है फुलवारी ॥ १४४ ॥

दोहा ।

विमल विलोकन जाय हौं, नूतन वह वन आज ।
गुंजत मधुप मदंध तहँ, शोभित नित ऋतुराज ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

हमैं फूल गुलावके टोरने हैं, शिव पूजवेको मति यों ठई है । यह गाउँ चवाइनको चरचो, सुनिकै डरपै जियसों दई है ॥ असकंद भनै सबहीके भटू, विधने लिख्यो भाल सोई भई है । हम यासों सुनाइ कहैं सब सों, फिर कोउ कहै न कहां गई है ॥ १४६ ॥

दोहा ।

मौरसिरी जहँ है अरी, सौनजुहीकी दौर ।
देखन जैहौं आज मैं, फुलवारी को ठौर ॥ १४७ ॥

वर्तमानगुप्ता लक्षण–दोहा।

करतजात जाहिर सुरत, गोवत तुरतहि जात।
वर्तमान गुप्ता कहत, ताहिसुजन अवदात॥१४८॥

उदाहरण–कवित्त।

और बनवाइबेकी चरचा चली है कहूँ,
तिनहि दिखायबेकी आन परी इनको।
येतौ ब्रजठाकुर न देयँ तौ करोंगी कहा,
माँगत हैं आरसी अँगूठी चारदिनकों॥
भनत अस्कंद यामें कछु बरजोरी नाहिं,
सुनियो सखीरी यों सुनाइ कहौं किनको।
सौंह कुलकानकी नदानबन देहौं नाहिं,
निशिको दिवसको घरीको एक छिनको१४९

दोहा।

प्रिय रिसाइ कुंजन गई, मोसों कहत मिलाइ।
बार बार यह कहनको, कान्ह कान लग जाइ॥

यथा–सवैया ।

काज अनेकन हैं गृहके सब एक करै नहिं है मतवारो । हौं हरभाँति सिखाय चुकी सखि, तू कहि जो कह्यो मानै तिहारो ॥ त्यों असकंद भनै यह कौतुक, देखिकै को न करै निरधारो । बैठ इकंतमें रूप धरै सखि यो बहुरूपिया कंत हमारो ॥

दोहा ।

सखी सुनौ यह पथिक इक, बातैं रचत अनूप ।
कहत एक दिन में यहाँ, नयो खुदाऊँ कूप १६२ ॥

द्विविधविदग्धालक्षण–दोहा ।

करि चतुराई वचन सों, मिलै क्रिया कर जोइ ।
वचनविदग्धा क्रिया इक, कहत विदग्धा सोइ ॥

यथा–कवित्त ।

कारे कारे दिशन दबाइ चहुँ ओरनसों,
आये घन गरज मचावत तरंगमें ।
कूक उठे कोकिला सकूकदै कुहूक उठे,

धुनि सुनि मधुर मयूरहू उमंगमें ॥
भनत अस्कंद होनलागी हिय मंजु मार,
मैनकी विरह लागी बढ़न सु अंगमें ।
डरत अकेली निजभौन में अँधेरी रैन,
प्रीतम न आये रहे सौतन कुसंग में ॥ १५४॥

दोहा ।

रैन अँधेरी मैं डरौं, ननदी गई रिसाइ ।
सखी नकोऊ संगमें, पियको सौत सुहाइ॥१५५॥

पुनःसवैया ।

न आये पिया घर सौतन संग, रहे सुखसों अतिही मनमान । सुनै इमि वैन कछू रिसके, ननदी गई रूठ कियेही गुमान ॥ भनै असकंद कहा कहिये, न सखी कोउ संग उये किमि भान । धरापर धूम करी धुरवान घने घन कारे लगे घहरान॥१५६॥

दोहा ।

पिय सौतनके संगमें, फँसे लगाय सनेह ।

घन घमंड आये सु मैं, डरत अकेली गेह॥१५७

क्रियाविदग्धा यथा-सवैया ।

लागिगई सँग हेलिनके, वट पूजवेको स
विचार महूरत । आयगये वे अचानकहूँ घन
श्याम तहां घनश्यामकी सूरत ॥ त्यों असकं
भनै अतिही हिय, चाह बढ़ी यह बात बिसूरत
वेंदी सम्हारनके मिस बाल सु, आरसीमें लखं
लालकी मूरत ॥ १५८ ॥

दोहा ।

पटहि दाबि ठोढ़ी दुविच, लखत छाँह मिस ओर
झुक झुक कसकमिरोर लै,कसतकंचुकी छोर१५९

पुनर्यथा-बरवै ।

अटक्यो आइ भमरवा रसके हेत ।
न सकै भरी गगरिया कसकै लेत ॥ १६० ॥

पुनर्यथा-सवैया ।

चली ब्रजकी वनितानके संग, अली पहिरे

मुकतानकी माल । मनौ छवि छीनलई रतिकी अतिही बनी रूपकी राशि विशाल ॥ भनै अस-कंद सुकुंजनमें लगी, खेलनआय गये नँदलाल । विलोकतही पटओट भई, कस कंचुकी लागी उघारन बाल ॥ १६१ ॥

दोहा ।

चलत सखिनके संगमें, चितवत चारहुँ ओर ।
कहुँ घन कहुँ वन कहुँसुमन, छवि हितनंदकिशोर॥

बरवै ।

मनमोहनको मग में लख्यो सुजान ।
वेंदी लगी सँवारन अधिक सयान ॥ १६२ ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

अति अनुरागी बाल ठाढ़ी यों सरोवरमें,
बार बार कंचुकी के छोर छुर छुर जात ।
झुकत झपाकसों छिपायतनु ओढ़ै पट,

मोतिनकी माल हिये बीच लुर लुर जात ॥
भत अस्कंद त्यों अनंग अंग अंग ओप,
साँवरे सलोने कान्ह ओर मुर मुर जात ॥
लगत समीर जुरै मानौ वश लाज कंज,
मुकुलित लोचन विलोकि दुर दुर जात १६४।

दोहा ।

घिरी सखिनके जालमें, बैठी बाल रसाल ।
कर उठाइ घूंघट करत,लखि निहाल नँदलाल ॥
लगी सम्हारन भालकी, बेंदी बाल विचार ।
इकटक रही सु आरसी,छबि तनु लाल निहार ॥

लक्षिता-लक्षण ।

सखी लखावै प्रीति जो, परपति चिह्न दिखाइ ।
कहत लक्षिता ताहिसों, जे प्रवीन कविराइ १६७।

सवैया ।

कहै मानिये चाहै न मानिये जू, तुमतौ नँदनं

दके अंक लसी। अतिप्यारी मनोहर मौज भरी, बतियाँ सुनिकै कहौ वंकजसी ॥ असकंद भनै अबहीं ते भटू, चितमें हितसों निरशंक फसी। अबै लागती नीकी सुहाँईतनी, छातियाँ ये भली कली पंकजसी ॥ १६८ ॥

दोहा।

श्रमकन अलि अलकन मनहु,झरत प्रेम अनुराग।
मनमोहन तू मोहनी, दुहूँआज वड़भाग ॥१६९॥

पुनर्यथा–सवैया।

का कहिवेमें निकास अरी, किहि हेतु सों मोतिन माँग सँवारी ॥ छाई सु प्रीतिघनी उरमें लखि चातुरी तेरी भई हम वारी ॥ वारी रही तू भनै असकंद सु कौनके नेह सों नेह लगारी ॥ चोपसे देखत चारहु ओर, सु कौन है तू नई झूलनवारी ॥ १७० ॥

दोहा ।

भली बनी वानिक विशद, मृदुल मालती माल ।
अजौं अगुण गुणलौं प्रगट, भई सरस रस जाल ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

रूपरस राते ये नवेली तेरे रम्य युग,
सौतिनको ताते मनमोहन सुहाते ये ।
भनत अस्कंद इतराते लखि प्रीतमको,
काते खरसानके सुधाको वरसाते ये ॥
देखके लजाते मृग मीन अरु खंजनहूं,
उपमा न पाते रसरीत न जताते ये ।
सुख सरसाते पर प्रीति न लखाते वेश,
तेरे दृगप्यारी रहैं छविमदमाते ये ॥ १७२ ॥

दोहा ।

मनमोहन मन मिल अरी, सो उरमें छवि देत ॥
अब किहि कारण गोइबो, प्रगट दिखाईदेत १७३॥

पुनः—सवैया।

मुख देखकै चंद्ररहै रमता समता को करै लखि रूपनता। भ्रम होत चकोरनको जबता अब ताकि कितेक करैं ममता॥ उरमें लसै हार गसे मुकता असकंद भनै दियो कौने सता। विनदेखे भटू वह कुंजलता ब्रजमें बसिबो हँसी खेलनता॥ १७४॥

दोहा।

अधर रदनकी छाप यह, उर पै विन गुणमाल।
सौहैं करि तोसे कहौं, गोहे नबनै वाल॥ १७५॥

कुलटालक्षण—दोहा।

लाज रहित बहु चाह पति, रतितै तृप्ति न ताइ।
कुलटा तासों कहतहैं, कविवर बुद्ध बनाइ॥१७६॥

यथा उदाहरण—कवित्त।

रूप गुणसागर प्रकाश नवयौबनपै,

धरत न धीर परयो मैन मन फंद है ।
होत न प्रभात कर मंजन सँवारै गात,
केशछुटकाय चलै गजगति मंद है ॥
भनत स्कंद चहै पथिक सनेह गहै,
नेक हू न लाज रहै निपट सुछंद है ।
दिवस व्यतीत जबै होत अरविंदनैनी,
अधिक अनंद जौलौं उदित न चंद है १७७॥

दोहा ।

निशि अँधियारी रैनिमें, परै हियेमें चैन ।
पथिकदेखि सखियानसों,कहति रसीले बैन१७८॥
छाजत छबिकी छटासी, छज्जा छलिया छैल।
झकत झरोखाही रहै, खिरकी द्वारे गैल ॥१७९॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

चाहभरी चंचल विलोकन चहूँघा चारु,
चोखे पट अंग शुचि सौरभरँगी रहै ।
भूषण अनूप अति उरज उतंग तंग,

कंचुकी कुसुंभ रंग सुरत जगी रहै ॥
भनत स्कंद कुंज विपिन विहार वेश,
मोदमय पुरुष प्रवीणन पगी रहै ।
परम पुनीत रति रीति हित हेर प्रेम,
परस प्रदोष मंजु मारग लगी रहै ॥ १८० ॥

दोहा ।

सुनि बिहार ब्रजलोग सजि, चले चतुर चितचाह।
हँस विलोकि नूतन पुरुष, चाहत नेह निवाह ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

रहै पर प्रीति अनेक उमंग, अनंग उदै रति चाहत ऐन । चलै पट भूषण ओप दिखाइ, रिझाय सबै कहि माधुर बैन ॥ चलै असकंद निकुंजनमें सुन गोपसमूह करै चितचैन । तकै तिरछौंहे कटाक्षनसों, हरषै विहँसै यों चलावत सैन ॥ १८२ ॥

दोहा।

रमन चाह परपुरुषसों, कर हित प्रगट अनेक
भानु छिपे लहि पथिकजन, मिलत नकरत विवेक

पुनर्यथा—सवैया।

सु चलै नवकुंज कलान प्रवीन, प्रमोद भरी बहु भाँतिहितै। हँस हेरन चातुरी चोप चढ़ी दृगफेरन चंचलबाजनितै॥ असकंद भनै मृदु-माधुरबैन, सुनाइ कहै छबि छैल जितै॥ हरषै मनमाँह गुवालनके, निरखै चहुँ ओरन चाह तितै॥

दोहा।

खुले केश अंचल बिचल, छुटे कंचुकी छोर।
बिहँसि बतात सखीनसों, रसिकनकी चितचोर॥

मुदिता लक्षण—दोहा।

मनभाई सुनि बात लखि, हिये प्रमोदित होइ।
मुदिता तासों कहतहैं, कविकोविद रस मोइ॥

यथा उदाहरण–सवैया ।

सजे नवअंग अनंग उमंग, बढ़ी मन चोप विचार विशेष । हिये मति ठान सु मीत पुनीत, धरे मन धीरज ताहिनिमेष ॥ भनै असकंद छकी छविसों, छतियान छुये लगि प्रीति अलेष । प्रमोद भरी सखिसों विहसै, गुणआगर बाल निशाकर देष ॥ १८७ ॥

दोहा ।

पथिक सार पियखत दियो, वैसिक भयो सुनाह ।
गुरुजन दुखजाहिर करत,हीतल उमँग उछाह १८८

पुनर्यथा–कवित्त ।

बैठी सजि सुंदरि अलीन मोद मंदिरमें,
सहज शृँगार दिव्य दीपत लसी परै ।
मंद मंद हँसन सनेह मनमोहनको,
काहु वै कहै न लाज गुणन गसी परै ॥

भनत स्कंद जोर यौवन झकोर वेश,
गौन सुनि प्रीतम विदेश विहसी परै ।
हेर हेर हरष हुलास अंग भूषणलौं,
कौतुक कलान कुच कंचुकी कसी परै ॥ १८९॥

दोहा ।

सुमुख सखिन सुन शशिमुखी, कुंज गवन नँदलाल ।
हिय हुलसी हरषी हिये, सुंदर रूप रसाल ॥ १९०॥

कबित्त ।

पथिक लियायो पियसारमें दिखायो खत,
बूझें मिलि सकल सुनाइयत बात है ।
वैसिक भयो है पति भै शक न रंच कहूं,
दिनप्राति अमित प्रमोद सरसात है ॥
भनै असकंद और गुरुजन विचारकरै,
कहत न वैन सुने मन उमदात है ।
ऊपर सभीते दुख चौगुनो दिखातपर,
हीतल उमंग सुख सौगुनो दिखात है ॥ १९१ ॥

दोहा ।

रमन वैन सुन सदनमें, वसन परोसिन नाह ।
भो अनरस रस रीझ मन वशरस खीझ उछाह १९२

पुनर्यथा-दोहा ।

सघन कुंज पुहपावली, भ्रमरावली अनंत ।
पढ़त कीर विरदावली, लखत प्रसन्न वसंत॥१९३॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

कुंदन सरस दीप्त दीपन प्रदीप्तवान,
तद्वत मयंकमुखी विमल सुहायो है ।
जगमग जडित जवाहिरके आभरण,
अंग अंग शोभित मनोज सुखजायो है ॥
भनै असकंद सुने विरह अचानकहूं,
नाहकहू जाइ मन करत परायो है ।
ऐसे प्रिय वचन सुकाहू सखि आय कहे,
होत सुत ननद प्रमोद अति छायो है॥१९४॥

दोहा ।

सुनत विरह सरसान अति, गवन करनकर वान
ननद ललन होतन सुने, आनँद हिय न समान १९५

पुनर्यथा-दोहा ।

कानन देख्यों ध्यानमें, पिपा मिले तिय आन
श्यामघटा घन देखकै, हरष न हिये समान॥१९६।

पुनर्यथा-सवैया ।

रही चाह चहूं दिशि प्रीतिभरी, नवनीत मनोरथकी अधिकारी । तैसही वीन सुनी हरषी निरखी छवि मूरत कुंजविहारी ॥ त्यों असकंर भने लखि कुंज, मनोहर केलिकला उर धारी वैसही आइ झुकी मनकी, चहुँओरते घोर घट घनकारी ॥ १९७ ॥

दोहा ।

नई लगन नाई लगन, नाउन दई दिखाइ
गावनलागीं सब सखी, सावन पहुँचो आइ १९८

पुनर्यथा–दोहा ।

सुन हरषीं हिय हुलस तनु, गवन रवन कलि कुंज ।
प्रफुलित सुमन सनेह जहँ, श्याम सघन द्रुम पुंज॥

अथ अनसैनालक्षण–दोहा ।

विहरत जहँ दंपति सुरति, सो थल मिट्यो दिखाइ।
प्रथम सु अनसैना कहत, होत बहुत दुखताहि२००

उदाहरण–सवैया ।

कियोहै सुराज नयो ऋतुराज, रवाज समीर करी सो दिखात । कहाँ भटकौ गहि मौन रहौ, भ्रम भूले फिरौ का तुम्हैं दरशात ॥ भनै असकंद सुपंकजको, नहीं लेश अबै ये पुरैनके पात । न कुंजमें एकहू फूल सुगुंज वृथा अलि क्यों करै तू उतपात ॥ २०१ ॥

दोहा ।

आगू लै हिमने दियो, राज भयो ऋतुराज ।

फूल नएकौ कुंजमें, तू गुंजत बेकाज ॥ २०२ ॥

पुनर्यथा—सवैया।

बार हजारक लौं बरज्यों सुन बीनिये फूल नयो यह बाग है। तापै कछू यह टेक घरी घरी रीतरहे उठ आवत जाग है। त्यों असकंद भनै अतिही, हियमें यह बाढ़यो भल्यो अनुराग है॥ पापिन तू नहिं मानत नेक, सुभौंरन लेन न देत पराग है॥ २०३॥

दोहा।

हौं तोसों कहिजातहौं, बीनन सुमन सु बाग।
क्यों पापिन तू अलिनको, लेन न देत पराग॥

द्वितीय लक्षण—दोहा।

चाहै जो संकेतको, होनहारकी चाह।
सखी बतावै द्वितिय कहि,अनुसैनादुखवाहि२०५

द्वितीय अनुसैनाको उदाहरण—

कवित्त ।

सुगम सरोवर मनोहर विचित्रतामें,
करत कलोल वामें अधिक सु मीन है ।
प्रफुलित कंजनपै गुंजत मधुप पुंज,
रसवश तामें रहै अधिक अधीन है ॥
भनत असकंद होव मुदित मयंक मुखी,
केकी पीक भूर एक बातही नवीन है ।
कुंजनसे कुंज अति सरस दिखात जैसे,
मारतंड मंडलकी पृथिवी नवीन है ॥२०६॥

बरवै ।

काननकी सुध कानन सखी सुनाइ ।
अति प्रसन्नभो आनन, हिय समुदाइ ॥ २०७ ॥

दोहा ।

पुंज पुंज अलि कुंजमें, गुंजत फिरत समूह ।
पिक चकोर चातक सरस, तज दुख कर सुखयूह ॥

कबित्त ।

सघन सुहाइ कुंज सुमन अनूप फूले,
लखि मकरंद भौंर भाँवर भरतवे ।
तज दुख सुघन दरारे देत दौर दौर,
गरज छटाके हेत मानो लरतवे ॥
भनै असकंद ऐसो कौतुक मयूर पिक,
कोकिला समूह बोलैं धीरना धरतवे ।
झुकि झुकि परत धरापै तरु झूम झूम,
शीतल समीर झोंके हीतल करतये ॥ २०९ ॥

दोहा ।

सघन कुंज सह सुमन लखि, चंचरीकके पुंज ।
फिरत एकरस हेत वे, मधुर मचाये गुंज ॥ २१० ॥

पुनर्यथा-दोहा ।

लैआई मालिन सुघर, प्रफुलित सुमन गुलाब ।
खिले मालतीहूँ समझि, चढ़ी चौगुनी आब २११ ॥

पुनर्यथा-बरवै ।

हौंसिन गई परोसिन देखन बाग ।
लखि रसाल वन फूल्यो मनसिज लाग ॥ २१२ ॥

पुनर्यथा-कबित्त ।

मंजुल विमल बाल सरस बिशाल लता,
पावत न ताहि अमरावतीके बाग हैं ।
दाडिम दरक कीर चातक कपोत आय,
उड़न बिसार बसे कर अनुराग हैं ॥
भनै असकंद तहाँ सुगम तड़ाग एक,
मीन रहै खंजन मृग आवत सु भाग हैं ।
कमलन फूले अलि गाहक पराग भये,
रागवर गावत बढ़ावत बिराग हैं ॥ २१३ ॥

दोहा ।

हिये चैनकर शशिमुखी, निरख मनोहर बाग ।
गुंजत फिरत समूह अलि, वरषावत अनुराग २१४

बरवै ।

देखहु चलि नवकुंजै विपिन सुबाग ।
चहुँदिशि झरत मही पै कुसुम पराग ॥ २१८ ॥

तृतीय अनुसैना लक्षण--दोहा ।

केलिसदनते आगमन, पिय लखि जिहि दुख होइ ।
हौंनगई पछिताइ मन, तृति अनुसैना सोइ२१९ ॥

कवित्त ।

नवब्रजनारि कोऊ निजगृह द्वार ठाढी,
आये घनश्याम लखे घनसे सुधाके हैं ।
भनत अस्कंद भई अधिक अधीन लखे,
हिय वनमाल भये लाल चख वाके हैं ॥
लेत न उसाँस कंचुकीके कस टूटपरे,
अति अभिलाष भरे शुभउन ताके हैं ।
अरुण सुहाये कुच तापै कछु श्याम मनौ,
पंकज कलीनपै मलिंद मद छाके हैं ॥

दोहा।

सुभग माल उर श्यामके, गोरज अलक विशाल।
देखतहीं ह्वै विरहवश, कह्यो न कछु व्रजबाल२१८

पुनर्यथा–कवित्त।

सुंदर सुवान सुखदान मोद मंदिरमें,
बैठी वेस सहज शृँगार रति सानीसी।
मुदित मनोरम मनोज मनमोहनके,
चाह रही चोपहिय चारु मनमानीसी॥
भनै अखकंद आय औचक अचानक हीं,
बाँसुरी सुनाइ सुने चौंक सकुचानीसी।
फीको पर्‍यो चन्द्रमुख धीरज न हीको रह्यो,
विमुद विलोकि भई बेहद विकानीसी २१९॥

दोहा।

आवत वनवानिकबने, शोभित सुमन शृँगार।
लखि विलखीउर कर कलित,ललित लहलहीडार॥

पुनर्यथा-सवैया।

भूषन अंग उमंगनसों सजि, मोद मनोरथ प्रीति ठनीमैं। चाह भरी चित चंचल बाट विलोकत बेस रही सजनीमैं। ताहि समै असकंद भनै घनश्याम विलोकनि कुञ्जघनीमैं। ह्वैरही ठाढ़ी ठगीसी थकी थिर ह्वै विरहावश काम अनीमैं२२१

दोहा।

कौन बजाई बाँसुरी, सुधाबैन मृदुतान।
लगी हिये अलि आन यह, जनु मनोजके बान२२२

गणिका लक्षण-दोहा।

निशिदिन धन मनमें बसै, रमै सु लैकर सोइ।
सोई गणिका नायिका, रसग्रंथनमें होइ ॥२२३॥

गणिकाका उदाहरण-कबित्त।

बैठी रसरीतमें मनोहर मनोज भरी,
बोज भरी सोहै अंग अंबर बनक के।

विशद विलास मृदुहास रसवास छुये,
छरकत छैलके तनूरुह तनक के ॥
भनै असकंद केलि कलन प्रवीन महा,
मोहिलेत मंजु मन केतिक धनक के ॥
करत कुतूहलसे माँगै हँसि हेर हेर,
जटित जड़ाऊ करकंकन कनक के ॥२२४॥

दोहा।

गरज बतावत सहजहीं, अलगरजी मन चाह ।
प्रीति रीति हिय कपट युत, झूठो नेह निबाह २२५॥

पुनः—कबित्त।

चाहभरी चंचल विलोकन विशाल नैन,
सैनन धनीन कहै वचन हितै हितै ।
सकल शृँगार साज अमल अगार द्वार,
वीणन प्रवीन गावै वासर बितै बितै ॥
भनै असकंद सुख सौरभ सुभाग भरो,
राग भरो नेह धन बाढ़त नितै नितै ।

चातुरीसों लचक लजाइ ललचाइ मंजु,
मृदु मुसक्याय चित चोरत चितै चितै॥२२६॥

दोहा ।

मधुर मधुर कहि वचन मृदु, रसिकनको मन लेत।
धनी पुरुषसों चाह कर, विहँसि ठिठौहीं देत २२७॥

पुनः—सवैया ।

रंग तरंग उमंगसों बाल, सु द्वारपै ठाढ़ी भयो हित चाइकै। जाइ अचानकहीं निकरे, लखिकै उरमाल लियो है रिझाइकै ॥ त्यों असकंद भनै अतिहीं, चित चौगुनी चाह बढ़ी हित पाइकै। कुंदको हार मुकुंद दियो हँसि, लीन्हों मनोज भरी अलस्याइकै ॥ २२८ ॥

दोहा ।

श्याम तुम्हारी बाँसुरी, जौने लई चुराइ ।
हम कहौ कछु देनतौ, तुरतहि देयँ बताइ॥२२९॥

पुनः—कबित्त ।

छैल ब्रजचंद्र चले छलन छबीली काज,
कछुक गवाँयो भयो लखिही कलोलको ।
कंजकर पकर सु अंक भर लीन्ह्यो ताहि,
अति मधुमातो चह्यो चुंबन अमोलको ॥
भनै स्कंद अधर दशन दबाइ बाल,
बोली अरे छोड़ मोहिं लीन्ह्योंहै न मोलको।
निपट सयाने सो अयाने सुनो होत कहा,
करकर लीन्ह्यो दियो करन कपोलको॥२३०॥

दोहा ।

अधर दशन बिच दाबिकै, बोली हँसि इमि बोल ।
कर करने तेरो लियो, लियो सु करन कपोल२३१॥

पनः—कबित्त ।

नितप्रति सोधेसे नहाइ तनु मंजनकै,
साजत शृँगार प्रेम हियमें धरे रहै ।

बार बार आवै निज द्वारपै अकेली लखि,
पथिक बोलाय कर लै मन भरे रहै ॥
भनै असकंद ऐसी रीतिकी प्रतीति नाहिं,
अधिक सयान मान प्रगट गरे रहै ।
दामिन दशन बिंब अधर समान ठान,
भ्रुकुटी कमान बान नैनन करे रहै ॥ २३२॥

दोहा ।

अधिक सयान हिये बसै, लसै अनोखीवान ।
आननको शशि जानिकै, बैठत द्वारे आन ॥२३३॥

बरवै ।

घन न जोर जो बरसैं तरसैं मोर ।
तुम न लेहु मन करसों करसों जोर ॥ २३४ ॥

कवित्त ।

मेरे प्राणप्यारे तुम जीवन अधार और,
कौनहै अधार जासों बैन भाषि कहिये ।

सौहै तुम सौहै जो हजारकलौं ठानी सोतौ,
एकहूं दरआनी नहीं कौन भाँति चहिये ।
भनै असकंद येती प्रगट दिखानी प्रीति,
रीति मनमानी सो वियोग कैसे सहिये ॥
बरज न कोऊ सकै अरज हमारी यह,
गरज तुम्हारी जहाँ चाहौ तहां रहिये२३५॥

दोहा ।

कर कंकन दुरदेन कहि, ल्याये ना बनवाइ ।
कौन रीति हित मानिये, अंतर कपट दिखाइ ॥

अन्य सुरति दुःखिता लक्षण–दोहा ।

और नारि तनु चिह्न लखि,निज नायिकके जौन ।
बात पैज कहि तेह गहि, अन्य सुरत दुखितौन॥
बिरी हाथदै सखीके, फिरी बिहँसि मुखगोइ ।
लाल रीझियतु जाहिपे, क्यों न सुहागिल होइ ॥

उदाहरण–कवित्त ।

शुभ नवमाल पिय गृहमें लिआये आज,

सहजसुभायकर बोली हौं न चाहिनै ।
बसत परोसमें हमारे तुम तासों कहौं,
वह उरमाल शोभा तुव उरमाहिनै ॥
भनै असकंद हितू हरिकी हमेश प्यारी,
विधिकी सवाँरी प्रीति सुकर निवाहिनै ।
मैं तो तुवदोष रोष छाडिकै न काहू कहूं,
तुव करतूतको सराहन सराहिनै ॥ २३९ ॥

दोहा ।

टरजा मेरी नज़र सों, घरपै नेह निवाह ।
नईसौत तैहूं भई, गही अनोखी राह ॥ २४० ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

हौं हितसों नित आदरसों, मन मान करी अपने समताई । सुंदर भूषण अंबर अंगद, ये निज प्रेमसों प्रीति बढ़ाई ॥ त्यों असकंद भनै सखियो, परतीतकी आछी प्रतीत लखाई ।

आइ न क्यों चल वेग भटू, किन सौतिन एती अबार लगाई ॥ २४१ ॥

दोहा ।

तनु विलोकि अलि मद भरी, प्यारी चकितचितौन।
बलिहारी तुव छवि लखे, अवरसवाली कौन २४२
तनु विलोकि अलि मद भरी, बोलत वचन सम्हार।
करी सुरति पिय संगमिल, तोसी तुहीं गँवार ॥

पुनर्यथा-सवैया ।

मैं लखिकै तुव चाह बढ़ी, न मिलै तो हमैं का निहारती हौ। नई रीति कहूँ यह सीखी भली, बिन दोष लगे मन डारती हौ ॥ असकंद भनै जो न जाती तऊ, उठ आय शृँगार सँवारती हौ। गुणएक न मानती येरी भटू तुम येतो विचार विचारती हौ ॥ २४४ ॥

दोहा ।

सुघर सौत शालतनती, तू अब भई नवीन ।

गई कौन हित का कियो, चपल चतुर मतिहीन ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

करत शृँगार चारु मनमें विचार कियो,
तुरत बुलाई निज मतकी सलाहिनै ।
आइकह्योएकते सयानी तुव कौनिउविधि,
बांसुरी लिआव वीर नेक हमैं चाहिनै ॥
भनै असकंद आइ मिलकै लिआइ देखि,
मदन सताइदेत मदसों डराहिनै ।
काहेको गईती कौन काम करि आई सौति,
तूही नईएकभई और कोऊ नाहिनै ॥ २४६ ॥

दोहा ।

पियकी नीति अनीति यह, कौन लगावत खोर ।
मदन विवश आंधू परे, येरी जोवन जोर २४७ ॥

पुनः कवित्त ।

आवत नित यातेकहि आवत नरोंकी जात,
याते विनगुणकी हियमाल लसिबो करे ।

तातै पट चारों ओर ओढ़त सँभारवेश,
कंचुकी उरोजनपै अति कसिबो करै ॥
भनै असकंद मौज काम मदमाती मोहिं,
सौतिन सुहाती तुहिकौन हँसिबो करै ।
रहि बरसाने क्षपाकरके छिपाने आइ,
गजब गुजारनको ब्रज बसिबो करै ॥२४८॥

दोहा ।

को तोको या नगरमें, जानत नहीं गवाँर ।
पिय मन मोह्यो सौत तुव, छिपै न हियको हार ॥

पुनःकवित्त ।

चतुर सयानी भली चोप उर आनी हानि,
करति विरानी रीति कुमति सहीरी मैं ।
सजत शृँगार चली आवत अकेली द्वार,
निलज निहार लाज अधिक गहीरी मैं ॥
भनै असकंद अब नेकहू न आवै बनि,
मदन छकीले नैन देखत कहीरी मैं ।

हठ करि नेह कियो छैल छलियासों तुव,
बरज न मानी नेक बरज रहीरी मैं ॥ २८० ॥

दोहा।

इत आवत उत जात नित, बरज रही सौबार ।
निलज लाज आवे नहीं, परपाति रमत गँवार ॥

पुनर्यथा–कवित्त।

आवै भोर साँझ हू न साँझ आवै कौनो विधि,
भावै मत जौन तौं नरोकिये कहाँ लौंरी ।
खोर खोर धावै मन गाहक बनावै रूप,
चाहक अनेक देखि देखिये जहांलौंरी ॥
प्रत प्रत सरस समान तव थेरी वीर,
भनै असकंद वेग पावत तहां लौंरी ।
निशिभर चाँदनीमें दिनभर भामिनीमें,
रतिकर कामिनीमें पावत वहाँलौंरी ॥ २८२॥

दोहा।

कौन सिखाई सीख यह, परपतिसों रत हेत ।

पास परोसिनको अरी,काहे तू दुख देत ॥२५३॥

प्रेमगर्विताका लक्षण—दोहा ।

अपने पति अनुरागको, गर्व करै कहि बाल ।
प्रेमगर्विता कहत हैं,तासों सुकवि रसाल ॥२५४॥

उदाहरण—कवित्त ।

परम अनूप रूप गुणको कलानिधान,
लखत न जौलौं तौलौं रहत सरोदमैं ।
प्रफुलित कमल परागहित भौंर जैसे,
फिरत मदंध खोज करत सु मोदमैं ॥
भनै असकंद कोक कलन प्रवीण प्यारो,
सहज सयान कहै वचन विनोदमै ।
प्रगट प्रमोद सुख मिलत सुचोप चहि,
लेत मुख चूम चूम छिन छिन गोदमै ॥२५५

दोहा ।

ल्याई सुमन परागयुत, जे हित मान अनेक ।
ते मन भाये एक नहिं,सरस नेहकी टेक॥२५६॥

पुनर्यथा--सवैया।

निशाकर देखि चकोरलौं चाह, करै नित नेम सों आनँद ऐन। मनोहर हेलिनमें मिलिकै, कहै प्रीति जनाइ सुहावनेवैन ॥ भनै असकंद सुमेरी भटू, रहौं लाजभरी कहिवेमें लजैन। विलोकत बारहिंबार शृंगार,लगाइ हियेमें करै चित चैन २५७

दोहा।

पियेरहत नित प्रेमरस, किये रहत अतिनेह।
लिये रहत कर मन मुदित, वह घनश्यामअछेह ॥

पुनर्यथा-दोहा।

भावै ठौर सहेट जो, परै न तौ मन चैन।
अधिक रसीले मद भरे, कहै सौतके वैन ॥२५९॥
पिय मेरको वश करै, सोई चतुर सयान।
तोसी कहे गँवारके, क्यों उर आनहुँमान २६०॥

पुनर्यथा-दोहा।

सौतैं सजैं शृंगार वर, नेक न देखत राह।

पियको चाहति मोहने, चाह सु करती आह ॥

रूपगर्विता लक्षण–दोहा ।

होइ गुमान सु जासुको, अपनो रूप निहार ।
रूपगर्विता कहतहैं, ताको सुकवि विचार२६२॥

रूपगर्विताउदाहरण--सवैया ।

नइ देखी तुम्हारी अली यह रीति, भली जो कहै तो बिगारतीहौ । तुम मानियो चाहै बुरो जियमें, यह टेक कुटेक न टारती हौ ॥ असकंद मनै यह रूप गुमान में, कौन सयान विचारती हौ ॥ कहै चंदमुखीके सुयेरी भटू, मनमोहनै क्यों न निहारती हौ ॥ २६३ ॥

दोहा ।

श्याम न झूठ कहै कछू, विमल इंदुमुख ऐन ।
सुनत वचन इमि बाल तुव, करत तरेरे नैन २६४॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

सघन सहाइ कुंज विटप घनेरे जहाँ,

दिवस न देख परै लेश आफताबको ।
होत निशि रहस मचावत अलीन संग,
सुभग स्वरूप बनो रतिके जवाबको ॥
भनै असकंद तहां घेरत चकोर पुंज,
झझकि छिपावै मुख करकै सिताबको ।
प्रेम सरसात बात रसकी बतात प्यारी,
हँसि हँसि जात देखि शशि महताबको २६५॥

दोहा ।

कुंज समै खेलत अली, घेरत आन चकोर ।
हँसत छिपावत बदनको, देखचंदकी ओर २६६॥

पुनः—दोहा ।

प्रफुलित कमल विलोकिकै, भौंर चहै रस लीन ।
कौन शोच जो कान्हने, मोहिं कियो लवलीन ॥

कवित्त ।

बालतनु मृदुल मनोहर विशाल सोहै,
उदित प्रभासी छटा छूट छवि छाजी है ।

मणिन जटित शुभ मंदिर अनूप तामें,
अधिक अनंदभरी सुखसों विराजी है ॥
भनै असकंद छके नयन चकोरनके,
कोटि मैनकाकी गति द्युतिमतिलाजी है ।
मुकुर विलोकत मुखारविंद जाको मन,
इंदुसम होत देखि सिंधु सम राजीहै ॥२६८॥

दोहा ।

मूरत कली गुलाब सखि, आबदार कर देख ।
मुरकि जात दल लाजवश, सरस आपते लेख ॥

कवित्त ।

मंजन तड़ागपै सहेली लै नवेली चली,
बोली हँसि येरी देख कौतुक सु एक आन ।
घूँघटके खोलत प्रकाश बढ्यो तनु मुख,
शिखर सुमेर तापै चंद्रसों प्रकाश मान ॥
भनै असकंद भई चकही सु त्रासमान,
फूली कुमोदनी निशापति सुभास ठान ॥

कंज कुम्हिलान भौंर भीर भहरान आइ,
प्यारी करकंज पास निपट सुआसमान॥२७०॥

दोहा।

मानि चंद मुख दंद सों, पंकज रहे लजाइ।
देख सखी ममकरन ढिग, भौंर लुभाने आइ॥

पुनः—दोहा।

क्यों अनखैबो सीखिये, क्यों मन दैबो वीर।
हिये चकोरन चंदबिन, कौन धरावत धीर॥

मानिनी लक्षण—दोहा।

जो पतिते मिस कौनहूं, त्रिया रहै अनखाइ।
सुकवि बखानत ग्रंथमें, मानवती कहि ताइ॥

कवित्त।

सौहेंहो कहत नैन सौहें कर सौहें सुनौ,
रूठ आज बैठी तुम कैसी सुखसारमैं।
मिल नँदनंदसों अनंदकर आठौ याम,

सीख ठान मेरी छोड़ कुमति विचारमैं ॥
भनै असकंद देखि पावस प्रबल ऐसी,
दादुर टकोरनसों मोरन प्रकारमैं ।
मान छुटिजैहै काम अधिक सतैहै मन,
चैनहूं न पैहै वीर धनकी धुकारमैं ॥ २७४ ॥

दोहा ।

पावसऋतु यह है भली, अली न सीख सयान ।
घन घमंड आवै जबै, रहै न हियको मान॥२७५॥

पुनः दोहा ।

तजदे निरासयान यह, पिय सों मिलकर चाह ।
देखि चांदनी चंदकी, नीके नेह निवाह ॥ २७६॥

दश नायिकाके नाम--दोहा ।

प्रोषितपतिका खंडिता कलहंतरिता नाम ।
विप्रलब्ध उक्ता कही, वासकशय्या वाम ॥
फेर स्वाधिनपतिका कहै, अभिसारिका सुहोइ ।

कही प्रव्सतकप्रेयसी, आगत पतिका सोइ ॥
ये दश विधसों नायिका, वरणी नाम प्रमान ।
तिनके कहत उदाहरण,लक्षण सहित बखान२७९

प्रोषितपतिका लक्षण--दोहा ।

विरह विवश व्याकुल रहै, जाको पति परदेश ।
प्रोषित पतिका नायिका, ताहि कहत कवियेश ॥

मुग्धाप्रोषिता यथा उदाहरण-सवैया ।

न खेलै सखीनके संगहूं नेक,सुखानहूं पान न एक सुहात।कहा भयो तोहिं सु येरी भटू, हियकी हम सो न कहै कछु बात ॥ भनै असकंद लजात कछू, घनश्याम गये परदेश बतात । भरे दृग वारि सु यों दरशात, मनौ जलमें परेहैं जलजात॥

दोहा ।

खेलत खेल नएकहू, परत अकेली आइ ।
भयो कहा भाभी तुहैं, तृण तोरत शिरनाइ २८२ ॥

पुनः बरवै।

निशिदिन बाल सखिन सग करत विनोद।
जब सुधि आवति पिय छिन रहत अमोद २८३॥

मध्याप्रोषितपतिका लक्षण।

उदाहरण—कवित्त।

कहत न बूझै सखी सांसनपै साँसभरै,
नीर बढ़ि वरुनीलौं गिरन नपावैहै।
त्रिविध समीर सीरी झोंकन लगत आइ,
परत न चैन ताहि विरह सतावै है॥
भनै असकंद अंग अंगन अनंग बढ़ै,
इत उत देखि बाल मन वहटावै है।
मुख जरदाइ आइ परत दिखाइ मनो,
शीत भानु केसरको लेपन लगावै है २८४॥

दोहा।

पति विदेश जबते गयो, विरह सतावत आइ।
व्याकुल होत मनोजवश, बूझत कहत लजाइ॥

प्रौढ़ाप्रोषितका उदाहरण–कवित्त ।

मदमति मेरे साथ ताही मन मोहनके,
छायो परदेश लई सुधि ना अरीवहै ।
प्रबल प्रचंड घन दिशन दबाये आये,
मदन पठाये आये कोकिला नकीब है
भने असकंद भौंर गुंज करैं कुंजनमें,
कूक सुन केकिनकी तरसत जीवहै ।
नेकहू न चैन परै सुन सुन याके बैन,
बोलतहै पापि यों पपीहा पीव पीवहै ॥ २८६ ॥

दोहा ।

पिय विदेश हिय मंजु अति, विरह सह्यो नहिं जाइ।
काम जगावत टेरकै, चातक सहज सुभाइ २८७॥

पुनः बरवै ।

मन समझावत आवत नेक न धीर ।
जब घन आवत घुमड़त येरी वीर ॥ २८८ ॥

पुनः सवैया ।

तुम आये सँघाती अकेले भले, ललिता उठि बोली उतावरीसी । कबै आवै घरै मनमोहनजू, भरै भौंर सु भाभरे भाँवरीसी ॥ असकंद भनै तुम ऊधो सुनौ, बतियाँये कहौं कछू लावरीसी । प्रिय पीतमतौ कुबजासों पगे, ब्रजकी वनिता भई बावरीसी ॥ २८९ ॥

दोहा ।

ऊद्धव तुम कहियो दशा, मनमोहनसों जाइ ।
तुव बँशीकी धुनबिना, ब्रजवनसों दरशाइ २९०॥

कवित्त ।

आई ऋतु पावसकी घन घहरान लागे,
दिशन दबाइ आये जल बरसाइकै ।
पाई ना खबरहू न मोहन पठाई कछू,
छाई उर प्रीति सौति कुबिजा रिझाइकै ॥
भनै असकंद धौं भुलानी सुधि या ब्रजकी,

दीपक पतंगहूकी लगन विहाइकै ।
कोकिला कलापी शोर करिकै अलापै पापी,
कासों कहौं वीर दुख अपनो सुनाइकै २९१॥

दोहा ।

पावसऋतु आई अली, घन लागे घहरान ।
कुबिजावश माधव रहे, रहै सु किमि कुलकान ॥

बरवै ।

अब कासों का कहिये कहिनहिं जाइ ।
कुबिजाके रसवशमें रहे लुभाइ ॥ २९३ ॥

पुनःबरवै ।

बूंदन सों मग रूंदै ये घन घोर ।
विनती पियसों करियो तुमकरजोर ॥ २९४ ॥

परकीया प्रोषितपतिका--सवैया ।

गये श्याम विदेश सँदेश न आइ, अधीन भये कुबिजासों पगे । अब कासों कहौं यों व्यथा

अपनी हमतो करि-प्रीति प्रतीत रँगे ॥ अति आइ सुछंद कियो ऋतुराज भनै असकंद सप्रेम पगे । नवकुंजमें गुंजन भौंरलगे औ रसालके झौंरन मौर लगे ॥ २९५ ॥

दोहा ।

जबते गये विदेशको, पठयो नाहिं सँदेश ।
मैं अपने मन को दहौं, कहा देउँ उपदेश ॥२९६॥

बरवै ।

घन बरसों दिशि विदिशन लैकर नीर ।
आवै पथिक परोसिन होइ सधीर ॥ २९७ ॥

गणिकाप्रोषित–यथा सवैया ।

जौन कहौ कर आन दिखावत मेरीही बान सदा निवह्योहै । भूषण अंबर अंगन अंग, शृंगार किये अरु मान सह्योहै ॥ त्यों असकंद भनै सुधि होत, बढ़ै विरहागन याद लह्योहै । मो मन

प्रीतम प्यारो पिया सखि, सोइ विदेशमें छाइ रह्योहै ॥ २९८ ॥

दोहा ।

जात पलक पल दिवसनिशि, जनु विधिदिनसमऐन।
मो मन प्यारे श्याम विन, रंचक परत न चैन ॥

खंडिता लक्षण-दोहा ।

औरनारिके चिह्नरत, लखै जु निजपति अंग ।
सुकवि बखानत खंडिता, ताहि तेह दुख संग ३००॥

मुग्धाखंडिताको उदाहरण-सवैया ।

चंदमुखी सखियानके संग, उमंग सों खेलतती सुखसानिकै । ताहि समै नँदनंद लखे गरे माल विना गुण कीरत आनिकै ॥ त्यों असकंद भनै तबते, गयो छूट रहस्यको मोद सयानिकै । और सखीनलौं शोच रही चख भौंह कमानन बानसे तानिकै ॥ ३०१ ॥

दोहा ।

कहा देखिकै लालको, बाल रही अनखाइ ।
खेल न खेलै आपनो, बैन कहत सकुचाइ॥ ३०२ ॥
हिय बनमाल विशाल छबि, पर तिय चिह्न निहारि ।
परी सेज प्रीतम सहित, बाल भरे दृग वारि ॥३०३॥

मध्या खंडिताका उदाहरण–कवित्त ।

बैठी ब्रजबाल तहां आये नँदलाल भाल,
शोभित अनूपरेख जावक विशालहै ।
टेढ़े पेंच पाग पीक लीकहू कपोलनपै,
नैन अलसाने हिये विनगुण मालहै ॥
भनै असकंद ऐसी रचना विचित्र देखि,
दर्पण दिखाय बोली वचन रसालहै ।
हमतौ खुशाल भये निरखि तुम्हारो रूप,
करत निहाल जोपै अधिक निहालहै ॥ ३०४ ॥

दोहा ।

तुमसे प्रीतम पाइकै, को न होइ आनंद ।
रूप बनावत नित नयो, करत अनेकनछंद।३०५॥

प्रौढाखंडिताका उदाहरण--सवैया ।

तुमप्रीतम प्यारे हमारे सुनौमनभावतीकौनसु ऐसी ठगी । चितदै रतिमें हियसों मिलिकै रसके वशमें भली प्रेम पगी॥असकंद भनै अति चौगुनी चाह, हियेमें करै सब रैन जगी । तुम कौनसे ठाम रहे रतियां, बतियां कहिकै छतियांसों लगी३०६॥

दोहा ।

पगी प्रेमवश लगी तनु, रही तुम्हारे लाल ।
कौन छबीली छैल तुम,ठगी कौन करि जाल३०७॥

परकीयाखंडिताका उदाहरण-सवैया ।

बनी नीकी हिये बिच माल लसी, लखिकै कहादोष लगाइयेजू । यह आपनो भागहै का

कहिये, तुमको तौ नयो रस चाहियेजू ॥ असकंद भनै अब योंही बनै हमको नहीं नेक सताइयेजू । हितसों मन प्रेम किये अतिही, जितरैन जगे तित जाइयेजू ॥ ३०८ ॥

दोहा ।

भली कपोलनपै लसी, पानपीककी लीक ।
बिनगुण माल हिये लसै, गिरै न उरझी ठीक ३०९ ॥

पुनर्यथा--सवैया ।

नेह कियो जबते तबते दिन, औ निशि नेक हमैं न सुहायो। छोड़ दियो सब गेहको काम, सखीन समाजमें नाम धरायो ॥ त्यों असकंद भनै यह-रीति, करी हियहार नयो रसपायो । हेत कियो इतनो तौ कहा, तुमतौ अपनो मन कीन्हों परायो ॥ ३१० ॥

पुनर्यथा–दोहा ।

हमसों नेह घनो रहै, इतहीको नँदलाल ।

सरसप्रेम हियमें सुप्रत, राहविलोकत बाल॥३११॥

सवैया ।

कहिये कहा चूक नदान भये, जे नदान सयान गुमान ठये । घर घेर करै सुन मौन रहौ, रजनी जग लाल करें हगये ॥ असकंद भनै छबि छाजै भली, तुम आये अबै उरमाललये । मनदै हम जाँचे न साँचे भये, तुम साँचे भये रँगराँचे नये ॥ ३०२ ॥

दोहा ।

हम मनदै जाँच्यो तुम्हैं, तुम रँगराँचे और ।
पी पर होत न आपने, झूठी मनकी दौर ॥ ३१३ ॥

गणिका खंडिताकाउदाहरण–कवित्त ।

धोखेजिन काहूके न रहियो विहारी तुम,
भारी भ्रम जाल यो कहांते लैसँवारोहै ।
प्यारी यह सबते नियारो यह बातनसों,
कौन नीको प्रेम जौन तुम उर धारोहै ॥

भनै असकंद रूप सरस सम्हारो वेश,
अति चटकारो तोहिं लगत न भारोहै।
मानौ यह रीत कह्यो देखिये प्रतीत सुनौ,
नित उठि कलपवृक्ष मंदिर हमारोहै ॥ ३१४ ॥

दोहा ।

भलो सम्हारो नेहको, वातनसों कर काम।
कहा तुम्हारो नामहै, कलपवृक्ष मम धाम ॥ ३१५ ॥

पुनर्यथा--सवैया ।

का कहिये छवि नीकी बनी, छुट छूटी छटा मुख चंदप्रभातें। सौगुनो रंग चुयोईपरै, प्रिय मालती फूलनके गजरातें ॥ त्यों असकंद भनै हित सों कुछ देन कह्यो, न दियो इतरातें। भूलनकीजो कहूं कबहूँ, अब होचुकी श्याम सनेहकी बातें ॥ ३१६ ॥

दोहा ।

आये कित मनुहार करि, दै निज तुम मनहार।

छाये छवि रवि उदित लौं, नागर श्याम मुरार ॥

कलहंतरितालक्षण--दोहा ।

कलह करै मानै नहीं, हिये गुमान बढ़ाइ ।
फिर पाछे पछिताइ मन, कलहंतरिता गाइ ॥

मुग्धा कलहंतरिताकाउदा०—सवैया।

तबतौ लखिनाह गुमान कियो औ सयान कियो कि बतायो नहीं। गुण एक न जेतकरे सबरे, मन कौन लईके मनायो नहीं ॥ असकंद भनै यह कीन्ह्यो कहा, क्षणएकहू ताहि लुभायो नहीं। अब शोचती काहौ सु येरी भटू, हमसों हँसिबोलती काहे नहीं ॥ ३१९ ॥

दोहा ।

कहा देखिकै श्यामको, मिली न तू भरि अंक ।
अब शोचे पाछे कहा, येरी वदन मयंक ३२० ॥

मध्याकलहंतरिता—सवैया ।

कहौ का करिये अब येरी भटू, अपनी कर-

तूतसे ऐसी घिरी। न भई कछु बात न स्वारथकी, न रही कछु मैं मति ऐसी फिरी ॥ असकंद भनै पिय आये घरै, पर पाँइन लौटगये सुघरी ॥ अब कैसे मिलै वह प्रेमभरी, रहैं तो जरी औरहैं रसरी ॥ ३२१ ॥

दोहा ।

येरी मति बौरी भई, करी कहा अनरीति ।
कलह करायोजौन विधि, वहिविधि अब कर प्रीति ॥

प्रौढाकलहंतरिताका उदाहरण—

कवित्त ।

आये नँदनंद प्राणप्यारी ढिग प्रेम किये,
सब विधि मनाइगये बोलीहौं नचाइकै ।
ताही समै आये घन घुमड प्रचंड रही,
केकिनकी कूक सुनै मन पछिताइकै ॥
भनत अस्कंद अंग अंगन अनंग बाढ्यो,
देखत सखी सों कह्यो अति घबराइकै ।

जानतु हैं रीत बात मेरिये हहालौं अब,
बेगहीं लिआउ प्राणपतिको मनाइकैं ॥ ३२३॥

दोहा ।

पाँयन परत न रीझती, पीतम प्रीति सराह ।
मान घटावत मान कह, काम बढ़ावत चाह ॥
पिया मनायो पाँय परि, मानी न कर सयान ।
सखी आपनी चूकलौं, आप परचो पछितान ॥

परकीया कलहंतरिता-सवैया ।

तजी कुलकान सु रीति सबै, यहप्रीति करी सो हिये इमि ठान । परै न विछोह कहूं कबहूं, सो परचो मति आपनी सो अब आन ॥ भनै असकंद फिरै घनश्याम, घरै चलि आये कियो मैं अयान । मनायो न नेक लगी पछितान, कहां लै धरौ ये ढिठाई गुमान ॥ ३२६ ॥

दोहा ।

धृक उमंग जो प्रीतिकरि, रीति निबाही नाहिं ।

करत बनी एकौ नहीं, सो अब किमि सियराहिं ॥

दोहा ।

मनमनोजकी मौजमें, खोर लगावत कौन ।
करी कछू बनि ना परी, क्यों रहिये गहिमौन ॥
वरषन नीर लग्यो भटू, घन लागे घहरान ।
काम विकट पहरो लग्यो, हियते छुट्यो सयान ॥

गणिका कलहंतरिता-सवैया ।

कहा कहिये बनि नेक परी न, धनी घर आये । किये मैं गुमान । चलेगये एकहू बात करी न, फिरी मति ऐसी लगी पछितान ॥ भने असकंद सुयेरी भटू, तुमहूँनहिं रोंकि कियो सनमान । धरापर धूम करी धुरवान, घने घनकारे लगे घहरान ॥ ३३० ॥

दोहा ।

कहा कुमति ठानी हिये, कियो धनीसों मान ।
फीको कर विन आरसी, कासों करौं सयान ३३१॥

विप्रलब्धालक्षण-दोहा ।

केलिसदन पिय बिन मिले, विरहविकल त्रिय होइ ।
विप्रलब्ध तासों कहैं, जे कवि पंडित लोइ ३३२ ॥

मुग्धाविप्रलब्धाको उदाहरण-सवैया ।

बाल सखीनके संग गई, नव कुंजन खेलन खेल रहस्यको । देखत श्यामबिना वहधाम, रह्यो मन नेक न नेहको चस्यको । त्यों असकंद भनै कहै औ सुनै, दौर इतै उतै बोल अवश्यको ॥ यों कह्यो बैठि निकुंजको वा दिना, काँटो करीलको मोपद कस्यको ॥ ३३३ ॥

दोहा ।

कौन न आयो कुंजमें, सूनी परत लखाइ ।
धोखेसे इमि कहि उठी, रही सुमन सकुचाइ ३३४ ॥

मध्याविप्रलब्धाका उदाहरण-कवित्त ।

कंचन वरण साज भूषण प्रमोद भरी,

मंदगति सुचलि गयंदगति वारी है ।
चंद्रवत आनन सुछंद मनमौजहीते,
संगमें सहेली लिये अधिक पियारी है ॥
भनै असकंद कुंज मंजुल विमल बीच,
चाहकर कहत मनोज मतवारीहै ।
हरी हरी ललित लतानानिमें नाह कहूं,
नजर करै तू कैसी नज़र तिहारीहै ॥ २३५ ॥

दोहा ।

नवयौवन बाला लखो, नवयौवनकर चाह ।
कहूं हरी द्रुमलतनमें, अरी देखियतु नाह॥२३६॥
कुंजनमें गुंजन लखे, चञ्चरीकके जाल ।
बिन हरि विरह विवश भई, कियो काम उरशाल ॥

सवैया ।

साजि शृँगार चली नवला, मुकतानकी माल हिये सह गुंजन । देखत आननकी छटा छूट, सुघेरलई है चकोरके पुंजन ॥ त्यों असकंद बच्यो

हिय काम, सुने मृदु भौंर समूहके गुंजन । मंजु-लतासि रही कुम्हलाइ, मिले घनश्याम करीलके कुंजन ॥ ३३८ ॥

दोहा ।

निरखि कुंज ब्रजबालवह, गुंजत भ्रमर भुलाइ ।
मिले न श्याम विरहविवश, रही सुमन पछिताइ॥

सवैया ।

ऐसो भयो न कहूं कबहूं,तुम जो लखो आपनि आँखिन भूलहै । फूल रह्योहै गुलाबके बीच, सु पंकजको मृदु मंजुल फूलहै ॥ त्यों असकंद भनै यह कौतुक, आठहूयाम हिये विचझूलहै । गुंजरहे अलि पुंजके पुंज, सु कुंज अली यह भूल न भूलिहै ॥ ३४० ॥

दोहा ।

अरी सुहाई कुंज यह, अब न भूलिहै भूल ।
फूलत लख्यो गुलाब विच, पुंडरीकको फूल ॥

विप्रलंब्धा प्रौढाका उदाहरण—कवित्त ।

चोप चसकीली भली चाल ठुमकीली भली,
अति छमकीले पगपरत विशालहैं ।
कैसी कटिकिंकिणिकी धुनि अतिप्यारी होत,
तरनतरचोना कान अधिक रसालहैं ॥
भनै असकंद भई भेट ना सहेटहू में,
बालकुम्हिलानी जैसे फूलनकी मालहैं ।
आँसू गिरे कुचपै दुईशपै चढ़ाये मनो,
हगदल पंकजसे मोतिनके जालहैं ॥ ३४२ ॥

दोहा ।

थल सूनो लखि छाइ दुख, बहि आँसू कुच आइ ।
जलज जाल हग कंजजनु,दये गिरीश चढ़ाइ३४३

पुनः—कवित्त ।

लहलही ललित निकुंज द्रुमवेलिनसों,
छाइ छवि मुदित मनोहर महा मजेज ।

तैसी शुभ शीतल समीर धीर सौरभसों,
शोभित समोद शीत भानको उजास तेज॥
भनै असकंद गई विहसत वेग तहां,
कामवश सखिन सहेट तज लाजलेज।
ह्वैकर रिसौंहे तिरछौंहे कर तीषे नैन,
मंद भइ विवश विलोकि सुख सूनो सेज ३४४

दोहा।

फूले अनफूले पुहुप, परे अवनि किहि हेत।
निपट पीव अनरीतियह,विरह काम दुखदेत३४५

परकीया विप्रलब्धा-सवैया।

रूपवती करके ज्यों शृँगार खड़ीभई गेहके द्वारपै आइकै। ताही समै असकंद भनै ब्रजनारिन संग लियोहै लिवाइकै॥ प्रीति बसी हियमें घनश्यामकी, आतुरी सों चली प्रेम बढ़ाइकै जाइकै देखत कुंजनमें न मिले, पछिताइ रही मुरझाइकै॥ ३४६॥

दोहा ।

खेलै खेल सखीन सँग, मन नहिं लागत नेक ।
विरह बढ़्यो अतिप्रेमवश, भई न मनकी टेक३४७

गणिका विप्रलब्धा-सवैया ।

प्रेमपगी बतियां कहिकै, रतियां चितमें अति चोप चढ़ायो । सौंह दिवाइ हहा करिकै हमैं कुंज-नकी मग दौरि पढ़ायो ॥ त्यों असकंद भनै मिलिबो ठहराइ भलो यह नाच नचायो । आयो न आप रह्यो कित भूल सु दूसरे हू न मनोरथ पायो ॥ ३४८ ॥

दोहा ।

अपुनमिल्योमीतनमिल्यो, नकरमिल्योकछुआज ।
वृथा झूठ बोलत ठगी, करआई सुखसाज ॥ ३४९ ॥

उत्कालक्षण-दोहा ।

चिंता हिय आयौ नहीं, किहि कारण पिय आज ।

केलिसदन शोचत मनै, उक्ता कहि कविराज३५०

मुग्धाउत्कंठा उदाहरण--कवित्त ।

रजनी व्यतीत युग यामहूं न आये पीव,
प्रकटन लागी यों प्रभात द्युति नीकीहै ।
कैधौं कोऊ बालने लियोहै मन मोहि रहे,
रसवशह्वैके करे ताके मनहींकीहै ॥
भनै असकंद द्वार झाँकत सुछाँह देखि,
कहत सहेली सों न बात मतिहीकी है ।
विरह व्यथाकी कथा गोवत सयानी पर,
कछु कुम्हिलानी देखि चंद्रप्रभा फीकी है३५१

दोहा ।

रजनी चारहु यामलौं, पिया न आये गेह ।
मन पछितात सखीनसों, प्रगट न करै सनेह३५२
झुकत प्रेमवश रुकत नहिं, तकत तिरीछे द्वार ।
किहि कारण दृग जलजतव,उझकत पलक निवार ३५३

मध्याउक्ताका उदाहरण–कवित्त ।

पथिक निवास कीन श्रमको विनाशकीन,
सुजन शिवास कीन कुंजन गलीनभो ।
पक्षिन सु वृक्षलीन कुलटा सुगच्छकीन,
दीपतन स्वच्छकीन प्रगट अलीनभो ॥
भनै असकंद वेश झिल्ली झनकार कीन,
चीन्हसमै नितको सु चक्रवाक दीनभो ।
अस्ताचलमध्य विवरविको सुलीन देखि,
कमल कलीनभो सु भ्रमर मलीनभो॥३८४॥

दोहा ।

दिवस व्यतीत सु याम युग, भयो विवरविमंद ।
परवशहै हरि हेसखी, रहे और नहिं छंद॥३८५॥

पुनःसवैया ।

कबहूं परयंकपै पौढ़िरहै, कबहूं उठिखोलि किंवारे रहै । कबहूं इतते उत भौन फिरै, कबहूं खड़ी आइ दुवारे रहै ॥ असकंद भनै हियमौज

बढ़ै, तब आपनो गात सम्हारे रहै । मनमोहन प्रेम पगी कबहूं, खिरकी लगी वाट निहारे रहै ॥ ३५६ ॥

दोहा ।

इंदु परत फीक्यो लख्यो, बाला मंदिर माहिं ।
घरी घरी इत उत चितै, तकत आपनी छाहिं ३५७

प्रौढ़ाउक्ता उदाहरण–कवित्त ।

कौन कहौं नेकहूँ न आवै बनि कासों कहौं,
तो सिवाइ ऐसी हितू और न निहारिये ॥
भनै असकंद तूतो चतुर सयानी देख,
चंदभयो मंद दुख कौनविधि टारिये ।
काम बढ्यो अधिक न चैन परै एकौक्षण,
नींदहू न आवै जोपै सुरत विसारिये ॥
रजनी व्यतीत होत सौतिन प्रतीत कारि,
प्रीतम न आये वीर शकुन विचारिये ॥

दोहा ।

शकुन विचारि कहौं सखी, प्रीतमकी रसरीत ।

बढ़ीअधिक के छुटी कछु,सौतिनकी परतीत३५९

शरदरैन सुखदैन यह, विरहजननकी आश।
ज्यों नभसरके कंजमहँ, मधु फँसि रह्यो निराश॥

परकीयाउक्ति–कवित्त।

ढूँढ़फिरी कुंजनकी खोर खोर चारों ओर,
नेकहू न पायो खोज सबरस लीन्हेंको।
बैठगई श्रमित सुनैन भरि अंबुजसे,
पायो फल कामकी मवास मन दीन्हेंको॥
भनै असकंद गईरजनी व्यतीत तापै,
हिये पछितात वही प्रीतिरीति चीन्हेंको।
मनकी उमंग मैन जानै कित भूलिरह्यो,
दोष कहा दीजिये सुमन वशकीन्हेंको॥३६१॥

दोहा।

हम आनी उर प्रीति अति, श्याम न मानी नेक।
ैन गई यहि शोचवश,सौतिन करी कुटेक॥३६२॥
ारवर अलिवर मंजुकर, वरतर धर पट वार।

मुरि अरि हर परखत निडर, भरभर साँस विहार॥

गणिकाउत्कंठिताका उदाहरण—

सवैया ।

कौनके फंद पर्‌यो प्रियप्रीतम, बीतगई निशि एक घरीसी । मोमन हारगयो निरमोहितें, गोहितै जोरकै यों कहैरीसी ॥ त्यों असकंद मनोजकी डोरन नेह जँजीर बना जकरीसी । कुंजकी खोरनि खोरनमें सुभ्रमै, ब्रजबाल भई चकरीसी ॥ ३६४ ॥

दोहा ।

मो मन हारगयो रह्यो, किह मोहीवश जाइ ।
बार बार सखियानसों, कहै बाल अनखाइ ॥३६५॥

वासकशय्या लक्षण—दोहा ।

निश्चय पिय आवन समुझि, जो त्रिय करत शृँगार ।
सेज रचै हुलसत हिये, बासकशय्या नार ॥ ३६६ ॥

मुग्धावासकशय्याको उदाहरण-

कवित्त ।

आवन विलोकि चारु समय मिलाय बाल,
अलि कचकारे लखि मुकुर सुधारे हैं ।
जेहर पगन श्रुति भूषण सम्हार कटि,
किंकिणि विशाल करे नैन कजरारे हैं ॥
पिय मन फाँदिवेको नथको फँदासों रोंपि,
भनै असकंद सुख अमित विचारेहैं ।
मोतिनसों माँग ज्यों सम्हारत सहेली निज,
मानौ तम फारि उये आवत सितारेहैं ॥३६७॥

दोहा ।

ालज अच्छ करकंजसों, गूँधत माँग सँवार ।
ानौ उअत तम फारिकै, तारेबाँधि कतार ॥३६८॥

पुनः-सवैया ।

साजि शृँगार सबै तनुमें, मनमें सुखमानिकै

आनँद दीजो । सागर रूप निहारि गुविंदको, प्रेमप्रवाह सुधारस पीजो ॥ तानि कमानसी भौंह-नको भनि, त्यों असकंद यही गुण कीजो । बैनन नैनन सैनन ऐन, सुकाम बढ़ाइ वशी करि लीजो ॥ ३६९ ॥

दोहा ।

सेज साज आनँद करौ, मनसिज हिये बढ़ाइ ।
इमि समुझाइ सखी चतुर, आवन पियहि सुनाइ॥

मध्यावासकशय्याका उदाहरण-

कबित्त ।

सजत शृँगार पिय आवन विलोकि बाल,
डीठ दिये मोहनके पियरे पटानपै ।
तैसे श्रुति भूषण प्रभा कचमें दीप्तवान,
जैसे विज्जुछटा छूट घनन घटानपै ॥
भनै असकंद मंजु अधरन विंबवार,
अहिके कुमारवारे लटकी बटानपै ।

भालमध्य बेंदावान पन्नालाल तापै मनौ,
पंचशुक बैठे नवसुंदर अटानपै ॥ ३७१ ॥

बरवै ।

[स]जे शृँगार नवेली पियहित हेत ।
[वि]हसत सहज सखिनसों सरस निकेत ॥ ३७२ ॥

पुनःकवित्त ।

ठाढ़ी अटापै नँदनंदनके हेत प्यारी,
चंदसों बदन चारु शोभा अति ताकीहै ।
सोहै सुवेश ललित हीरनके हार गरे,
ताके बीच बीच एक लर मुकताकीहै ॥
भनै असकंद मणिजटित तर्योना कान,
भानसे प्रकाशमान उपमा न वाकीहै ।
दृगन चलाकी लाज काम मद छाकी देखि,
चंचलता ताकी मंदगति चपलाकीहै॥३७३॥

दोहा ।

[स]रस नवेली समुझ मन, पिय आवत ममहेत ।

कारि शृँगार साजत भई, नीकी विधि संकेत २७४

प्रौढ़ावासकशय्याका उ०—कवित्त ।

रचि रचि करत शृँगार अलबेली नारि,
मुखकी प्रभाते गयो मंडल प्रभासों भर ।
मोतिनकी माल उर शोभित विशाल जाके,
लालशा हियेमें पिय मिलन कन्हाइ पर ॥
भनै असकंद अति मनमें हुलास करै,
अंबरतरातरसों बैठी परयंकपर ।
भालमध्य बेंदादेत चौंकत चकोर जबै,
चंद भयो मंद औ दिखानलाग्यो प्रभाकर॥

दोहा ।

मिलन मनोहर पीयहित, सजे बसन अँग अँग ।
मुदमदंध झूमन लग्यो,ताको सुमन मतंग२७६॥

पुनःकवित्त ।

कंचनलतासी मैं निकासी औ प्रभासी भासी,

मुखछबि खासी दीत दीपत मयंकमें ।
बोलत सुधासी अंग भूषण विलासी साज,
मंदिर मवासी लसी सहित निशंकमें ॥
भनै असकंद सुख साहस मनोज भरी,
आनपरी आनँदसों प्यारी परयंकमें ।
एक कर पाटीतर सरक पर्यो सो मनौ,
अचरजविशेष भयो पंकजन पंकमें ॥३७७॥

दोहा ।

ाज परी परयंकपै, प्यारी रूपरसाल ।
ियप्रमोदरतिघनी अति, मिलनचाह नँदलाल ॥

परकीया वातकशय्या–कवित्त ।

तनु सुकुमार मुखछबि अनुहार कियो,
मेरुके शिखरमें सुवास मनइंदुको ।
जमिकर मृदुल सुहाइ अरुणाइ वेश,
केश घुघुरारे वारे घन अरविंदको ॥
भनै असकंद गुँधी वेणीकी नजीर नाहिं,

बटन न पाइ ताते गतिका फनिंदको ।
ठाढीयों अटापै घटाहेत लसै दामिन ज्यों,
चाहकर देखै त्यों उछाहसों गुविंदको॥३७९॥

दोहा ।

दामिन घन चाहत जितो, तितो हिये आनंद ।
सजि शृँगार डरपत लखत, सुमग गोकुलानंद ॥

गणिकावासकशय्याका उदा-हरण–सवैया ।

सजी जेहर जेब नये विधिकी, पग एक मनो-रथ नेम धरचो । लसती पहुँची करमें मनकी, शुभ भाँतिन हारहिये पहिरचो ॥ असकंद भनै डर तेहनिवाह, मनोजके काज शृँगार करचो । जब बेंदा लिलाटमें बाल धरचो, रवि ज्यों शशिके वशआनपरचो ॥ ३८१ ॥

दोहा ।

अँग अँग सजे शृँगार सब, श्रुतिभूषण द्युतिहीन ।

घुंबनलौं लखिआइ पिय, देइ मँगाइ नवीन ३८२

कवित्त ।

आवन विलोकि श्याम साजे तौ शृंगार सबै,
आरसी विहीन कियो करहित लेनके ।
अंबर अतर तर सौरभ प्रबंधनके,
अमित अनूप भूर रतिरस देनके ॥
भनै असकंद किये कंचुकी हरीमें कुच,
उदित प्रकाश मनहरन सुमैनके ।
चंदमुख देखि दबे समिट सुकंज मनौ,
मंजु मंजु जाय तरे पल्लव पुरैनके ॥३८३॥

दोहा ।

मिलन मनोरथलेन घन, सजे सुमन रचि सेज ।
ठी तनु सौरभ सरस, मंदिर मुदित मजेज ३८४

स्वाधीनपतिकालक्षण–दोहा ।

जाहिके नायक वशरहै, तन मन धन कर सोइ ।
कवि कोविद सब कहतहैं, स्वाधिनपतिका सोइ॥

मुग्धास्वाधीनपतिका-कवित्त।

पावसऋतु आई यह अधिक सुहाई बीर,
बैनमृदु बोलत पपीहा सुन हाँक हाँक।
पंक भयो मगमें निशंक धुन दादुरकी,
बादर बिरादरसों आये नभ ढाँक ढाँक॥
भनै असकंद निज औसर विचार छोटे,
बुंदवरवान तान इंद्र धनु बाँक बाँक।
ऐसे में बिहारी खड़ो तेरे हेत प्यारी अब,
लखि तू झरोखन ह्वै झुकि झुकि झाँक झाँक॥

दोहा।

भींजत ठाढ़ो नीरमें, बनवारी तुवहेत।
कीन्हों वश रसरूपते, दरश न काहे देत॥३८७॥

पुनर्यथा-सवैया।

अबै मानो कही नहिं छेंडौ हमैं फिर कैसे सुनौ जिय धीर धरै। बतियाँ जो कहौ मनमौज भरी, विनहीके लगे चित कैसे भरै। असकंद भनै

हमसों न करौ तुम ऐसी हँसी इतनो न डरै । कहै वाँह की छाँह न पैहौ चहौ, पछितैहौ अबै भजि-जैहौ घरै ॥ ३८८ ॥

दोहा ।

पाँइन आइ परै पिया, नेक न करत प्रतीत ।
तुम्हैं कौनने सीख यह, दई अनोखी रीत ३८९ ॥

मध्या स्वाधीनपतिका उदाहरण–

सवैया ।

वश कीन्हों अनंग भरी सकुचान, दबी मुसक्यानको ताकेरहै । छबिसिंधु कपोलन गाढ़परैं तिहवार पियासे सुधाके रहै ॥ असकंद भनै दृग वारिजहौ दृग जोर मलिंदसे वाके रहै । मुखचंद्र-प्रभा लखि थाकेरहै ब्रजचंद चकोरसे छाके रहै ॥

दोहा ।

तुव निजगृह प्रविसत भटू, बाहर नंदकिशोर ।
हिमकरघनविचछिपत लखि, जिमि पछितात चकोर ॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिकाका उदाहरण-

कवित्त ।

कीन्हीं रति नागर नवेली नटनागरसों,
एकनमें एकरूप अमित सहायोहै ।
बैठे परयंकपै प्रमोद भरे दोऊ आइ,
टूट्यो हियहार देखि कौतुक मचायोहै ॥
भनै असकंद लागि वेगही सुधारनसो,
कारण विचार सखी वचन सुनायोहै ।
तुम जो सुधारो प्रिय प्रीतमकी पागटेढ़ी,
नीकी विधि श्याम तोलों सरस बनायोहै ३९२

दोहा ।

सजे शृंगार बनाइ सब, अंग अंग तुम चाह ।
जावक कौन दिवाइहौ, येहो प्रीतम नाह॥३९३॥

पुनः-कवित्त ।

नागर नवेली अलबेलीमें निकासी भासा,

मुखद्युति खासी उपमान मान टारेहै ।
चपल क टाक्षनसों मोहनीसी डारि भारी,
मृदु मुस क्यानलौं अधीन कर डारेहै ॥
भनै असक कंद ब्रजराज आश जक्त करै,
सोई मन आश हिय रहत विचारेहै ।
प्रीति चित धारे रहै रूपको निहारे रहै,
वशमें विह ारे रहै निशिदिन वारेहै ॥ ३९४॥

दोहा ।

जो अलि चाहै दिवस निशि, वोही चाहै लाल ।
देखि कंज ला नन दबै, नैनमैनके जाल ॥ ३९५॥

परकीयास्वाधीनपतिका का उदाहरण—सवैया ।

जगजाहिर रीति सनेह बुरी, जो लगै हियमें
कर कैसे टरै। नि शिवासर चैन परै न कछू,विनदेखे
नयो किमि धीर धरै । असकंद भनै ब्रजकी

वनिता घरघेर करै मन मेरो डरै। हम नेकहू मानैं न जाव घरै,बृथा कौन तुम्हारी प्रतीत करै॥३९६॥

दोहा ।

श्याम प्रीतिकी रीति यह, कठिन जगत बतरात।
नगर चवाई मन डरै, तुम्हैं न कछू दिखात ३९७

गणिकास्वाधीनपतिकाकाउदाहरण-

सवैया ।

निशि वासर संग बनोही रहै जित चाहिये दौर पठाइये जू । बिनमेरे कहे कछु काम करै न, सुक्यौंकर दोष लगाइयेजू ॥ असकंद भनै सुख एक बड़ो जो चहै मन वेगही पाइयेजू । हम मान न वासों करैं सजनी, हमें सीख न ऐसी सिखाइयेजू ॥

दोहा ।

रहै संग जो चाहिये, वेग देतहै आन ।
कहुसखि ऐसे मीतसों, क्योंकर कीजै मान ३९९ ॥

अभिसारिकालक्षण–दोहा ।

करि शृँगार विलसन चलै, नायक पहँ चितचाह ।
कै बुलवावै आपढिग, अभिसारिका सराह ॥४००॥

मुग्धाभिसारिकाका उदाहरण-कवित्त ।

देखैं आज कुंजन में आवो सखी फूले फूल,
या कहि लिवाइ गई आपनेही साखसों ।
घेरीगई कुंजनमें विहँग अनेकनसों,
फिरत मुख भेट भई मोहन कजाखसों ॥
भनै असकंद लखै कौतुक अनूप जबै,
देखों मुख प्यारी तेरो बोली यों मजाखसों ।
इंद्र धनु भ्रुकुटीसों दृगसों मृगी लजाइ,
नव्वेजुगवार जबै ऐंचै पंचशाखसों ॥४०१॥

दोहा ।

कुंजन गई लिवाइकै, आइगयो चितचोर ।
बोलत मुख भ्रमवश भये, देख दुचंद चकोर ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

शोभित अनूप कुंज सागर समेत जहाँ,
लाल गुणआगर नित आवत मंजहै ।
आभा वहांकी छवि वरणी वनजाय कैसे,
विरह नशाय नेक रहत नरंजहै ॥
भनै असकंद ऐसो उदित प्रबंध तहां
कोक पिक चातक मयूरगण खंजहै ।
परश समीर काम सरसत अंग अंग,
गरजत भौंर रस वरषत कंजहै ॥ ४०३ ॥

दोहा ।

रहे श्यामघन थकित ह्वै, नीर अवनि पर डार ।
अलि गरजत कहि साथलै, वरषत कंज अपार ॥

मध्याभिसारिकाकाउदाहरण–

कवित्त ।

अति अनुरागी बाल श्यामके सनेह पागी,
लखि निशि प्यारी देखि हीयके भुलाने दंद।

जाति चली आतुरी सों रूपरत चातुरी सों,
मति करखातिरी सों मनमें हुलासवृंद ॥
भनै असकंद युग तरन तरयोना वेश,
गिरत मही में एक जान्यो यों गयोहै छंद ।
कचकोसराहु ठान अतिभयमान मनौं,
रविमें छिपानो जात पूनोको अरध चंद ॥

दोहा ।

हँ चकोर चौचध मची, खिले फूल शशिरात ।
हँ मग मृगनैनीनके,मनहिय जात लजात४०६॥

प्रौढ़ाअभिसारिकाका उदाहरण–

कवित्त ।

अंबर अतर तामें अंबर कराये तर,
अति रस मौजभरी यों चली सजीरमें ।
बिंब लजे कोमल सुधाधर अधर देख,
चौंकत चकोर मुख चंदकी नजीरमें ॥
भनै असकंद करकंजके लखे ते भौंर,

दौर दौर आवै कहूँ नेकहूँ न हीरमें ।
कुहै कुहै करत कलापी करि राते नैन,
प्यारी मनमोहनके जुलफ जँजीरमें ४०७ ॥

दोहा ।

अंवर कर तर अतरसों, चली सुपियहितहेत ।
रोकी विहँग अनेक यहि, पहुँची तदपि निकेत ॥

परकीयाअभिसारिकाका उदाहरण–

कवित्त ।

नवल सनेह सनी रजनी विलोकि घनी,
गैल लई वृन्दावन कुंजलतकानकी ।
भनै असकंद घिरी मोरन चकोरनमें,
नेकहू न वाको रही खबर सयानकी ॥
दौरत मदंध मतवारेसे मलिंद आये,
पंकज समान लखे छवि करपानकी ।
प्यारी मुख चंदचारु देखिवेते मंद भई,
दीप चंदमंडलमें षोडश कलानकी ॥ ४०९ ॥

दोहा ।

रवि देखे ज्यों दीप द्युति, दीपहि माहिं दिखाइ ।
त्यों मुखदेखे चंद द्युति,छिपी चंद महँ जाइ ४१०

गणिकाअभिसारिकाका उदाहरण–

कबित्त ।

कंचन सों वरण मृदुबाला मदनकैसी,
ओढ़िकै दुशाला निज मंदिरते कियोगच्छ।
जात चली मगमें गयंदगति मंद मंद,
देखे मुखचंदकी छिपानी द्युति परतच्छ ॥
भनै असकंद मनहरन मुनीनहूके,
अंबुज अमलदल लोचन सुहाये अच्छ ।
मोरपक्ष वारे सँग जाइ मिली रैनि प्यारी,
बातनकी दच्छ औ, सनेहिनकीकलपवृच्छ ॥

दोहा ।

जाइ मिली नँदनंदसों, प्यारी हितहि लगाइ ।

हिये हज़ारनके हरै, ताहि सुलई रिझाइ ॥ ४१२ ॥

पुनः—सवैया ।

रूप अनूप सवाँरि शृँगार, चली मुख पान जमाइ धड़ीनई । जाइकै नेक उरोज छिपाइकै, चोप चढ़ाइ कटाक्ष अड़ीलई ॥ काचहौ त्यों असकंद भनै, पियने कह्यो रैन अबै दोघड़ी गई । चौंकिकै चारहूँओर विलोकिकै घासकी राशिके पास खड़ीभई ॥ ४१३ ॥

दोहा ।

अति सप्रेम पियढिग:गई, पिय हित लखिमति ठान।
हीरनको कर हार गहि, खड़ीभईमतिगान॥४१४॥

चंद्राभिसारिकाका उदाहरण—

सवैया ।

करकै विचार लागी करन शृँगार रूप, रति-अनुहार प्यारी अतिरस मौजमें । हीरन जड़ित

वरभूषण सवाँरि अंग, ओढ़ि श्वेत सारी कसि, कंचुकी उरोजमें ॥ भनै असकंद तैसी कूक कोकिलाकी सुनि, धीरना धिरानी भयो मनवश मनोजमें । ह्वैकै अनंद नँदनंदनसों मिलन चली चंद्रकी विशाल देखि कौमुदी मनोरमें ॥ ४१८ ॥

दोहा ।

इंदुकौमुदी मंदह्वै, रही चंदमुख पेख ।
चकित चकोर भये हिये, मगदुचंद अवरेख४१६॥

कवित्त ।

मंजनके खंजनसे नैननमें अंजनदै,
मुनिमनरंजन मनोज मतवारी है ।
अंग अंग हीरनके भूषण सवाँरिवेश,
अलक सुधारि वेणी बनक सँवारी है ॥
भनै असकंद हिये अधिक प्रमोद भरी,
आली लै निशंक संग भौंर भीर भारी है ।

ओढ़ि नीलसारी तैसी रैनि अँधियारी चली,
जाति बनवारीपै सुश्याम घटावारी है ४१७॥

दोहा ।

निशि अँधियारी रैनिमें, प्यारी मदन अधीन ।
जात चली आली सहित, वारीरँगमें लीन ॥ ४१८ ॥

दिवाभिसारिका-कवित्त ।

हेतनँदनंदनके अधिक अनंदभरी,
जात चली कुंजनमें हंसिन लखे लजात ।
वदन अनूप रही छविकी छटासी छूट,
भूषण प्रकाश लसै शोभित प्रसन्न गात ॥
भनै असकंद होत नूपुर मधुरधुनि,
जेहर जटित मणि कौतुक सु यों दिखात।
अरुण विशाल पग जहँ जहँ धर्त प्यारी,
हाथ तीन चारकलौं चूनरसा होतजात ॥

दोहा ।

मणिनजटित जेहर लसै, भलो मिल्यो सतसंग ।

धरत अरुण पग जहाँ जहँ, होत चूनरी रंग ॥

पुनः—कवित्त ।

प्यारी रसरंगमें विनोद भरी आनँद सों,
जात चली मानो मत्त गयंद लजातीहै ।
चकित चकोर भौंर अवली सुचारों ओर,
भनै असकंद मुख मोरि रुकिजातीहै ॥
करन तरचोननकी अमल कपोलनपै,
द्युतिवरपांति परे अधिक सिरातीहै ।
वरण छिपाइ मनौ दिनकर किरण आइ,
मंजुल विमलकंज परस विलातीहै ॥ ४२१ ॥

दोहा ।

करन तरचोननकी झलक, परत कपोलन माहिं ।
मनो तरनकी किरण मृदु, पंकज परस सिराहिं ॥

प्रवस्तक प्रेयसी लक्षण—दोहा ।

सुनै गवन पतिकोकिलखि, परदेशहिको जाइ ।
कहत प्रवस्तक प्रेयसी, होइ विरहदुख ताइ ४२३

मुग्धा प्रवस्तकको उदाहरण-

कवित्त ।

जबते सुनीहै तुव चलन विदेश बात,
खानपान हँसन बतानहूं बिसरिगो ।
हरिगो प्रमोद सखियान संग खेलै जौन,
भरिगो दृगन वारि वरुणी ठहरिगो ॥
भनै असकंद लाज विवश कहै न वैन,
कामवश वाको मन तेरही वगरिको ।
कान्ह चलिदेखौ वह फूलकैसी मालवीच,
गवन तिहारो कामशरसों निकरिगो ॥४२४॥

दोहा ।

अरी परी पीरी कहा, पिय न जात सुन बात ।
धीरी मुख साहस भरी, देरी देख लजात ॥ ४२५॥

मध्याप्रवस्तक प्रेयसीका उदाहरण-

सवैया ।

कान्ह चलो चहै द्वारकाको सुनि राधिकाके

उर पीरसी बाढ़ी। भूलगई सबै अंग शृँगार, तरंग अनंग उठी अतिगाढ़ी॥ मालिन लाइ गुलाबकी माल भनै असकंद सम्हारकै काढ़ी। मेलिदई पियके हियमें चख जोरत मोरत ह्वै रही ठाढ़ी॥ ४२६॥

दोहा।

है जबते देख्यो कह्यो, अधिक बढ़ायो हेत।
नैनन नैन मिलाइकै, झौरमौरको देत॥ ४२७॥

प्रौढ़ाप्रवस्तकप्रेयसी--कवित्त।

वकवर पुंजदेखौ उड़त अकाशहूँलौं,
विटप पहाड़पै मयूर कूक दरसै।
पापीयो पपीहा पिय आगम सुनायो आइ,
बोल कोकिलाहूके सुधासमान सरसै॥
भनै असकंद ऐसी पावस प्रबल देखि,
निकसै न कोऊ कहूँ आपनेहू घरसै।
अबतो पयान परदेशको न कीजै कंथ,
मेघमतवारे ये झलापै झला वरसै॥ ४२८॥

दोहा।

बोलत मोर पपीहरा, बैन सुअति मदजोर।
बरसतहैं घनघोर ये, चलत समीर झकोर ४२९॥

परकीया प्रवस्तकप्रेयसीका उहाहरण-कवित्त।

अंक भरि पौढ़े परयंकपर दोऊ आइ,
शंक कर बाल हिये अति सकुचातिहै।
वंक कर सैन औ निशंक क्षणएकहूना,
रसवश ह्वैकै कछु कछु अलसातिहै॥
भनै असकंद देख रजनी व्यतीत पीत,
पट पियराइ देखि मन पछितातिहै।
ज्यों ज्यों रविमंडल प्रकाशमान होत त्यों त्यों,
प्यारी मुखचंदपै ललाई होतजातिहै॥

दोहा।

बोलउठी तिय पीवसों, भरिहग वारिज नीर।
तजि विदेशको गवन अब, पीरहरण बेपीर ४३१॥

परकीयाप्रवस्तकप्रेयसी-कवित्त ।

आई ऋतु पावसकी अधिक सुहाई चलै,
पवनझकोरै कूक कोकिला सुनावैहै ।
मधुर मयूरनके वचन सुहाये सुनि,
हिय हुलसात जिय प्रेम सरसावैहै ॥
नेहको लगाइकै विदेशको न कीजै गौन,
भनै असकंद दूंददादुर मचावैहै ।
झूम लागी मुदित धरापै धुरवान धूम,
उमड़ घुमड़ घन घुमड़त आवैहै ॥ ४३२ ॥

दोहा ।

तुव पिय जात विदेशको, क्यों नहिंरोकति बाल ।
पावसऋतु आवत भटू, मदन करैगो शाल॥ ४३३

पुनःसवैया ।

प्रोषित एक पियाहित लागिकै धावन वेग विदेश पठायो । फूलकली धरी पत्रिकामें, रसरूप

वसंतको ताहि जतायो ॥ त्यों असकंद भनै ब्रजमें, वनितानके मोद हिये अति आयो । हैंसि परोसिनकी सबलै, सुपरोसिन एक वृथा दुख पायो ॥

टीका--दोहा ।

भेजै जाहि विदेशको, तासों नेह नवीन ।
ताके विरहविछोहते, भई परोसिन दीन ॥ ४३६॥

गणिका प्रवस्तक प्रेयसी उदाहरण-
सवैया ।

कहा कहिकै समुझैये तुम्हैं रसरीतिको जानत मानतै हैन । मिलै करमें करतौ कहै यों परदेशको गौन करै अरे तैन ॥ भनै असकंद सुएक घड़ी कहूँ ताबिन मोहिं परै नहिं चैन । रही मनकी मनमें सुकहै, न मिलाइ रही त्रिय नैनसों नैन ॥

दोहा ।

प्रीतम जात विदेशको, कब ऐहौ सुखदैन ।
मनकी मनही में रही, काहि कर सौंहे नैन ४३७॥

आगत पतिकाका लक्षण-दोहा ।

पति आवै परदेशते, खुशी होइ अँग अंग ।
आगतपतिका नायिका, ताहि कहै रसरंग४३८॥

मध्या आगतपतिका का उदाहरण-कवित्त ।

आवन सुनि आली वृषभानुकी दुलारी ढिग,
आइ कह्यो आये सुन प्रीतम तिहारेहैं ।
तौलौं जुरिआईं ब्रजगाँवकी लुगाईं और,
वेऊ चल ताही छिन आनिकै विहारेहैं ॥
भनै असकंद श्यामा सखिन समाज बीच,
जाके मन अमित मनोरथ सिहारेहैं ।
कछु कछु लाजभरी चाह करै देखै मुख,
जैसे निशि होत भौंर पंकज निहारेहैं॥४३९॥

दोहा ।

नवलवधू पिय आगमन, चरचा सुन सुन कान ।

हिय हरषत परखत नमन, परखत सुमन कमान ॥

बरवै ।

सावनमें मनभावन आवनकीन ।
गावन लगीं सुहेलिनि लखौ प्रवीन ॥ ४४१ ॥

मुग्धा आगतपतिकाका उदाहरण-

सवैया ।

रहे खेलत संग सखीनके आइ कहूं यह बात सुनाइ दई । चलिआये विदेशते वैन सुने निज-मंदिर वेगही दौरिगई ॥ असकंद भनै कछु चातुरीसों, पटकीकरि ओट प्रमोदमई । पियको मुख देखत बाल नई भय लाज भरी सकुचात भई ॥

दोहा ।

पति आयो परदेशते, चली भौनविच आइ ।
पटहि ओट देखत मुखहि, धरकन हिये समाइ ॥

प्रौढ़ा आगतपतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

धावन पठायो पिय आवन सुनायो आइ,
निज कर लेख दियो कहि सुख चाइकै ।
लखिकै मृदुलमंजु कंजते नवीन पान,
ताते गहिलीन्ही अतिप्रेम सरसाइकै ॥
भनै असकंद शुभ शकुन पुनीत मानि,
मंदिर में लायो चौक मोतिन पुराइकै ।
प्रफुलित गात भये उन्नत उरोज दुवो,
पत्रीको पढ़त अलि मृदु मुसक्याइकै ॥ ४४४ ॥

दोहा ।

पिय आवनकी खबर शुभ, बाँची चतुर सयान ।
बाहर मोद सुचौगुनो, हिये सौगुनो आन ॥ ४४५ ॥

परकीयाआगतपतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

आये घनश्याम द्वारकाते ब्रजगोकुलमें,

छायो वृषभानु भौन आनँद महारी है ।
इत उत गोपीगण दौरेफिरैं खोर खोर,
मोतिनसों एक एक भरि भरि थारी है ॥
भनै असकंद तहाँ एक ब्रजबाल लिये,
कंचनकलश भई सबते अगारी है ।
पगपै बढ़तजात दूनी द्युति आननकी,
राधाते अधिक ताके उर सुख भारी है॥ ४४६॥

दोहा।

आयो पीव विदेशते, कोउ आपने गेह ।
कहूँ कौनहूँ बालके, बढ्यो चौगुनो नेह ॥ ४४७ ॥

बरवै।

मनभावनको आवन सुनि शिरनाइ ।
रही शोचवश सजनी सखिन छिपाइ ॥ ४४८ ॥

गणिका आगतपतिकाका उदाहरण—

सवैया।

सौंह करे कहौं हे सुनियो सुधि होत कहूँ कबहूँ

सुख पाये। कंज समान नये नये पान, सुपीत भये किहि नीत सुहाये॥ त्यों असकंद भनै बतियाँ, कहौ चीज प्रवीण कहा इत लाये। जौन दिनाते गये परदेश, सुकौनसी ठौर कहाँ ह्वैकै आये॥ ४४९॥

दोहा।

आयो मित्र विदेशते, आनँद उर न समाय।
मोतिनमाल उतारिकै, मिली न सुख कहिजाय॥
त्रिविध कहीं ये नायिका, जे कवि चतुर प्रवीन।
प्रथम उत्तमा, मध्यमा; अरु अधमा गुणहीन ४५१॥
नाह करै अनहित तऊ, आप करै हित नार।
ताहि उत्तमा कहत हैं, जे कवि बुधि आगार॥४५२॥

उत्तमालक्षण उदाहरण–कबित्त।

रजनी व्यतीत होत आये घनश्याम जहाँ,
परत्रिय संग सोई नवलकिशोरी है।
आनँदकरि लीन्हों अति प्रेमकी तरंगनसों,

कामकी उमंग बढ़ी देखि छबि भोरी है ॥
भनै असकंद दियो अंबर अतर तर,
बोली पिय पोंछौ तो कपोलरेख रोरी है ।
पौढ़ि परयंक श्रम खोवो क्षण एक कल,
नैन अलसाने रही रैन अब थोरी है ॥ ४९३ ॥

दोहा ।

बसेवाम अनुरागबश, खोवनदे श्रम जोर ।
हाहा सखी न जाइयो, श्याम बड़ेही भोर ॥ ४९४ ॥

मध्यमा लक्षण-दोहा ।

पिय हितकर हित जो करै, अनहित करै गुमान ।
ताहि मध्यमा कहत हैं, जे कबि बुद्धिनिधान ४९५॥

मध्यमाका उदाहरण-कवित्त ।

आये रसरंगमें विनोद करे घनश्याम,
हरष बिलोकि बाल तिरछी चितैरही ।
सौंह करि बातनसों लीन्हों है मनाइ कान्ह,
कामद्युतिवेशमान मतिको वितैरही ॥

भनै असकंद जोरि सौहैं दृगवारिबुंद,
तेवे प्रमुदित घन वरष रितैरही।
भौहैं चढ़ी उतरनिचौंही भई प्रेमभरी,
लालन वकोंही जुरि हितमें हितैरही ॥४८६॥

दोहा।

प्राणपियाके मोहके, सुनि सुनि वचन अमोल।
रूप दरश आधीन भे, दृग अलगरजी लोल॥
नायकके हितहूं करे, करै गुमान जुवाम।
ताको अधमा कहतहैं, जे कवि रस अभिराम॥

अधमाका उदाहरण–कवित्त।

तेरी सौंह मोसों यों कहायो जो सुहायो लगै,
दीजो कहि येरी प्रीति करिकै नशाहनै।
तुव मुखचंदको चकोर मन मेरो रहै,
समुझ इतेक और नेकहूं सलाहनै॥
भनै असकंद कहै मुदित रिसौंहै वैन,
तोको का परीहै मोहिं अपनी निबाहनै।

सौतविन पाँइन परेहू जो मिलैगी आइ,
एक बेर येरी फिर दूजी बेर नाहिनैं ॥ ४८९ ॥

दोहा ।

पिय आये हित अति कर्यो, गरे लगाय लगाय ।
तदपि कहे रूखे वचन, नैनन मनसकुचाइ ॥

अथनायकलक्षण-दोहा ।

मोहिजाइ त्रैलोक लखि, जासु रूप आगार ।
कवित गीतरस लीन जो, नायक कह्यो विचार ॥

नायकका उदाहरण-कवित्त ।

सोहै शीशकीट वारौं मारतंड मंडलको,
वारौं पट पीत विज्जु मुक्ता रदनपै ।
कुंडल कपोलनपै समरनिशान वारौं,
अधरन बिंब वारौं पल्लव पदनपै ॥
भनै असकंद अंग अंगपै मदन वारौं,
मेचक सुधन वारौं रूपके सदनपै ।

अलक मलिंद वारौं दृग अरविंद वारौं,
इंदु वारौं कोटिन गुविंदके वदनपै ॥ ४६२ ॥

दोहा ।

रूपसिंधु घनश्यामको, वनितनकी मनमीन ।
केलि करत निशिदिन रहैं, त्यों असकंद प्रवीन ॥

पतिनायकका लक्षण-दोहा ।

विधिसों व्याह्यो पति समुझि, उपपति परत्रियचाह।
वैसिकहित गणिकानसों, नायक त्रैकविनाह ४६४

पतिनायककोउदाहरण-कवित्त ।

जादिनते व्याह भयो राधिका नवेली सँग,
तादिनते गेहद्वार देहरी लखीनहीं ।
भीतरहीं भौनके सनेहवश आठो याम,
करत प्रमोद देख वदन मयंकहीं ॥
भनै असकंद धरैं मुरली अधर नाहिं,
पगजहँ धर्त प्यारी मनसों धरै तहीं ।

जैसे अरविंदको मलिंद मतवारो रहै,
तैसही गुविंद चाह करत निशंकहीं ॥ ४६५॥

दोहा।

जादिनते गौनो भयो, तादिन ते नँदलाल।
भूलगये लखि रूप तुव, ग्वालबाल वनमाल ॥
सोपति कहिये चारविध, अनुकूलहि सुवखान।
दक्षिण धृष्ठ सुशठ कह्यो, चारभांति यहिवान ॥

अनुकूलपतिलक्षण–दोहा।

सुवश आपनी तीयके, जोपिय रहत हमेश।
ताहि कहतअनुकूलहैं,कवि असकंदनरेश॥४६८॥

अनुकूल पतिकाकोउदाहरण–कवित्त।

हँसि अनुकूल शुभ शोभित सुहाककूल,
हैमन मोहित मृदुवातन सुदूनो दूनो।
कंजकर कलित सनाल पद्मदेखे दुवो,
हार उरमोतिनको प्रासित सुदूनो दूनो ॥
भनै असकंद ब्रजचंद सुखमोद भरे,

नितप्रति ध्यानधरे रहत सुदूनो दूनो ।
मुखसों कलानिधिसों स्रवत सुधारससों,
सुमिस चकोर नेह करत सुदूनो दूनो॥४६९॥

दोहा ।

दूनो दूनो करत नित, नेह नवीनो नाह ।
वदन सुधाधर लखिरहै,ह्वै चकोर चितजाह॥४७०॥

दक्षिणलक्षण-दोहा ।

बहुत तियन सों होइ जो, एक रीति सम प्रीत ।
तासों दक्षिण कहतहैं, जे कवि सुमति पुनीत ॥

दक्षिणकाउदाहरण-कवित्त ।

खेलनको होरी जुरि आईं ब्रजगोरी सबै,
भोरी छबिदेख डारयो अतनुसुफंदहै ।
देखत कुसुमरंग अतर गुलाब घोरि,
कारि सरबोर दियो आनँदक कंदहै, ॥
भनै असकंद नैन सैन सबही पै कारि,
झोरिन गुलाल फेंकि कारि छल छंदहै ।

गोपिनके वृंद वीच सोहै ब्रजचंद जैसे,
सुमन कुमोदिनीमें समुदित चंदहै ॥ ४७२ ॥

दोहा ।

चंदमुखी हुलसी हिये, भई प्रेमसरबोर ।
एकनजरह्वै लखि रहे, श्रीब्रजचंद चकोर ॥४७३॥

पुनर्यथा--कवित्त ।

राँची रसरंग भरी रासकेलि मंडलमें,
प्रतिप्रति आनँदसों होतफिरै वारियाँ ।
वेऊ अति मदन मदंध मतवारेघने,
इत उत देखत चलावत नजारियाँ ।
भनै असकंद वैसी प्रेमकी तरंगनिमें,
टूटे फूलहार देखि तज फुलवारियाँ ।
बीनौ कहि सुमन सुहाये मनभाये सबै,
हरष हलादई कदंमकी डगारियाँ ॥ ४७४ ॥

दोहा ।

उतर सुमन लैकर गुधे, एकडोर नँदलाल ।

ाहिराघे ब्रजवधुनको, बनक बनाई माल॥४७५॥

धृष्ठलक्षण-दोहा ।

ाक नमानै दोष करि, शंका लाज करैन ।
ृष्ठ आपने काममें, धीरजनेक धरैन ॥ ४७६ ॥

सवैया ।

मानै न नेक कहूँ विध सौ मैं, हजारक वेर
हीहौं मनेकर । तापर येती कुटेक न लाज, धरै
ृयमें तू रहै तिय सोंपर ॥ त्यों असकंद भनै
तजाव, जहाँ तुम नीको सनेह रहे कर, ऐसो
ाशंक दयो झझकार इते कहू बातपै अंक
ऱ्यो भर ॥ ४७७ ॥

दोहा ।

मेआयो परतीयसों, घर आयो किहि राह ।
ोन काम इमि बैन सुन, अंक भऱ्यो करचाह४७८

शठलक्षण-दोहा ।

पने कारजके लिये, कहै रसीले बैन ।

निपट कपट युत शठ सही, वर्णत कवि बुध ऐन ॥

सवैया।

इंदु लसै मुखकंज कपोल पै, बैनन फूल झरैं मृदुवानसों। मान करै असकंद भनै, तुम कापर तानती भौंह कमानसों ॥ मैं कब येतो कियो अपराध सुबूझले तू सखा औ सखियानसों। हाहा हमारी बिनै सुनि देखि, सुनेक मनोज भरी अँखियानसों ॥ ४८० ॥

दोहा।

कब कीन्हों अपराध मैं, बोलत बोल रिसाइ।
पार हियेके होतहै, मदन बाणसम आइ ॥ ४८१ ॥

उपपतिलक्षण-दोहा।

परनारीको रूप लखि, वश्य होइ अँग अंग।
उपपाति तासोँ कहतहैं, कविजन सहित उमंग ४८२

उपपतिका उदाहरण-कबित्त।

मेरे फाँदिवेके मणिफंदाही बनायराखे,

हिय हुलसावै सदा नेहकी निशाकरै ।
प्रेमकी पगीहै रसरंगकी रँगीहै जाइ,
श्रवन लगी है रतिरणकी सलाकरै ॥
भनै असकंद यंत्र मंत्रकी पढ़ी है किधौं,
अधरसुधारसके कारण झुकाकरै ।
ज्यों ज्यों प्राणप्यारी मृदु हँसति बताति त्यों त्यो,
डोलती अमोल ये कपोलनपै साकरै ॥ ४८३ ॥

दोहा ।

हैकपोल पै डोलती, हँसत साँकरे वेश ।
अधर सुधारसको झुकै, काम दियो उपदेश ४८४

वैसिकलक्षण–दोहा ।

जो चाहे अतिप्रेम सों, वारबधून विलास ।
ताको वैसिक कहतहैं, कविमत सरस हुलास ॥

वैसिकका उदाहरण–सवैया ।

भूषण अंग विशाल बने, बहुरंग घने अति

चातुरी बानसों । रागहिंडोल अलाप रही, सुन मोहन मोहिगये वहि तानसों ॥ त्यों असकंद भनै लखि यौवन, तीक्षण नैन लगे ललचानसों । वारदियो मन औधन धाम, धनीबन वारवधूनकी आनसों ॥ ४८६ ॥

दोहा ।

तेरे देखत अंग अँग, मन अनंग बढ़िजात ।
बारविलासिन धन्य तुव, चपल चातुरी बात ॥

दोहा ।

तीन प्रकार विचार कर, नायक और उचार ।
मानी वचन चतुर कहै, क्रिया चतुर निरधार ॥

मानीलक्षण–दोहा ।

तिय सयानि लखि मान जो, नायक करै गुमान ।
मानी नायक कहतहैं, कवि जे बुद्धि निधान ॥

मानीउदाहरण–सवैया ।

कहे मानिये मान कहाँलौं रहै, यह छोड़ि

कुटेक कही गहीहै। तुम औरनकी परतीत करी, उन कौनसी बात नहीं सहीहै। असकंद भनै मुखसों लहिये, रजनी अबतौ घरी द्वैरहीहै। तुव आनन स्वच्छ कलानिधि सों, लखिबेको चकोरसी ह्वैरहीहै ॥ ४९० ॥

दोहा।

मान कहाँलौं मानिये, सुनिये श्यामकिशोर।
करै न दूजो मानको, रहै तिहारी ओर ॥४९१॥

पुनः कवित्त।

नैन मतवारे मृगनैनवारे वारे सुनि,
अंजन लगाये होत खंजन निनाताके।
वंशीधर वेग कर पगको धरापै धर,
अधर धरा धरि यो सुधर सुधा जाके ॥
भनै असकंद चोप चोगुणी चकोरनके,
सौगुणी कलानिधिसों मुखकी प्रभाताके।
चल तज छंद होइ अधिक प्रमोद तोहिं,
कोटिन कटत बाधा नाम लिये राधाके४९२॥

दोहा ।

सुख समूह शोभा अमित, नैन मनोभवफंद ।
तज चलिये छलछंदको, चंद उदित ब्रजचंद ॥

कवित्त ।

चल ब्रजचंद प्यारे प्यारीने बुलाये तोहिं,
मोहि मन लीजे पै न कीजे मान हीको है ।
जीको सुख अमित विचार अवनीको भलो,
फीको परचो इंदु भयो याम रजनीको है॥
भनै असकंद चाह चौगुनी विलोके बढ़ै,
अधर सुवास जाके रहत अमीको है ।
सौत मदगंजन मुनीन मनरंजन,
सुनैननको अंजन विशाल कामिनीको है४९४

दोहा ।

तोहिं मनावत होगई. याम यामिनी बीत ।
मान तहाँलौ कीजिये, करै न दूजो नीत॥४९५॥

पुनर्यथा--कवित्त।

मंदिर सुधाको प्रेम जीव वसुधाको भूप,
कुंदकलिकाको रूप तमकी प्रभाकोहै।
हरत व्यथाको भाषि सकत कथाको जाके,
गुणनगथाको शेष कहि कहि थाकोहै॥
भनै असकंद कोकनदकी समाको स्वच्छ,
सरस कताको ताकी विधि कविताकोहै।
पूरण कलाको ऋद्धि सिद्धि संपदाको धाम,
कीरतिसुताको चंद्रमासों मुखताकोहै ४९६॥

वचनचतुरलक्षण--दोहा।

वचननकी रचनानसों, जो तियवश करिलेइ।
वचन चतुर नायक कहै, ताको कवि मत सेइ॥

वचन चतुर नायकका उदाहरण--कवित्त।

बोलत मयूर मतवारे पुंज पुंज जहाँ,

सघन अँधेरी लखि आनँद सदरमैं ।
झूमिझूमि रहीं लता कदम डगारनमें,
घूम घूम रही भूमि चूमकर लरमैं ॥
भनै अतकंद देखि चौंचद लगत तहाँ,
मेरे साथ जात सोतो नेकहू न भरमैं ।
करमैं विचित्र काम रेसमकी डोरिनसों,
डारचोहै हिंडोरा कोक चातकवगरमैं॥४९८॥

दोहा ।

हौं प्यासो हौं देरको, तूचंचल पनिहार ।
द्वै गागर भरदे हमैं, धरदे घरके द्वार ॥ ४९९ ॥

क्रियाचतुरनायक लक्षण–दोहा ।

जहाँ कौनहू क्रिया मिस, देखत वशके नाह ।
चतुराई करि तिय मिलै, क्रिया चतुर कहिताह ॥

क्रियाचतुरउदाहरण--सवैया ।

एक समै वनिता सब आइ चलीं शिवपूजनहेतु लिवाइकै । पाइकै अवसर पूरो भलो तहाँ,

आइगये हरि होरी मचाइकै ॥ धाय गह्यो करसों करजाय,भनै असकंद सुभागी छुड़ाइकै । आनन पै कच आनिपरे मनौ श्यामघटामें छिप्यो शशि जाइकै ॥ ५०१ ॥

दोहा ।

रोरीकर धाये हरी, गोपीगण विच बाल ।
मृदुल अमोल कपोलपै, मल्यो गुलाल गुपाल ॥

पुनः—सवैया ।

ब्रजबालको सुंदर रूप अमोल, विलोकतही विनमोल बिक्यो । छलसों नँदलाल अबीर लये मुसक्याइ गह्यो नहिं नेक रुक्यो ॥ गलबाहीं लई मुखमींजिबेको असकंद भनै ज्यों प्रवीन झुक्यो । ारजोरी छुड़ाइभगी सो मनौ शशिमंदिर भीतर ाय लुक्यो ॥ ५०२ ॥

दोहा ।

े अबीर नँदनंदनै, कर गहि लीन्ह्यों धाय ।

चह्यो लगावन वदन पर, राधा भगीं छुड़ाइ९०४

प्रोषितपतिकाका का लक्षण ।

पुनर्यथा—कवित्त ।

मंडल रहस रच्यो श्यामा श्याम मोद मान,
गोपीगण बीच मानो मदन सुरतहै ।
बाढ़त सरस रस सबहीके अंगनमें,
प्रेमके तरंगनमें आनँद जुरतहै ॥
भनै असकंद खेलमाहि चन चोर रच्यो,
मूंद दृग एक छिप भागत तुरतहै ।
छूवत परस्पर हेरहेर कुंजनमें,
चोर करैं राधिकाको सबमिल दुरतहै ॥९०५॥

दोहा ।

बार बार राधा बनै, चोर करैं घनश्याम ।
हमैं छुवननहिं पाइहौ, तुम अति चंचल वाम ९०६

प्रोषितपतिकाका लक्षण नायक—दोहा ।

जोविदेशमें विरहवश, नायक होय अधीन ।

नायकप्रोषित सोइकहू, जे पंडित परवीन॥८०७॥

उदाहरण-कवित्त ।

कारे कारे घन घहरान लागे मंडलमें,
होनलागी, मोरनकी कूकैं ये चहूँघा ओर ।
झिल्ली झनकार लागे दादुर पुकार लागे,
धुरवा धुकार लागे करन मचाये शोर ॥
भनै असकंद ऐसे समय लताननमें,
डारिकै हिंडोरा अरु गोपीगण लेतोजोर ।
झूलतो प्रमोद भरो जो पै मानिलेतो कहो,
जातो ना विदेश तौ न विरह बढ़ातो जोर८०८

दोहा

मेरेई मन भावती, इकटक निकट निशंक ।
हगचकोर कब देखिहौं, राधावदन मयंक॥८०९॥

अनभिज्ञनायकलक्षण-दोहा ।

चाहै जो न त्रियानकी, प्रेमकरी रसरीत ।

ताहि कहत अनभिज्ञहैं, राखै मनकी जीत५१०॥

अनभिज्ञकाउदाहरण-कवित्त।

इत उत आय देत बीरिहू खवाय वेश,
मृदु मुसक्याय बातैं रसकी करयोकरै।
मन मुसक्याय नैन सैनन चलाय श्याम,
भनै असकंद छाती छुवत गह्योकरै॥
हाव भाव जेते ब्रजबाल करै देखि देखि,
हिय ललचाय चाय निकट रह्यो करै।
राधिका नवेली कौन जाको पति ऐसो मिल्यो,
रतिको न बूझे और आनँद चह्यो करै॥५११॥

दोहा।

जतनाकियो बहुविधि भटू, सरस मिलनके काज।
तऊ न बूझै बात वह, कैसो है ब्रजराज॥५१२॥

दरशन निरूप्यते-दोहा।

श्रवण चित्र अरु स्वप्न कहि;प्रगट प्रत्यक्ष विचार।
आलंबन शृंगारते, दरशन चार प्रकार॥५१३॥

श्रवणदरशनलक्षण–दोहा।

कानन सुन मन होतहै, जाको भान समान।
ताहि श्रवण दरशन कहत, आलंबित रसखान ॥

स्वप्नदरशनकाउदाहरण–कवित्त।

तनु घनश्याम कान कुंडल दिपत भानु,
मुख शशि चारु काम फवनि फवै रह्यो ॥
भायो मनमोर मोर चंदहू चकोर ऐसो,
रतसमहैके उर आनँद मढ़ै रह्यो।
भन असकंद ब्रजराजको सलोनो रूप,
सरस अनूप जाल छबनि बढ़ै रह्यो।
तेरे मृदुबैन मेरे श्रवण सुधासे परे,
वा वश आप दौरि दृगनि हितै रहयो ॥५१५॥

दोहा।

मृदुल मनोहरतनु सुघन, श्रवण परत तव बैन।
मदन कदन मन कर दियो, दृग छाई छवि ऐन ॥

चित्रदरशनलक्षण–दोहा।

जो चित्रहि लखि सुख करत, विरह करत वा लाज।
चित्रदरश ताको कहत, जे प्रवीण कविराज॥५१७॥

चित्रदरशनकाउदाहरण–सवैया।

बैठिरही हगसों हग जोरि, मनोज भरी हिय आनँद ताके। बैन कहै न सखीनसों एक, परी यह टेक सनेहकी वाके॥ त्यों असकंद भनै लखिये वो भई वश तेरइ रूप मजाके। चित्रमें आनन इंदु विलोकि, चकोरसी ह्वैरही रूप सुधाके

दोहा।

चित्र विलोकत राधिका, बाढ़ी मैनमरोर।
देखिरहीं इकटक वही, मुखसम चंदचकोर॥५१८॥

स्वप्नदर्शनलक्षण–दोहा।

सोवत बिच लखि नाहको, होत हिये आनंद।
स्वप्नदरश ताको कहैं,कविजे सुखके कंद॥५१९॥

स्वप्नदरशनकाउदाहरण—कवित्त ।

आज वह सघनलतान वन कुंजनमें,
निपट अकेली सपनेहूमें गईहौंरी ।
प्रफुलित सुमन विलोकि अति नीके भले,
मालती जुहीके तिन्हैं टोरन नईहौंरी ॥
मन असकंद तहां आय वनमाली आली,
कर गहि लीन्हों अंक भरनदईहौंरी ।
झझकत चौंकपरी धरक न ही समाय,
कहत न बात बनै चकित भईहौंरी ॥ ५२० ॥

दोहा ।

सपनेकी सुन बात यह, गई कुंज बिच आज ।
आय गह्यो कर श्यामने, खुली आँख दुख लाज ॥

प्रत्यक्षदरशन लक्षण—दोहा ।

जो निश्चय मनुहारके, मोहिजात लखि रूप ।
सो प्रत्यक्ष दरशन कहत, जे कवि रसिक अनूप ॥

प्रत्यक्षदरशनका उदाहरण-कवित्त।

मंजनकरि ठाढ़ी अटापर सुखाऊँ केश,
वीणको बजाय इहि खोरहो निकारिगो।
धुनि सुनि नजर निगोड़ी परी वापै दौरि,
जुलफफँदामें जाय मेरो मन लरिगो॥
मन असकंद जौलौं रूपको हटाऊँ तौलौं,
रूप वह प्यारो मेरे नैनन सुभारिगो।
कल विनदेखे परै नेकहूँ न येरी भटू,
हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो॥५२३॥

दोहा।

मंद मंद मुसक्यानि वह, लखि भागे सबदंद।
बिसरत नाहिन एक क्षण, अरी गोकुला चंद५२४॥

इति श्रीशिवसुत षोडशनाम प्रताप अनुभारतीज्ञ श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरिविरचिते रसमोदकाभिधे काव्ये श्रीमहाराज राधाकृष्ण विहारे कविजन हृदयानंददायिने आलंबन विभाव प्रकरणं नाम प्रथमोल्लासः॥ १॥

अथ
द्वितीयोल्लासः २.

अथउद्दीपनविभाव लक्षण--दोहा ।

चंद चाँदनी वन सघन, उपवन बाग विहार ।
चंदन अतर समीर अरु, षटऋतु सरस निहार५२५
इनहींते जो होत है, उद्दीपित रसभाव ।
ताको कविजन कहत हैं, उद्दीपन सुविभाव५२६॥
सखा सखी जेती सबै, रसके और शृँगार ।
वरणत उद्दीपनहिमें, पण्डित सुमति विचार५२७

उद्दीपनका उदाहरण–कबित्त ।

वृन्दावन सघन लतान वन कुंजनमें,
मालती जुही सो रही चहुँदिशि फूल है ।
तैसी चंद चाँदनी चकोरनकी चुहल वैसी,
देखिश्याम गायतान वंशी सुर मूल है ॥
भनै असकंद परी श्रवण नवेलिनके,

सुधि बुधि भूलि उठी मनसिज हूल है ।
विरह सताई दौरि दौरि उठि धाई सबै,
नेकहू सम्हारचो नहीं बदन दुकूल है॥५२८॥

दोहा ।

वंशीधुनि सुनि मदनवश, दौरीं सब ब्रजबाल ।
देखि चंदकी चाँदनी, आनँद भरी बहाल ॥५२९॥
प्रथम कहे जे भेद सब, नायकके बहुरीति ।
तिनके चारों सखा अब, वर्णतहौं करि प्रीति५३०॥
सचिव सखा कहि चारविधि, पीठमर्द १पहिचान ।
विट२ चेटक ३सुविदूषकहु४, वरणे कवि बुधवान॥

पीठमर्द लक्षण-दोहा ।

मानवतीके मानको, मोचै कहि मृदुवैन ।
कवि गुण ताको कहत हैं, पीठमर्द सो ऐन ॥५३२॥

पीठमर्दका उदाहरण-कवित्त ।

सघन घुमड़ि घन घोर करिजोर आये,
शोरको मचाये पठवाये दै दै बोलजस्न ।

तातें मैं निकट तिहारे दौरि आयो वीर,
अधिक प्रमोद भरयो मनमें विचार प्रश्न ॥
भनै असकंद चल वृन्दावनकुंजन में,
देखो घनश्याम होई पूरण हियेकी त्रस्न ।
अबतौ इतेक फेर चरित अनेक करौं,
सारेमित्रगाँवदंद लागत सुपक्षकृत्स्न ॥५३३॥

दोहा ।

सुनत वचन मृदु सखाके, हरष न हिये समानि ।
छोड़ि मान आली चली, गजगति सहित गुमानि॥

चेटक लक्षण–दोहा ।

वचन चतुरई करि सखा, दुहुँन मिलावै आइ ।
छंद फंद करकै बहुत, चेटक कहिये ताइ॥५३५॥

चेटकका उदाहरण–सवैया ।

साँवरेको सजिकै उतहीं, इत दौरिकै आयो गुवालिनही पर । देखतही कह्यो बैठी कहा, यक

कौतुक होत विशालतहींपर । त्यों असकंद भनै वहिकुंजमें,झूलत टूटपरी मुकतालर।हौंलखिआयो मयूरन पुंजमें प्रेम भरे घनश्याम महीपर॥५३६॥

दोहा ।

सखा चतुर घनश्यामको, सखी स्वरूप बनाइ ।
सुमन बिनन मिस कुंजमें, राधे दई मिलाइ ५३७॥

विट लक्षण-दोहा ।

मिलिबो सकल कलान कर, रचै चातुरी तौन ।
ताहि कहत विट सखाहैं, जे पंडित बुधभौन ॥

विट उदाहरण-सवैया ।

माधवकी मति काम बिलोकिकै, बालसखा यों विचार कियो मन । दादुर शोर मयूरन बोल, सुचातक टेरसी टेर दई तन । मानवती ढिग जाय कह्यो, असकंद भनै लखि पावसके घन।घूमरे घूमरे धुरवा धरा,चूमरहे उमडे झूमड़े घन॥ ५३९॥

दोहा ।

सखा कूक कोयल लगी, मदन हूकसी आइ ।
मिली राधिका श्यामको, ज्यों चपला घनपाइ ॥

विदूषक लक्षण-दोहा ।

जोरै प्रथम समाजको, रचै स्वाँग बहुआन ।
सकल हँसावै जुगतसों, वहै विदूषक ठान५४१ ॥

विदूषकका उदाहरण-कवित्त ।

त्रिविध समीर सीरी बहत झकोरनसों,
फैली चारु चाँदनी सुचंदके प्रकाशसों ।
वृन्दावन कुंजनमें सखिन समेत श्याम,
दीन्ह्योहै मिलाइ राधे सरस हुलास सों ॥
भनै असकंद फेरि करिकै उपाय जाय,
स्वाँग बनिआयो करै बात हकलातसों ।
भौंहन चढ़ाय नैन मुख मटकाय दीन्ह्यों,
सबन हँसाय नाचि कूदत विलाससों ॥५४२॥

दोहा ।

उठत कहूँ बैठत कहूँ, फिरत हलावत पौर ।
रचत स्वाँग बहु भाँतिके, विहसावत कर मोद ५४३

अथसखीलक्षण–दोहा ।

राखै नायक नायिका, जिनसे कछु न दुराव ।
सखी चतुर तासों कहैं, चार भांति कविराव ५४४
चारोंके गुण येकहैं, मंडन शिक्षाठान ।
उपालंभ परिहास कहि, भाषत बुद्धिनिधान ॥

मंडन लक्षण–दोहा ।

अंग अंग भूषण सजै, त्रियके सखी बनाइ ।
मंडन कहिये ताहिको, विधिसों सरस जताइ ॥

मंडनका उदाहरण–सवैया ।

मंजुपद जावक लगाइ पहिराइवेश, जेहर सुज्योति जगी किंकिणि सुलंकपै । कंचुकी उरोजनपै हीरनके हार हिये, साजे बहुभांति मंद

नखत दमंकपै॥ भनै असकंद श्रुतिभूषण विशाल तैसे, रतिसी बनाइ बैठाइ परयंकपै। मोतिन विहूँधे केश तारन समेत मनौ, रजनी सवाँरि बाँधी पूरण मयंकपै ॥ ५४७ ॥

दोहा।

अंग अंग भूषण सजे, अरु शृँगार सबलेख।
भूलगई बीरी अली, अधर ललाई देख ॥ ५४८ ॥

शिक्षालक्षण–दोहा।

देत सीख जो नायकहि, नानाविध समुझाइ।
शिक्षासखी बखानहीं, कवि पंडित सुख पाइ५४९

शिक्षासखीका उदाहरण–कवित्त।

रूप गुण आगरी न चीन्हें रसरीति कछू,
चतुर सयानी कहूँ काम मत लीजै ना।
बार बार आवै वह नगर मँझार बात,
मोहिं काहि आवै सुन सीख हठ कीजै ना॥
भनै असकंद यह रीति जग जाहिरहै,

लहट लगावै फेरि नेकहूँ पतीजै ना ।
बानि कुलकानिकी बचायो चहै जोपै बीर,
साँवरे सलोने हाथ भूल मन दीजै ना॥५५०॥

दोहा ।

तू अलबेली ब्रजबधू, सीखो नहीं सयान ।
नेह न कीजो श्याम सँग, जो चाहौ कुलकान ॥

पुनः--कवित्त ।

रूप रस सागर अनूप लसै तेरो यह,
पावत न मैनिकाकी द्युति छबि छूटीको ।
जोपै लखि नागरनट मन अटकावै कहूँ,
जोरत सुकौन फेर कुलकानि टूटीको ॥
भनै असकंद तैसे ब्रजके चवाई लोग,
सांच बरजोरी करै निपट सुझूटीको ।
यमुना तट विकट सुनीर भरिबेको कहि,
बार बार रोकै चंद्रकेशी या बधूटीको॥५५२॥

दोहा।

तू न जाइये भूलिकहुँ, कालिन्दीके तीर ।
अटकावै मनको कहूँ, नागरनट बलबीर॥८८३॥

कवित्त।

करि बरजोरी नित जातहै कलिंदी तीर,
आवै उत कान्ह बजा वंशी बसबो करै ।
राग तान गायकर निपट रिझायकर,
नेरे आय बातैं करि करि हँसिबो करै ॥
भनै असकंद करै कौनहूँ कलारी ऐसी,
मुकुट विशाल छबि हिय लसिबो करै ।
हाथहू नरहै मन देखे वह रूप जाल,
साँवरो सलोनो लाल ब्रज बासिबोकरै॥८८४॥

दोहा ।

तू यमुनातट जाति नित, हटक न मानति नेक।
कान्ह सुतित बसबोकरै, अरी छोंड़ यह टेक

उपालंभ सखीलक्षण-दोहा ।

यापियपै त्रियके ढिगै, यापियपै त्रिय कोइ ।
देइ उरहनो आनकै, उपालंभ कहि सोइ॥५५६॥

उपालंभका उदाहरण-कवित्त ।

खायो नहीं पान दूध दधिकी कहै को बान,
वृन्दावनहूं न कहूँ बाँसुरी बजाई है ।
मकराकृत कुंडल उतार धरे कानन सों,
मुकुट सवाँरो नहीं लकुट सुहाई है ॥
भनै असकंद श्याम बैठे ठीक वाही ठौर,
आइ जहाँ देखि करै अति निठुराई है ।
चाहिये न तोहिं ऐसी कठिन कठोरताई,
विधिकी बनाई नेह लगन लगाई है ॥५५७॥

दोहा ।

नैन मिलाइ फँसाइ मन, केते नाच नचाइ ।
निठुराई कोउ करतहै,तुमसी लगन लगाइ ५५८

परिहास लक्षण-दोहा।

करै नायिकासों हँसी, रतिकी देश लजाइ।
ताहि कहत परिहासहैं, रसग्रंथनमें गाइ॥५५९॥

परिहासका उदाहरण-सवैया।

यह रातकी बात जतावो कछू, किहिभाँतिसों कैसे प्रमोद ठये। उन गोल कपोलनके मृदुचुम्बन कैसे लये अरु कैसे दये॥ असकंद भनै रसके वशमें कुचके मसके दृग ज्यों उतये। बलि साँची कहौ इतनी हमसों, विपरीतरतीसों वे जीतलये॥५६०॥

दोहा।

सुनत वचन परिहासके, अली रही शिरनाइ।
सखी कह्यो मुसक्याइकै, करिहै कहा लजाइ॥

दूतीनिरूपणं-दोहा।

प्रथम कही उत्तम द्वितिय, मध्यम अधम तृतीय॥

निपुण दूतपनमें सु ये, दूती कहैं कवीय॥९६२॥

उत्तम दूती लक्षण-दोहा ।

वचन निकारत अमी सम, मोहिलेत मन जौन ।
कवि जन वर्णत प्रीति सों, उत्तम दूतीतौन॥९६३॥

उत्तमदूतीका उदाहरण-कवित्त ।

खोल मुख चंद ताके द्युतिको प्रबंध बधै,
माती मन मदसों तुव शोभा करनहै ।
सुभग सुहाये बने तरन तरयोना वेश,
केश घुघुरारे रूप रतिकी हरनहै ॥
भनै असकंद आन कान कहा येरी वीर,
मानि मतियेरी तू ननदी सुघरनहै ।
देखि नँदनंद ऐसो औसर कितैरी वीर,
चतुर चितैरी चारु चंपक वरनहै ॥ ९६४ ॥

दोहा ।

सीख सुनौ ब्रजचंद लखि, त्रिविध सुगंध समीर ।
सुखद मोहिनी रूपकी, तू अति गुणन गँभीर ॥

पुनः कवित्त ।

कंचन वरण बालि नूतनी विशालसोहै,
बैठी निज मंदिरमें आनँदकी कंदहै ।
सोरह शृँगार सजे बारहू अभूषणको,
लखि मनमोहि परै अतनु सुफंदहै ॥
भनै असकंद कोटि द्युति रति वारे होत,
दशन विलोकि चंचलाकी गम मंदहै ।
चलि ब्रजचंद प्यारे कर तू अनंदजैसो,
लसत मुखारविंद उदित न चंदहै ॥ ५६६ ॥

दोहा ।

कोटिन रति द्युति वारिये, लखहु सुचलि ब्रजचंद ।
मुदित वालि मुख देखिये, ऐसो उदित न चंद ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

मंदिर सुधाको प्रेम जीव वसुधाको भूप,
कुंदकालिकाको रूप तमकी प्रभाको है ।

हरत व्यथाको भाषि सकत कथाको कौन,
गुणन गथाको शेष कहि कहि थाको है ॥
भनै असकंद कोकनदकी समाको स्वच्छ,
अमल अनूपताको विध कविताको है ।
पूरण कलाको ऋद्धि सिद्धि संपदाको मूल,
कीरति सुताको चंद्रमासों मुखताको है ५६८॥

मध्यम दूती लक्षण-दोहा ।

कहै वचन मीठे कछू, सींठे देश मिलाय
मध्यम दूती जानिये, भाषै जुगुति बनाय ॥५६९॥

मध्यम दूतीका उदाहरण-कवित्त ।

पंकजके वरनसोहै मीन मृग खंजनसे,
अंजन कलित अति छविके छटासे ये ।
भरत अनंग मन हरत मुनीनहूंके,
करन कलोल लोल नटके बटासे ये ॥
भने असकंद चारु हेरत मयूषे परै,
फेरत सुचारो ओर चौमुखपटासे ये ।

हैंतौ कजरारे दृग कज्जल न देहु प्यारी,
लरत बटोहिनसों करत कटासे ये ॥ ८७० ॥

दोहा ।

तूतो करत शृँगार इत, उत न सौति मिलजाय ।
तेरी भौंह कमानकी, फिर कमनैती जाय ॥ ८७१ ॥

पुनः—कवित्त ।

कान्ह चलि सुतट कलिंदी केलि कुंजनमें,
सुखको विचार साजि बैठी परयंकपै ।
मणिके जटित अंग भूषण विशाल सोहै,
हीरनके हार मंद नखत दमंकपै ॥
भनै असकंद एक कौतुक अनूप बनै,
भाषत न देखौ मिलि मुदित सुअंकपै ।
वदन पियारीके अमोल तिल सोहै वेश,
बैठ्योहै निशंक मानौ मधुप मयंकपै ॥ ८७२ ॥

दोहा ।

सोहै वदन मयंकपै, बिंदु श्याम रँग वेश ।

अमी हेतु मानौ भवँर, बैठ्यो लै उपदेश ॥८७३॥

अधमा दूती लक्षण—दोहा ।

कहै वचन अनखाइकै, चाहै बात बनैन ।
लक्षण दूती अधमके, वरणत कवि बुध ऐन ॥

अधमादूती उदाहरण—कवित्त ।

जौन मनमोहनसों सुख चाहौ आठौयाम,
तौन मनमोहनसों कैसी अनखाती हौ ।
जानती न भूल कछू ऐसी रिस ठानतीहौ,
मानती न मेरी सीख फेर पछितातीहौ ।
भनै असकंद यह मनमें विचारि देखो,
तरफ निहारो सुनौ सौतिन सिराती हौ ।
चल उठ देख प्यारी शीतलसुपौन चलै,
मौन गहि बैठी तुम कौन रँगरातीहौ ॥८७५॥

दोहा ।

मिल मोहनसों वेग चलि, बैठी कहा रिसाय ।
उत सुनकै सौतें सजै, फिर न बनै पछिताय८७६॥

विरहनिवेदनलक्षण–दोहा ।

ुविधभाँति दूतीनके, कहे काज कविराज ।
वेरह निवेदन एक फिर,संघट्टन सुखसाज॥८७७॥

विरहनिवेदनका उदाहरण–सवैया ।

कानपरी जबते धुनि आन, भरे रहैं वारिज
ैनन आंसुरी । चित्रलिखीसी भई वह मूरति,
अंगदह्यो विरहानल तासुरी ॥ ताहिभनै असकंद
ुप्रेमसों, जाय निकार सनेहकी फाँसुरी । साँसपै
ांस भरै ब्रजबाल, सुनी जबते विसवासिन
ाँसुरी ॥ ८७८ ॥

दोहा ।

खानपान भूषण वसन, नेक न भावै वाहि ।
ालफै सेज परी विकल,जौलौं मिलै न ताहि ८७९॥

संघटन लक्षण–दोहा ।

ुय मिलाइ दुहूँनको, करि चतुराई जौन ।

संघट्टन दूती कहैं, ताको कवि मतिभौन॥ ५८०॥

संघटनकाउदाहरण–कवित्त ।

फैलिरहीं फूलिरहीं झूलिरहीं झूमिरहीं,
लूमि रहीं चूमि लता ललित लुनाई पर ।
भनै असकंद वारै बाग अमरावतीके,
वारै महताब खिलि सरस जुन्हाई पर ॥
ऐसो कहि नवलकिशोरीको लियाइ तहां,
वारिये का वाकीसो अनूप चतुराई पर ।
इत उत सुमन दिखाइ पहिराइ जाइ,
दीन्हों है मिलाइ जाय कुँवरकन्हाई पर ॥

दोहा ।

पिक चकोर चातक घने, बोलिरहे सुख पाय ।
तहाँ लैगई राधिकै, दीन्हों श्याम मिलाय ५८२॥
अपने कारजको करै, दूतपनो जो आप ।
स्वयं दूतिका जानिये, चतुराई कर थाप॥ ५८३॥

स्वयंदूतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

खबरि उड़ानी दिनद्वैकते नगरबीच,
बाँधे फिरै डगर ठगौरिनके सोहिया ।
रैनि अँधियारी दिन जात सांझहोनिवारी,
कुमति विचारी कौन सूझति न तोहिया ॥
भनै असकंद थोरी थोरी गोरी गोरी भोरी,
तेरी लखि प्यारी छवि तरसत मोहिया ।
भ्रमत कहां धौं फिरै याते आज मेरे ठाम,
छाँही बसमानबात सरसबटोहिया ॥ ५८४ ॥

दोहा ।

जौलौं तू उत जायगो, तौलौं की सुन बात ।
रैनपरे मगमें कहूं, दिनकर अब छिपजात ॥ ५८५ ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

सरस निवास करि अतिही विलास कारि,

क्षीण होतजाती प्रभा रविके किरनकी ।
मारग विकट भूलि पथिक लुक्योहैं एक,
खबरि उड़ानी कहौं सौंहैं विरनकी ॥
भनै असकंद काहि अहित न मानै यह,
भस्म तन कौन भई तृष्णा हिरनकी ।
ऊँचीहैं ऊँचाई ताते परत लखाई सुनौ,
दूर दूरताई सुपताई मंदिरनकी ॥ ५८६ ॥

दोहा ।

घन घुमंड वरषन चहत, अधिक अँधेरी रैन ॥
रहौ हमारे गेहमें, पथिक पाइहौ चैन ॥ ५८७ ॥

अथ षट्ऋतु निरूप्यते ।



हेमन्तऋतु वर्णन–कबित्त ।

याम युग ग्रीषमलौं दिवस व्यतीत होत,
चार हिम दिन रैन दीह दरसतहै ।

सहज बयारि सीरी चलति झकोरन सों,
अंग अंग छुइ तनु कंप सरसतहै ॥
भनै असकंद ऐसी सरस हिमंतऋतु,
भुज भरि प्यारी पिय अंक परसतहै ।
वाट घाट औघट दिशान दिशि चारों ओर,
सम घनसारके तुषार वरसतहै ॥ ५८८ ॥

दोहा ।

सरस दिगंत हिमंतऋतु, बरसत बरफ फुहार ।
दंपति जे जन रसिक ते, प्रमुदित करत विहार ॥

पुनःकवित्त ।

मोद मदमाती लखि प्रबल हिमंत शीत,
सजि रतिमंदिर अमोल रुचि प्यारीसों ।
चौगिर्द चिरागझाड़ हीरनके जगमगात,
दीपमालिकासी करी ओप चित्रसारी सों॥
भनै असकंद डारिझरफ दुवारनपै,
गिलम गलीचे बिछे ओप अनियारीसों ।

अंवर अतर तर सुघर तमोल खाय,
पौढ़ी परयंक जाय सरस विहारीसों ॥ ६९०॥

दोहा।

नवब्रजवधू हिमंतऋतु, शीत पाय सुखचैन।
अंक भरे परयंक पर, पियते क्षणक छुटैन॥

शिशिरऋतु वर्णन–कवित्त।

देख ऋतु शिशिर अवाई यह मेरी वीर,
झरखनहूँते शीत भीतर भरयो परै।
ओढे ऊन अंबर तरातर सुगंधनसों,
फरश गलीचनपै प्रगट अरयो परै॥
भनै असकंद पिये अमल अनेक जेवे,
नजर बचाय आप पाँइन खसोपरै।
सरस समंद सीरी चलत बयार ज्यौंही,
चहुँदिशिबरफ फुहारन झरयो परै॥ ६९२।

दोहा।

शिशिरशीत आये भट्ट, बरफ परै चहुँओर

दंपति जे वे रस छके, तिनते चलत न जोर ५९३

पुनर्यथा–सवैया ।

मंदिर सुंदर सेज मजेजमें बैठे, दुहूं रसलौं रस भीने। चारहूंओर चिकैं कर द्वारपै, दीप घने तम लेस-कहीने। सौरभ पुंज भनै असकंद सुशीतको भीत निरादर कीने। प्याले प्रमोदके लीन्हें दुहूं कर, पागे महामद नेह नवीने ॥ ५९४ ॥

दोहा ।

शिशिरशीत व्यापक जगत, भावै अंबर तूल ।
दंपति सुखको देतहै, रसिकनकी मनमूल ५९५॥

वसंतऋतुवर्णन–कवित्त ।

कुंजनव बागनमें विपिन विभागन में,
सजल तड़ागनमें नदी नद झरमें ।
खोर खोर ग्रामनमें मौर मौर आमनमें,
मंद मृदु गावनमें तंतकार करमें ॥

भनै असकंद जुही दावदी चमेलिनमें,
अवली मदंध दौर भौंर भर भरमें ।
कंत सुखभामिन प्रमोद वनवानिकलौं,
आज दरशंतयों वसंत घर घरमें ॥ ८१६ ॥

दोहा ।

फूलिरहीं फुलवारियाँ, मधुकर अवली गुंज
पुंज पुंज वनितानके, खेल वसंत निकुंज ॥८१७।

पुनः—कवित्त ।

रूपगुण आगरी अनूपरस सागरी है,
गुणन उजागरी प्रमोद झलक्योपरै ।
मदन उछाह श्याम नेह चितचाह भरी,
वैन मृदुहास प्रेम नेम ललक्योपरै ॥
भनै असकंद देत उपमा लजात मन,
कीरतिकिशोरी संग रंग हलक्योपरै ।
पुंज ब्रजबालनिके खेलत इकंत नव,
चोलिनते चपल वसंत छलक्योपरै ॥ ८१८

दोहा ।

आई प्रगट वसंतऋतु, मधुकर भये मदंध ।
झौंरन मौर रसालभे, मधुर माधवी गंध ॥ ५९९ ॥

ग्रीष्मऋतुवर्णन–कवित्त ।

खासे खसबोइन खजाने खसखाने खूब,
खोले दर द्वार दीह हरफ दरीचें ये ।
चोखे चारुचंद्र कलियाय चौक चंदन सों,
शीतल पटीन शीत सौरभन सींचे ये ॥
भनै असकंद बुंद परत फुहारनसों,
सलिल गुलाब अली सुखसों उलींचे ये ।
ताहूपै प्रचंड ऋतु ग्रीषम अखंड भूमि,
तापित करत मारतंडकी मरीचें ये ॥ ६०० ॥

दोहा ।

प्रगट तेज रविविच अधिक, पवन चलै झकझोर ।
ग्रीषमऋतु नीकी अली, खसखाने चहुँओर ६०१ ॥

पुनःकवित्त ।

शीतल समूह खसवीजनी बयारि वेश,
शीतल प्रसून सेज शीतल महल है ।
शीतल सरोजदल अमल गुलाब आब,
शीतल चहूँहा चौक शीतल चहल है ॥
भनै असकंद तहाँ सरस फुहारनकी,
फरस फवी है शीत शीतल सहल है ।
शीतल सुगंध शुभ शीतल महीतलपै,
तीखन तिहूँपै ऋतु ग्रीषम कहल है ॥ ६०२ ॥

दोहा ।

अली भूमि तापित यदपि, ग्रीषमऋतु करदीन ।
तदपि कुंजगलियानकी, शोभा शिशिर प्रवीन ॥

वर्षाऋतुवर्णन–कवित्त ।

चाह भरे चंचल चहूँहा झपि झूमि झूमि,
झंझा झोक छ्वैक्षिति अनेक छबि छायेरी ।
तैसी दीह दामिन दमंकति दिशान देश,

झपकि झलान धूम धुरवा मचायेरी ॥
भनै असकंद तैसी लहर लजाननपै,
छहर छटान बुंद बुंदन सुहायेरी ।
पालक पुनीत प्रजा पावस सँयोग पाय,
पुंज पुंज वारिध विलंद उठधायेरी ॥ ६०४ ॥

दोहा ।

घन घमंड चहुँ ओरते, फिरत मचाये दोर ।
पावसऋतु लखिकर उठे, पिक मयूरहू शोर ॥

पुनःसवैया ।

आठहू याम न देखिपरैरवि, यों घन घेर रहे नभ मूलैं । पौन चलै झकझोरनसों, सुधि कामकी एकहू काम न भूलैं ॥ त्यों असकंद भनै मुखानके, वैन सुने सुख होत अतूलैं । सावनमें मनभावन संग में प्यारी हिंडोलना मौजसे झूलैं ॥ ६०६ ॥

बरवै ।

सावन सरित सुहावन आवन कीन ।
वन उपवन हरियाने अधिक नवीन ॥ ६०७ ॥

पुनः सवैया ।

भादौं घने घने घूमिरहे, चपला चमकै चहुँ-ओर सुहाई। फूले प्रसून सबै वनके, अवनी पै हरी हरी सेज बिछाई ॥ त्यों असकंद भनै ब्रजगोपिन, साँवरेसों रसरीति बढ़ाई । झूलैं सबै मिलि कुंज कदंबपै, डारि हिंडोलना धूम मचाई ॥ ६०८ ॥

बरवै ।

जितदेखौ तित बरषत घन घहराय ।
पावसऋतुको आवन लेत लुभाइ ॥ ६०९ ॥

शरदऋतुवर्णन–कवित्त ।

अमल अकाश ओप अंबर अनूपवृन्द,
उजल अमंद चारु चाँदनी प्रकासहै ।
सौरभ समीर त्योंही मंजुल प्रसून पाय,

गुंजत मलिंद पुंज केसर सरासहै ॥
भनै असकंद उर प्रमुद विलोकैं ऋतु,
सरस सुहायो शीतभानको उजासहै ।
दंपति अनेक सुख संपति समूह लिये,
गोपिन समेत कुंज कुंजन विलासहै ॥६१०॥

दोहा ।

अमल अकाश शरदनिशा, हिमकर विमलविकास ।
वृन्दावन वंशी बजत, हेतु सरस रसरास ॥६११॥

कवित्त ।

फैली चारु चाँदनी ये शरदसुधाकरकी,
चारों ओर कीन्ह्यो निज चंदछबि जालको ।
फूली मंजु मालती सरोजवन तोर तोर,
गूँध गूँध गेरै गरे श्यामाहिय मालको ॥
भनै असकंद मोद मंदिर मनोज भरी,
मिलि गलबांही करै सरस खियालको ।

राखै रसरहस रिझाय ब्रजगोपिकान,
गुण गरबीली गुण आगर गुपालको ॥६१२॥

दोहा।

प्रफुलित पुहुप प्रकाश शशिडोलत त्रिविध समीर।
मिलि बिहरत रमणी रमण, तरन तनूजा तीर॥

इति श्रीशिवसुत षोडश नाम प्रतापअनुभारतीज्ञः
श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरि विरचिते
रसमोदकाभिधकाव्ये श्रीमहाराजाधिराज राधाकृ-
ष्णविहारे कविजन हृदयप्रमोददायिने
उद्दीपन विभाव प्रकरणं नाम
द्वितीयोल्लासः॥ २ ॥

तृतीयोल्लासः ३.

अनुभाव-दोहा।

अनुभवजिनते होतहै, चितमें रतिको भाव।
कहे तेइ अनुभावहैं, रस शृङ्गार बनाव॥६१४॥
नैन वैन मृदुहास अरु, अंग विकाश विनोद।

साकभाव सुहाव धृत, इनहींते रतमोद ॥ ६१५ ॥

अनुभावका उदाहरण—कवित्त।

जाति चली आली निजमारगमें मंदिरको,
देखतही श्याम अरी कौन काहि टोंक्योहै।
समुद उमंग भरे आइकर पास लागे,
करन ठिठोली दियो कर गहि झोंक्यो है॥
भनै असकंद छ्वै छुड़ाइ सकुचानी वेश,
सरस लजाय दृग जोर अवलोक्यो है।
बोलीविहसौंहैं चितचोरयोहै निशाकरिकै,
हाँकरिकै ना करिकै वरवस रोंक्योहै॥ ६१६ ॥

दोहा।

नेह नशानैननि करै, वैननि करै सुटेक।
हरषत चलत सुलेत मन, ठहर जाति क्षण एक॥

अथ भाव नाम—छप्पय।

प्रथम कहत अस्तम्भ द्वितिय शुभ स्वेद कहावत।

तृतिय कहत रोमाँच चौथ सुरभंगन गावत ।
पंचम कहियतु कम्प षष्ठ वैवर्ण बखानत ।
सप्तम आँसू कहिय प्रलय अष्टम कहि गानत ॥
इमि भनत नृपति असकंदगिरि, जृम्भा नवम
बखानिकर ॥ लखि अंतर्गत अनुभावके, आठहु
सातुक भाव पर ॥ ६१८ ॥

स्तंभ लक्षण-दोहा ।

थकै अंग जब लाजते, भय अरु हर्ष समेत ।
ताहि कहै अस्तंभ हैं, पंडित बुद्ध निकेत ॥ ६१९ ।

स्तंभका उदाहरण-सवैया ।

चल फागके औसरलौं घनश्याम, गये वृष-
भानकि भौन गली । पकरे गये यूथ सहेलिनमें
वहँ राधिका मूठ गुलाल घली ॥ असकंद भनै
फिरतौ भई धूम, घला घलीमें गई थाकि थली ।
बलि वैसही ठाढ़ी कहैं सिगरी, अबतौ भये श्याम
ललाते लली ॥ ६२० ॥

दोहा।

रंग रंगपै चढ़िगयो, प्रेमतरंगी रंग।
नैननैनसों मिलि थके, श्याम राधिका संग॥६२१॥

पुनः—सवैया।

साज शृँगार नई ब्रजनार, खड़ी निजमंदिर द्वार सयानसो। आय अचानकही निकरे, हियमें वनमाल परी अति आनसों॥ ताहि घड़ी सों भनै असकंद, मिली न अली सँगकी सखियान सों॥ श्यामको रूप विशाल थकी लखि, प्यारि मनोज भरी अँखियानसों॥ ६२२॥

दाहा।

लखे रूप रँग साँवरो, परत न मग पग एक।
धरै न धीरज हरष कछु, लाज तजै नहिं टेक॥

स्वेद लक्षण—दोहा।

मोद सुश्रम दुर लाजते, कोप आदिते होय।

अंग अंग प्रगटै सलिल, स्वेद कहावत सोय ६२४

स्वेदका उदाहरण–कवित्त।

मोद मदमाती अनुराग भरी मोहनपै,
हँसत हँसत गई खेलनको होरीहै।
धूम मची तहाँ रंग केसर अबीरहूकी,
उड़िगो गुलाल भूर झोरिनकी झोरीहै।
भनै असकंद देख ग्वालनकी भीर भार,
लौटत अइत वृषभानुकी किशोरीहै।
कढन न पाई श्रमबुंद परे आननपै,
लाजभरी तैसी कछुरोष भरी थोरीहै।

दोहा।

इंदुवदन पर परत जे, श्रमके बुंद विशाल।
रफ गुलालते होत ते, गजमुकताहल लाल॥

रोमांच लक्षण–दोहा।

हिय हुलासके डर कछू, जाड़ेहूके त्रास।
उठै रोम अँगअंगमें, सो रोमांच विलास॥६२७॥

रोमांचका उदाहरण--सवैया ।

बैठी सखीनके सङ्गमें बाल, प्रमोद भरी विहसै सुलजातन । होनलगी चरचा पियके जब, आन-नकी रसरीतिके बातन ॥ त्यों असकंद भनै सुनिकै तनके तन रोम उठे सकुचातन । त्यौं हरी कंचकीमें छतियाँ मनो, काटे उठे जल जातके पातन ॥ ६२८ ॥

दोहा ।

श्रावण सुन छतियाँ तनी, कछू कंचुकी तान ।
उठे रोम तनुके घने, हिये न सकुच समान॥६२९॥

सुरभंग लक्षण--दोहा ।

सुखमद उर विसियाटते, वैन औरही रूप ।
कहत ताहि सुरभंगहैं, जे कवि सुमति अनूप ६३०

सुरभंग भावका उदाहरण--सवैया ।

आवतती निज मंदिरको, मग रोंकिकै साँवरे

चोप चढ़ाई। आइ घरै कह्यो सास कहाँ रही कौनसि ठाम विलंब लगाई ॥ त्यों असकंद भनै सुनकै, करी रोष छिपावनकी चतुराई ॥ नैन सो नैन मिलाइरही, सुगरो भरि एकहू बात न आई ॥ ६३१ ॥

दोहा ।

ननद कह्यो जानत अरी, लखत कहा तुव बान ।
ताते वैन कहे दबे, आधेई अखरान ॥ ६३२ ॥

कंप लक्षण-दोहा ।

कोप प्रमोद सु भ्रमहुते, भयते प्रगट दिखाइ ।
गात अंग थर थर कँपै, कंप सरस कहि गाइ ॥

कंपका उदाहरण-कवित्त ।

आये नँदनंदन सहेलरी अलीकी बन,
देखतही बाल सखी अति सुख पायोहै ।
जाय ताके पास बातैं रसकी बतानलागे,
छुवत उरोजनके रोष चढ़ि आयोहै ॥

भनै असकंद वेग बातन तिरीछी ताक,
करि पहिचान कछू भ्रम हिय छायोहै ।
कान्ह दिव चाहके निशंक भरि अंकलीन्ह्यो,
झुझुकि मयंकमुखी वदन कँपायोहै ॥६३४॥

दोहा ।

झझक कछू ठाढ़ी भई, प्यारी कंपित गात ।
ज्यों समीरके परशते, डोलत पीपरपात॥६३५॥

वैवर्ण लक्षण-दोहा ।

मोहभीत अनिष्याटते, वरन वैवरनहोय ।
सोई है वैवर्ण वह, भाषत हैं कविलोय ॥ ६३६ ॥

वैवर्णका उदाहरण-कवित्त ।

गौनहाई आई एक सरस नवेली बाल,
देख मुख जाकी प्रभा चंदहूकी हटजात ।
संगकी सहेली लैके गृहमें प्रवेश कियो,
सौतिनको मान औ गुमान सबै घटजात ॥

भनै असकंद तहाँ आये नँदनंद प्यारे,
देख अतिप्रेम बढ्यौ रोकयोपै न हठजात ।
हियमें लगावतही बाल सकुचानी इमि,
जैसे निशिआवतही पंकज समिट जात६३७

दोहा ।

हियो लगायो श्याम ज्यों, बाम रही सकुचाय ।
इंदुवदन नव तासु को, पीरो परो सकाय ॥६३८॥

आँसू लक्षण–दोहा ।

मोद क्रोध डर दुखहुते, जल भरि आवै नैन ।
अश्रु कहतहैं तासुको, पंडित कवि बुध ऐन ॥

आँसूका उदाहरण–कबित्त ।

हौंतौ चलिआई आज वृन्दावन कुंजनमें,
चातक चकोरनको माच्यो जहाँ शोर है ।
वश करिबेको रसबाँसुरी बजाई आइ,
भूली सुधि मोहिं उठी प्रेमकी झकोर है ॥
भनै असकंद लाज डरते न बोली कछु,

अवश चुराइ लयो चित्त चित्तचोर है ।
नैननमें लागी झरझरन झलान कैसी,
पैठ्यो घनश्याम हिये नंदको किशोर है६४०॥

दोहा ।

श्याम अग्रकुचपै गिरत, आँसू दृगते टूट ।
मनहुँ कंज अलिजानिकै, बरसत रसहि अटूट ॥

प्रलय लक्षण–दोहा ।

अंग अंग व्याकुल सबै, तन मन कीन सम्हार ।
प्रलय कहतहैं ताहिको, जे कवि बुद्धि उदार ॥

प्रलयका उदाहरण–कवित्त ।

जा छिनते देखी मनमोहनी छबीली छवि,
ताछिनते कीराति किशोरिका तरंगमें ।
डूबिगई प्रेमके पयोनिधिमें वाकी मति,
हूलत बिरहरह्यो मनहू न संगमें ॥
भनत अस्कंद अंग अंग द्युति छाई वही,

कौन चतुराई करै नेहके प्रसंगमें ।
डोलत न नेक बैन बोलत न खोलै दृग,
व्याकुल परीहै खरी मदन उमंगमें ॥ ६४३ ॥

दोहा ।

मिलत दोउ व्याकुल भये, परे नेहवश आन ।
नैनबाण इनके लगे, उनके मृदु मुसक्यान॥६४४॥

जृम्भा लक्षण-दोहा ।

जो मिलाप बिछुरन विषे, आलसकै जमुहाइ ।
जृम्भा ताहि बखानहीं, रसिक कविनके राइ६४५

जृम्भाका उदाहरण-सवैया

प्यारी जगी रतिमें रतियाँ अँखियाँ बड़े भोर रही अलस्याइकै । आइकै बैठी सखीन समाजमें, लाजभरी न हिये सकुचाइकै ॥ त्यों अस्कंद भनै बतियाँ, रसकी जबै बूझे सबै मुसक्याइकै । क्यों न कहौ अपनी अपनी, यों कहै अकराइ कछू जमुहाइकै ॥ ६४६ ॥

दोहा।

जब जब प्यारी नींदवश, आलस सों जमुहात ।
तब मानहु छबि सिंधुमें, कंज विकश मुदजात ॥

सात्विकभाववर्णन लक्षण ।

अथहाव-दोहा।

लीलादिक जे हावहैं, ते अनुभावहि जान ।
कहि संयोगशृँगार में, भाषत बुद्धि निधान६४८॥
जे सुभाव नारीनके, रस शृँगारके हेत ।
प्रगट हावमें चोपकर, वरणत बुद्धिनिकेत ६४९॥

छप्पय।

लीला प्रथमविलास द्वितिय भाषत कवि बुधवर।
तृतिय कहत विक्षिप्त चौथ विभ्रमहवरनकर ॥
किलकिंचित कहि बान ललित गावतहैं षष्टम।
सप्तम मोटाजान कहत विध यों कहि अष्टम ॥
इमि भनत कुवँर अस्कंद गिरि, नवम विहत
मन आनिये। पुनि रस शृँगारके भाव विच दशम
कुट्टमित जानिये ॥ ६५० ॥

लीला लक्षण–दोहा।

प्रीतमके भूषन वसन, आकृत रचै जु बाल।
तियके पिय अपने सजै, लीला हाव रसाल॥

लीला उदाहरण–कवित्त।

अति मदमाते रस रंगमें विनोद भरे,
दोहुँनपै दोहुँनकी प्रीति अति भारी है।
वोढ़ो पटपीत प्यारी उनहूँ विचारो मन,
सारी जरतारीकी किनारी दार धारी है॥
भनत असकंद ऐसो चरित विचित्र करै,
मोहिं मन होत एक एकनपै वारी है।
कीरति कुमारी सम राजत विहारीसम,
कीरति कुमारी इमि राजत विहारी है॥६५२॥

दोहा।

चितचकोर छाके रहैं, दोहुँनके मुख चंद।
माते राचे प्रेममें, श्यामा श्याम अनंद॥ ६५३॥
सजत पाम विहसत वदन, मुरलीधर अधरान।

राधा श्याम सुनावही, मधुर माधुरी तान ॥६५४॥

विलास लक्षण-दोहा।

नानाहाव सुभाव करि, लेइ रजायसु नाह।
सोई हावविलास यह, वरणत सुकविसराह॥६५५॥

विलासका उदाहरण-सवैया।

वोढ़ि दुकूल कसी कुचकंचुकी वेनी गुही शुभ मालती फूलन। त्यों असकंद जवाहिरके सजि भूषण अंग बने मखतूलन॥ हंस गयंद लजाव-तही चली, श्यामके संग हिंडोलना झूलन। टोहि लियो हियरा हँसिके मन मोहिलियो दृग सैनकी हूलन ॥ ६५६ ॥

दोहा।

देखतही दृगजोरि त्रिय, कीन्ह्यो वचन विलास।
हौं झूलन आई इतै, श्याम तिहारे पास॥ ६५७॥

पुनर्यथा-कवित्त।

विमल प्रकाश रूप रदन विशाल सोहैं,

लखत कलानिधि निज आभाकमतसे ।
अमल कपोल सोहै दुति महताबकैसी,
नैन मनौ खंजन छके हैं मदमतसे ॥
भनत अस्कंद यों अनंद नंद नंदनके,
रदन अनूप वीज दाडिम समतसे ।
वारी रही कौन गुण भाषत सु आज तेरे,
देख करकंज भौंर भूलत रमतसे ॥ ६५८ ॥

दोहा ।

तुव अलि मृदु मुसक्यानमें, छबि दरशतहै ऐन ।
श्याम सनेही मद भरे, अधिक रसीले नैन॥६५९॥

विक्षिप्त लक्षण—दोहा ।

थोरेही शृंगारमें, जो अनूप दरशाइ ।
ताहि विक्षिप्त सुहाव कहि, वरणत कवि सुख पाइ ॥

विक्षिप्तका उदाहरण—कवित्त ।

चंद्रवत आनन यों कौतुक अनूप कियो,
तारागण गोलबिंब रंगसों बधायो है ।

कैधौं मन भरिवेको मित्रन चकोरनको,
यंत्रवत प्रेम हिय हुलसि बढ़ायो है ॥
भनै अस्कंद किधौं गुरुजन बनायो याहि,
हां अरु नहींको गुणसागर पढ़ायो है ।
मदन महीप आज अधर बसो है किधौं,
लटकनछत्र वीर अटक चढ़ायो है॥ ६६१॥

दोहा ।

मदन नृपति अधरन बस्यो, रति सलाह करि ऐन।
नथ डाँडी लटकन मनो, छत्र चढ़ायो नैन ॥

विभ्रमलक्षण–दोहा ।

उलटे भूषण वसन जहँ, और कामको और ।
हरबराइ विभ्रम कहैं, जे कविता शिरमौर॥६६०२॥

विभ्रमका उदाहरण–कबित्त ।

काहू सखी आइ कह्यो आये श्याम याहीमग
सुनत तरंग उठी नेहकी लहरिकै ।
तुरत मनोज बढ़िआयो अंग अंगनमें,

हियेमें रहीना मति नेक ढूँढ़ हारिकै ॥
भनत अरुकंद साजि वेंदाको करण मध्य,
आपने तौ जान भली भाँति सों सिहारिकै ।
दौरि चली देखनको कंचुकी कँधापै डारि,
पग अँगुरीन बीच आरसी पहिरिकै ॥६६४॥

दोहा ।

कर पहुँची पगमें सजी, पग जेहर कर साज ।
आतुर है इहिविधि गई देखनको ब्रजराज ॥

किलकिंचित् लक्षण-दोहा ।

क्रोध हास श्रम त्रास रस, हरष गर्भ अभिलास ।
एकवारही होतहै, किलकिंचित इमि भाष ॥ ६६६ ॥

किलकिंचित्का उदाहरण-

कवित्त ।

हर्षित हँसत गई देखन सुमन वाटी,
रूप मदमाती सुनि वतियाँ सहेलीकी ।
ह्याँही लखि मदन उमंग बढ़ी अंगनमें,

श्रम सों कलीहीं लागी तोड़न चमेलीकी॥
भनत अस्कंद चोप चढ़ नँदनंद आइ,
कर गहि चाही रीति सरस अकेलीकी।
रोष करि झझक छुड़ाइ डर मान हियो,
धरकन लाग्यो तनी छतियाँ नवेलीकी॥६६७॥

दोहा।

छुवत रोषकर हरष हिय, डरवश श्रम तनु छाइ।
देख आपनी ओर कहि, सरस दृगन मुसक्याइ॥

ललित लक्षण-दोहा।

चलन आभरण अंग छवि, सरस चितौन बखान।
ललित हाव तासों कहत, कवि पंडित बुधवान॥

ललितका उदाहरण-कवित्त।

जटित जवाहिर मणि किरण सुदीप्तवान,
विधनै बनाइ रचे सुंदर सुढारकै।
राजत कपोलनमें छाजत छबीली छवि,
लाजत तिमिर गति भाजत निहारकै॥

भनत अस्कंद ज्यों गयंद मतवारो चलै,
त्योंही पग धर्त बाल मगमें सिहारकै ।
कारण विशाल तामें शोभित करणफूल,
नैन अरविंद रहे तरन विचारकै ॥ ६७० ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

जात चली वृंदावन मगमें नवेली बाल,
चकित चकोर भये अधिक करे हितै ।
छार मलै तनुमें सुभौंर दौर दौर पग,
पंकज उठाइदेत महिको जितै रितै ॥
भनत अस्कंद तैसे नासिका विलोकै कीर,
कुंजकी लतान में न जानिये दुरे कितै ।
स्वच्छ सह अच्छताके मुखकी प्रभाके लखे,
चंद्रमें छिपानी जात चाँदनी चितै चितै ॥

दोहा ।

मिलन चली नँदनंदको, ह्वैकै अधिक अनंद ।
लखि आनन दुति चौगुनी, भई चाँदनी मंद६७२

मोटाइत लक्षण–दोहा ।

प्रथम बात बिगरत कछू, पुनि मिलापकी चाह ।
होत भावती कथा सुनि, मोटाइत कहि ताह ॥

मोटाइतका उदाहरण–सवैया ।

एक समै रसहास रहंसमें, कोउ सखी सुनह्वै-
रही त्यारी । सो सुनि बोल मयूरनके, पिकके
घनघोर घटा लखि कारी ॥ धीरज नेक धऱ्यो
न हिये, असकंद भनै रसरीति विचारी ।भाँवरीसी
भरै देखनको छबि, श्यामकी साँवरी कुंजन प्यारी॥

पुनर्यथा–सवैया ।

जबते सुनो छैल छबीलो वहै, तबते या दशा
सुनौ ताकी रहै । रहै ध्यान धरे निशिवासर
श्याम, सनेहकी चाह सदाकी रहै ॥ अस्कंद
भनै वही बैननमें, अरु नैननमें वही झाकी रहै ।
चितमें जियमें तनमें मनमें मृदुमूरति मोहनी
छाकी रहै ॥ ६७८ ॥

दोहा ।

परयो आन ऊपर सुने, श्याम काम छबिजाल
हिय हरषत पुलकित वदन, मिलन चाह करिबाल

बिब्बोक लक्षण दोहा ।

करै निरादर पीवको, त्रियकर हृदय गुमान
ताहि कहत बिब्बोकहैं, नृप अस्कंद बखान ।।

बिब्बोकका उदाहरण--सवैया ।

आये इतै अधरान धरे यह, बाँसकी बाँसुरीमे कछू गावत । मोहिं सुनाय रिझाइबेको चित चोप चढ़े यह प्रेम बढ़ावत । त्यों अस्कंद भनै रसके वश में कछू तो हिये लाज न आवत । मैं वृषभानुकी हौं तनया, तू अहीरको पूत जो गाय चरावत ॥ ६७८ ॥

दोहा ।

तमक बजावत बाँसुरी, रस बरसावत आन ।
जानत जात न आपनी, हमसों करत सयान ॥

विहतलक्षण–दोहा ।

लाज विवश त्रिय पीवसों, जो कछु वैन कहैन ।
पूरण अभिलाषान सों, विहत हाव कहि ऐन ॥

विहतका उदाहरण–कवित्त ।

बैठी मणिमंदिरमें नव ब्रज बाल जहां,
आये नँदलाल देखि हियमें सुहरषात ।
लाजवश येकहू न आये कहि वैन भई,
छुवत छराको छोर अतिही प्रसन्न गात ॥
भनत अस्कंद बढ़ी मैनकी तरंगनमें,
परशत अंग पट घूँघट उघरजात ।
ऊपर परत डीठि तनु घनश्यामजूके,
अचरज विशेष चंचलासी चमक जात ६८१॥

दोहा ।

पिय परशत तनु मनहि मन, हरषत कहत न वैन ।
वदन विलोकत चतुरई, करकर बाँके नैन॥६८२॥

कुट्टमित लक्षण-दोहा ।

सुखमें दुख झुठ रोषको, दरशावत जो भाव ।
पियके मिल तनुमें अली, सुई कुट्टमित हाव ॥

कुट्टमितका उदाहरण-कवित्त ।

बैठी राजमंदिरमें राजत किशोरी भोरी,
बैसवर थोरी हरि आयो करि हेतहै ।
लेत गलबाहीं कढ़ै मुखते सुनाहीं नाहीं,
पट करि वोट चाह चुंबन न देतहै ॥
भनत अस्कंद दोऊ करसों दुरावै कुच,
आनँद बढ़ावै नेह रसके समेतहै ।
कछु झझकारत सुनैन भरि कंज ऐसे,
छलबल लालबाल वशकरि लेतहै ॥ ६८४ ॥

दोहा ।

मुख फेरत हेरत हरै, गरे लगावत लाल ।
मिलत नेह दूनो करत, नाहीं करत रसाल ६८५॥

हेला लक्षण-दोहा ।

पियसों करै विलास जो, बाल ढिठाई संग ।
हेला हाव सुग्यारहौ, नेही मदन तरंग ॥ ६८६ ॥

हेलाका उदाहरण-सवैया ।

पीतपटी लकुटी लई छीन, सु रासमें श्यामहि नारि बनावती । अंजन आँजि उढाइकै चूनरी, नैन नचाइ करै मनभावती ॥ त्यों अस्कंद भनै मुसक्याइ, रिझाइकै गेहकी राह बतावती । भेद न पावत शेष महेश गुवालिन ताहिये नाच नचावती ॥ ६८७ ॥

दोहा ।

नवलकिशोरी लालको, केते नाच नचाइ ।
दौर दौर छोंडत गहत, हँसत हँसावत जाइ ६८८॥

बोधक लक्षण-दोहा ।

पिय त्रिय बोधित भाव कछु, करत क्रिया जहँठान ।

सो बोधक लक्षण कहे, द्वादश हाव बखान ६८९।

बोधकका उदाहरण--सवैया।

दुओगये झूलिबेको नवकुंज हिंडोलनापैचढ़
एकही संग।घटावत पैग बढ़ावत में मिलिजात दुहू
नके अंगसों अंग ॥ भनै अस्कंद बढ़ै हियमें, रति
प्रेमपयोनिध कैसी तरंग । त्रियामुखते वनमाल
गहो, पिय चुंबन लेत झरै रसरंग ॥ ६९० ॥

दोहा।

लगत पवन पटउडतकुच,खुलत गहत लखिलाल।
पकरलेत वनमाल तब, टोरनको ब्रजबाल ६९१॥

इति श्रीशिवसुत षोडशनाम प्रताप अनुभारतीज्ञः श्रीमन्महा-
राजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरि विरचिते रसमोदकाभिधे
काव्ये श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनरसिक हृदयानं-
ददायने अनुभावप्रकरणं तृतीयोल्लासः ॥ ३ ॥

चतुर्थोल्लासः ४.



अथ संचारी भाव–दोहा।

थायीभावनमें रहत, रसथिर घूटत आव ।
नौऊ रसमें संचरत, सो संचारी भाव ॥ ६१२ ॥

दोहा ।

याते प्रथमहि कहतहौं, संचारिनके भेद ।
इनके पाछू वरणिहौं, थायी भाव निवेद ६१३ ॥

संचारिनके नाम–छंद ।

निरवेद कहत गालनि शंका औ असूया जानिये।
मद श्रमहु धृत आलस्य और विषाद यों मति मानिये
चिंता सु मोह सुस्वप्न और विबोध स्मृतिकोकहै ।
पुनि कहि अमर्ष सुगर्व उतसुक तासु अविहित्तहि
कहै ॥ कहि दीनता अरु हरष वीडा उग्रता निद्रा
सुनो । अरु व्याधि मरण न अपसमारहि गाइ

आवे गहि गुनो॥ पुनि त्रास अरु उनमाद जड़ता चपलता वेतर्कहै । ये नामसंचारनिके तेंतीसहू इहिविधि कहै ॥ ६९४ ॥

निर्वेदन लक्षण-दोहा ।

विपति ईरषा ज्ञान हिय, खेद पाइ जो होत ।
निजनिंदा फिर उनहिते, निर्वेदा सु उदोत॥६९५॥
निर्वेदहिते भाव ये, प्रगट होइ निजगात ।
अश्रु ये वरण दीनता, अति उसाँसकी बात ॥

निर्वेदका उदाहरण-सवैया ।

छोड़ि सबै हरिकी चरचा यह नेहकी राह निबाह रही मैं। सो अब एकहू आई न काम वृथा मतिमंद भईरी सही मैं ॥ त्यों अस्कंद भनै मनके वश, गेहकी लाज न एक गही मैं । पीरी परी नहीं सीरी परी कोऊ, सीरी परी जो हिये न चही मैं ॥ ६९७ ॥

दोहा ।

पगी प्रेमवश में रही, छोड़ सबै गृहकाज ।
भजे न गोकुलचंदको, अब आई हिय लाज ॥

ग्लानि लक्षण--दोहा ।

भूख प्यास रति श्रमहुते, विहवल अंग सुभाव ॥
होत कंप सुरभंगहू, ये गलानिके भाव ॥६९९ ॥

ग्लानिका उदाहरण--कवित्त ।

रति विपरीत रची मोहन विहारी संग,
वारी मतवारी रतकारीही ललकहै ।
भनत स्कंद केलि कलित कलान ठान,
बैठी रतमान आन कंपत पलकहै ॥
टूटे हिय हार वार विथुरे विराजतहैं,
शिथिल सुगात भये आँचल पुलकहै ।
दरश रसीले परे नेहमें रँगीले ऐन,
नैनन झलक पंचशरकी छलकहै ॥ ७०० ॥

दोहा ।

थकित भई रतिरंगमें, प्यारी कंपित गात
आँगनमें बैठी कढ़ै, मुखते लहरत वात ॥७०१

शंकालक्षण–दोहा ।

दुवन क्रूरता मानिकै, अपनीही अनरीत
ताहीते शोचत हिये, सोशंकाकी प्रीत ॥ ७०२ ।

शंकाका उदाहरण–सवैया ।

टोरिगयो हियको हरवा, अरु मोरिगये
नथकी नथगूंझहै । खोरगयो नवसेज बनी, औ
विथोरिगयो यह माँग अबूझहै ॥ त्यों असकंव
भनै यों दशा, लखि का कहौगी कोऊ कारण बूझ
है। छोर छराके छुटे आँगिया फटी टूटी तनं
ननदीको न सूझहै ॥ ७०३ ॥

दोहा ।

नींदभरी अँखियाँ लखै, तैसे अरुण कपोल
कौन बूझिहै ज्वाब यह, कहा देउगी बोल॥७०४।

असूयालक्षण-दोहा ।

जो सुख लहने औरको, हियमें येही ठान ।
दुःख दुष्टता क्रोध कर, यही असूयाजान ॥७०५॥

सवैया ।

परी है धुन कानन बाँसुरीकी, विरहानल झूकनसों भरी है । भरी है विषसे या विसासिनरी अधरान धरी तिहको हरी है ॥ हरी है वश याके फिरै वनमें, अस्कंद भनै यह का करी है । करी है जिन प्रीति सु बोछिनकी, तिन प्रीतम सों हमैं का परीहै ॥ ७०६ ॥

दोहा ।

कोरनकी येही दशा, अलिलौ देखे कूर ।
रस चाहै जानै हिये, काठ सजीवन मूर ॥७०७॥

मद लक्षण-दोहा ।

कै मिहदी के पानके, धन यौवन के रूप ।
भाव लहै मदको तहां, सो मद कहत अनूप ॥

मद उदाहरण-कवित्त।

दंपति सुरति रची विरह अनंद भरे,
नेहकी तरंगनके बढ़त तरारेहैं।
झुकि झुकि झूम रहे अधर सुधारसको,
अति मदमाते करैं लाजहू किनारेहैं॥
भनत अस्कंद ध्यान एकनको एक धरै,
श्यामा उर श्याम श्याम श्यामा उर धारेहैं।
पीवत छकेहैं छवि यकटक देखि देखि,
रसकी गुलेगुलाब हुइ मतवारेहैं॥ ७०१॥

पुनर्यथा-कवित्त।

बनि बनि बैठे मतवारे रसमंदिरमें,
झूमत झुकत करैं बातन गहरको।
छिन छिन चोप चाह चौगुनी चढ़त बाल,
मिहदी रचाये पानबीरी दई हरको॥
भनत अस्कंद तैसी युगल किशोर वैस,
चतुर चवाइनके छोड़छाड़ डरको।

रूपमद छाके दुवो रतकी उमंग ठान,
प्यारी लखै आनन पियारो लखै करको ॥

दोहा ।

डीठ तार कंचन अगिन, मदन सुहाग सनेह ।
जुरत जुरी छूटै न छबि, मद पीवत कर तेह ७११॥

श्रम लक्षण-दोहा ।

कै रत कै गतते हिये, खेद होइ श्रम जान ।
ताहीमें द्वै भाव ये, स्वेद उसासहिमान ॥ ७१२ ॥

श्रमका उदाहरण-सवैया

खेलिकै आइ थकी थिर ह्वै परयंकपै पौढ़िरही सुखसानसे । प्रीतम आइ जगाइदियो सुख, बैन कढ़े न कछू अलसानसे ॥ त्यों असकंद लई भरि अंक, हँसाइ रिझाइ कछूक सयानसे । लेत उसास मयंकमुखी बढ़ि, स्वेदके बुंद चुवैं मुकतानसे ॥ ७१३ ॥

दोहा

स्वेद गिरत बाढ़ि वदनते, अलकन ऊपर बूंद ।
मनहुँ कंजते झरत है, मधुकर हित मकरंद॥७१४॥

धृत लक्षण--दोहा ।

साहसते कै ज्ञानते, कै सुसंगते वित्त ।
धरै धीरता धृत कहैं, जे कवि रचत कवित्त॥७१५॥

धृतका उदाहरण--सवैया ।

धीरज राख हिये मन तू, विन धीरज काम न
एक सरै है । काहु दिना मनमोहनजू फिर, मेरहि
द्वार सुवीण बजै है । त्यों असकंद भनै यह रीति
सुनीति बने पै कुनीति नरैहै॥ जाने दियो सुखमे
दुखहै, सु वही दुखमें सुख वेगाहि दैहै ॥ ७१६ ॥

पुनर्यथा--कवित्त ।

बाँधे पट पीत मोरमुकुट सवाँरे शीश,
डारे वनमाल आनि बाँसुरी बजावैंगे ।

झुकि झुकि श्याम यही सघन लताननमें,
मधुर मनोहर सुतान रस गावैंगे ॥
भनत अस्कंद कोक चातक मयूर शोर,
उपवन बाग नदी नदहू सुहावैंगे ।
विधनै रच्यो है जोपै परम सनेह तोपै,
धीरज हिये तू राख वेई दिन आवैंगे॥७१७॥

दोहा।

नेम निबाहत जगतको, रसिकनको सरदार ।
याही ते जग विदित है, नाम जगत आधार॥७१८॥

आलसलक्षण–दोहा।

रतिरणते कै जगनते, जो उपजै अलसान ।
आलस ताहीको कहत, जे कवि सुमति सुजान॥

आलसका उदाहरण–कवित्त।

वृंदावन वीथिनमें रहस मचायो श्याम,
श्यामा अनुराग भरी छबि दरशात है ।
जागी प्रीतिरीतिमें छकी है छबि अंगनमें,

प्रेमकी तरंगन अनंग सरसत है ॥
भनत अस्कंद सुधानिधिसों वदन देखि,
कुवँर किशोरहो चकोर परशत है।
देह भरी आलससों नेहभरी डीठि लसै,
नींदभरी आँखिनसों रस बरसत है॥ ७२०॥

दोहा।

पिय परशत तनु हरषमन, अतिहि प्रफुल्लित गात।
नींद भरी अँखियानसों, प्यारी कछु अलसात॥

विषाद लक्षण-दोहा।

चलै न एक उपाइ जहँ, शोच बढ़ै हिय आन।
सो विषाद भाषत रसिक, जे कवि बुद्धि निधान॥

विषादका उदाहरण-सवैया।

ब्रजराजके काज चली सजिकै, मिलिबेको सहेटमें ज्यों घनहै। नदिया बढ़ी पंक भई मगमे झलाझोकन सों बरसों घनहै॥ अस्कंद भनै

तरु नीचे खड़ी, हिये शोचत बात कहावन है ।
मनमोहनको मिलिबोहु गयो, ननदीके उराह-
नेको सुनहै ॥ ७२३ ॥

दोहा ।

होत न मन अभिलाष कछु,सुमति कुमति ह्वैजात।
अरे नेह धीरज धरै, विधिसों नहीं बसात ॥७२४॥

पुनर्यथा–सवैया ।

लखौ चारहू ओर दिशा विदिशा, वगरो योव-
संत पसारो किये । पिक मोर चकोर न मानैं
कह्यो, चले आवत भोर दरारे दिये ॥ अस्कंद
भनै तुम ऊधौ सुनौ, किहिभाँति सों धीरज
धारै हिये । हम तौ ब्रजकी वनवासी भई वे अनंद
भये इक दासी लिये ॥ ७२५ ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

नवब्रजबाल नंदलालको लेआई गहि,
यशुदा हमारे चोर माखन चुरायो इन ।

भनत अस्कंद सुनि दौरि आई मंदिरते,
ताही क्षण रूपनाह ग्वालनीको धरो तिन॥
बूझत कहाँहै कौन ठामहै कितैहै गयो,
कौनको गहेहै कहा तू तोरी बतावे किन।
देखतही वैसही ठगीसी रही ठाढ़ी ठौर,
बोली वह चोर मेरी आंखिन समानो इन७२६

दोहा।

कढत न कौनो यतनसे, देती तुम्हैं दिखाइ।
छिप्यो श्याम पुतरीन में, वही साँवरो आइ॥

मति लक्षण—दोहा।

उपजै हिये विचारवर, नीति निगमते आन।
ताही को मति कहतहैं, नृप अस्कंद बखान॥

मतिका उदाहरण—सवैया।

वह दीनदयालु कृपा करिहै, छिन एकको ध्यान सुभारियोना। चितको वशमें करि चोप चढ़ाइ, मनोरथ और सम्हारियोना॥ स्कंद

भनै अपने मनसों, इतनी मति तौ तुम टारियो ना। करियो सब काज भले जगके, इक रामको नाम बिसारियों ना ॥ ७२९ ॥

दोहा।

रसना रस चाख्यो बहुत, रामनाम रस चाख।
चाख चाख विधनै करे, वेद भागवत शाख७३०॥

चिंता लक्षण-दोहा।

चिंता कौनिहु भाँतिकी, अपने चितमें होत।
ताहीको चिंता कहत, रसिक जननके गोत॥

चिंताका उदाहरण-कवित्त।

गोकुलकी गैल में बनायो घर ऊंचो करि,
गुरुजन लोगनको नाम कहा धरिये।
आवै इत बाँसुरी बजावै मृदुताननसों,
कानन सों रहै बची जौलौं हिय डरिये ॥
भनत अस्कंद चोप चौगुनी चढ़ावै अंग,
मदन बढ़ावै क्यों न नेह बश परिये।

प्रीतम न आवै रैनि कितहूँ बितावै श्याम,
सखिन मिलावै सो उपाइ कौन करिये॥७३२॥

दोहा ।

टरत न कौनौ भाँतिसों, चलत न अपनी नीत ।
मोको जानी जातहै, होत साँवरो मीत ॥७३३॥

मोह लक्षण--दोहा ।

जबै आपनी देहको, ज्ञान आपुही जाइ ।
चिंता अरु दुख विरहको, मोह कहत कविराइ ॥

मोहका उदाहरण—सवैया ।

मची फाग लली सँग खेलैं सबै, वहाँ आगयो श्याम कहूँ वनसों । तहाँ नैननही की घलाघलीमें नजरैं जुरी दोहुँनकी तनसों । स्कंद भनै सुधि नेक रही न खडे रहे दोउ सँकोचनसों । मनमोहन मोहि प्रियासों रहे, प्रिया मोहिरही मनमोहनसों ॥ ७३५ ॥

दोहा ।

लागी लगन सनेहकी, मदन भयो बिचवान ।
मोहिगये मन दुहुँनके, डीठ करी पहिचान ७३६

स्वप्नलक्षण-दोहा ।

जो सोवत सुखनींदमें, स्वप्न विलोकत ऐन ।
सोई स्वप्न विचार कर, कवि भाषत मन चैन ॥

स्वप्नउदाहरण-सवैया ।

प्यारी परी परयंकपै सोवति, रूप झलाझलकी झलकैहै । देखरही मनमोहनको, अनुसारतबैन मलै पलकैहै ॥ त्यों अस्कंद भनै पट वोढ़त, वोट करै छतियां ललकैहै । चौंक परी सखी भेंटतहीं, मुखचंदपै छूटपरीं अलकैहै ७३८

दोहा ।

जगत कहत सखियानसों, सुख सपनेकी बात ।
मेरो मन हरिने लियो, हिय खाली अलसात ७३९

विबोध लक्षण-दोहा ।

जगत नींद श्रम खोइकै, जो हियमें अलसात ।
सोविबोध वर्णत सुकवि, अतिहीं प्रफुलित गात ॥

विबोधका उदाहरण-कवित्त ।

प्रातसमै प्यारी उठि बैठी परयंकही पै,
नींदभरी आँखिनसों हिय अलसाइकै ।
पीक भरी पलकैं त्यों अमल कपोलनपै,
काजरकी रेख फबी अतिसुख पाइकै ॥
झाँकत झरोखे छूटि अलक छिपायो मुख,
भनत अस्कंद लियो कर सुरझाइकै ।
संधि पाइ मानौ शशि ग्रसित कियोहै राहु,
तजिकै विरोध लीन्ह्यों कमल छुड़ाइकै ॥

दोहा ।

लपटानी पियसों अली, मनमानी जगभोर ।
ज्यों डूबत ऐंचत गहत, पावत चंद चकोर ७४२

स्मृतिलक्षण–दोहा ।

सुमिरण बीती बातको, करत हियेमें जौन ।
ताहीको स्मृति कहत, जे कवि रसके भौन ७४३

स्मृतिका उदाहरण–कवित्त ।

बाँसुरी बजाइबो रिझाइबो सुगाइबोई,
नेह सरसाइबो निकुंज सुखसारीके ।
रहस रसमंडलमें नाचिबो नचाइबोरी,
खेलिबो खिलाइबो अनंद अधिकारीके ॥
भनत अस्कंद मढ़ी चित्तमें हमेश रहै,
प्रीतिकी प्रतीतिवारी छबि मतवारीके ।
भूलत न एकोक्षण झूलत सदाहीरहै,
नैननमें मनमें चारित्र गिरिधारीके ॥ ७४४ ॥

दोहा ।

झुकि झुकि कदमलतान तर, वंशी धरि अधरान ।
कान्ह बजावत तान जब, कोनमिलैतजि मान ॥

पुनर्यथा–सवैया।

लाल गुलाल वलाहकते, वरसै झरी झोंक
केसर रंगकी। त्यों अस्कंद छटा छविकी, चमकै
चपलासी मनोहर अंगकी॥ लै गलबाँही अनं
कियो, वरणौं का दशा वह मैन उमंगकी। भूलै
नहींहमको कबहूँ,वह फागकी खेलन साँवरे संगकी

दोहा।

का फूलतती केतकी, का गुंजतते भौंर
का झूलतते मिलि सबै, अबका कहिये और

अमर्ष लक्षण–दोहा।

दूजे को अभिमान जब, मेटब चाहत ऐन
सो अमर्ष वरणत सुकवि, करत हिये महँ चैन

अमर्षकाउदाहरण–सवैया।

कर कंजन रंजन खंजनके मन, अंजन नै
लगावतिहै। मुख खोलति बोलति वैन सुधासम
ोकिल चंद लजावतिहै॥ स्कंद भनै अलिव

अवली, अलकैं छुटकाइ दिखावतिहै । मद भंजन
सौतिनके हियको, पियको तिय बोलि पठावतिहै ॥

दोहा ।

नथ पाहिरत लखि कीर तनु, मेटनको अभिमान ।
पान खाइ फल बिंबपै, फेंकत पीक सुजान ॥७८०॥

गर्वलक्षण-दोहा ।

जहँ बल विद्यारूपते, प्रगट गुमान दिखाइ ।
गर्व कहत ताको सुकवि, नेहहिये सरसाइ ॥७८१॥

गर्वका उदाहरण-कवित्त ।

पकरलिआऊंना गुविंदको निकुंजनते,
इन कर कंजन ते छूटिबो छुड़ाऊँना ।
चरित दिखाऊंना अनेक बहुभाँतिनके,
वैननते रसकी उमंग जो बढ़ाऊंना ॥
भनत अस्कंद नैन सैनन वशी करके,
अलकन बीच ईंच मन उरझाऊंना ।

मेघनके मोरनके चंदके चकोरनके,
गुणना कराऊं तौ मैं ग्वालिन कहाऊंना॥

दोहा।

मेरेही आये इतै, चखन चकोरन कीन
प्रफुलित भई कमोदनी, पंकज भये कलीन७८३।

उत्सुकताका लक्षण—दोहा।

जहाँ मित्रके मिलनको, सहि नहिं सकतविलंब
उत्सुकता तासों कहत, जे कविमति अवलंब।

उत्सुकताका उदाहरण—कवित्त।

ज्योंहीं रविमंडल छिप्योहै मेरुमंडल में,
त्योंहीं मन अधिक अनंद भयो प्यारीको।
मिलन चलीहै अति आतुर उमंग ठान,
भूलगये भूषण मनोज मतवारीको॥
भनत अस्कंद मोर सुवश चकोर करैं,
वदन प्रभाते मंद चंद उजियारीको।
कुंजनविहारीको मिलीहै अनुराग वारी॥

कौतुक कलारी चंचलासी घटा कारीको ७८८

दोहा ।

मिलन चली आतुर अली, मग पग धरत न धीर ।
जैसे कड़ी कमान ते, छूट जातहै तीर ७८६ ॥

अविहित लक्षण--दोहा ।

चतुराई करि आपनी, दशा दुरावति जौन ।
भाव वतावति ताप तजि,अविहित कहिये तौन ॥

उदाहरण--सवैया ।

ज्योंहीं गई चलि कुंजनमें, लखि वोलकुहे कुहे शोर छयेहैं । चोंच चलाई कपोलनपै, मुख फेरत वेणी विथोर गयेहैं॥त्यों अस्कंद भनै दशा और कहै दृग आवत ये उनयेहैं । भागत भाग वची हौ भटू, वन लागन मोर चकोर भयेहैं ॥

दोहा ।

त्रिय पिय लखत मनोजवश, ठाढ़ी कंपित गात ।
बूझे सिसकत दाबि कुच, कहै शीत दरशात ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

ऐसी घनी घमसान मची, अधाधुंध गुलालकी
धूमर छाई । हौंहूं गई धँसि ज्योंहीं वहाँ बिछले
पग रंगमें नीचही आई ॥ त्यों अस्कंद भनै सरा
घोर, भई मनमें अतिही अकुलाई । का कहौं आज
दबीती तहां, पर मोहन वेगहीं मोहिं उठाई ७६० ।

दोहा ।

सुधि आई पियकी तिये, भरिलाई युग नैन ।
कहत सखिन सों देखियो, कहूँ दव्यो त्रसरेन ७६१ ।

दीनता लक्षण–दोहा ।

दीन परै जो विरहते, या दुखहीते कोइ ।
ताहि रसिक मन मथन कर, कहैं दीनता सोइ ।

दीनताका उदाहरण–सवैया ।

आग लगावत है तनुमें, विरहानलकी चित
चिंत घनेरी । चोप चढ़ाइ चकोरनको, मुखफेर
करै फिर रैनि अँधेरी ॥ त्यों अस्कंद भनै कछु

एक, उपाय चलै न बनै सुन मेरी। जौलौं विदे-
शते आवै न कंत, हहा विधि मेटिदे चंदउजेरी ॥

दोहा।

हिमकर अमर विशेषहो, सुधारूप सरसाइ ।
पै न काहु वे मारिकै, फिर तुम दियो जिवाइ ॥

पुनर्यथा–सवैया।

प्राणनते हियते मनते सखि, तोसों न राखत
नेक जुदाई। तापै इतेक करी विनती मैं, हहालौं
कहा पै दया नहिं आई ॥ येती कठोरता मोसों
कहा, अस्कंद भनै तुम्हैं कौन सिखाई। वा
मुरली मुरलीधरकी, मिस कौनहूं एकहूबार
न लाई ॥ ७६५ ॥

दोहा।

तेरेई करमें रहत, मेरे चितकी बात ।
पै न करत मनकी कहूँ, बेदरदिन दरशात ७६६ ॥

गरजी अरजी करत है, वरजी रहत न नेक ।
परघर रैनि विताइबो,श्यामत नौ यह टेक॥७६७॥

हर्षलक्षण–दोहा ।

होइ अधिक आनंद हिय, जहाँ कौनहूं भाँति ।
प्रफुलित गात हरष यही, वरणो कविन जमाति॥

हर्षका उदाहरण–कवित्त ।

सरस रँगीली सरसीली नेह रीतनकी,
वंशी धुनि कान परी चोप चटकोरकी ।
मुदित भयोहै मुख उदित भयो ज्यों चंद,
अधिक अनंद भरी प्रीति उर धारेकी ॥
भनत अस्कंद हिये हरषित गात भई,
आवन विचार कर प्रीतिपटवारेकी ।
हगन लसीहै अंग अंगन गसी है आइ,
चित्तमें वसीहै मुसक्यान प्राणप्यारेकी ॥

दोहा ।

सजन सजन हित ही लगी, तनु शृँगार व्रजवाल

मजन लजन आपुहि लगी, आये तिम नँदलाल ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

बैठी जहाँ हिरकी खिरकी, निरखे अपनो ब्रजबाल हियोहै । पल्लव फूल गुलाबके संग, सुमालिन मौर रसाल दियोहै ॥ देखतही अस्कंद भनै, अति आतुरसों करि हर्ष लियोहै । दूनी बढ़ी दुति आननकी, मनौ पूरण चंद प्रकाश कियो है ॥ ७७१ ॥

दोहा ।

रविको छिपत कुमोदनी, ज्यों पावत सुख चैन ।
त्यों हरषित प्यारी भई, लखि अँधियारी रैन ॥

वीड़ा लक्षण–दोहा ।

लाज हिये अतिही बढ़ै, कौनहु कारण पाइ ।
वीड़ा ताहि वखानहीं, जे प्रवीण कविराइ ॥

वीड़ा उदाहरण–कबित्त ।

कुंदनते सरस अंग दरशत भूषण हैं,

जटित जवाहिरके बेंदालाल भालहै ।
अलक विरूंध मोती जाल सों कपोलनपै,
जरीकी किनारी श्वेतसारी वोढ़ी बालहै ॥
भनत अस्कंद नंदलालको विलोकतहीं,
लाजवश घूँघट कर वदन रसालहै ।
मानौ मारतंड मंड उतर अकाशहीते,
तारन समेत चंद गंगमें विशालहै ॥ ७७४ ॥

दोहा।

नैन मिलाय रिझायले, कत लजाय करि चाह।
क्षणक छबीलेको छुवन, देत नाहिनै छाँह ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

तुमसी नहीं देखी कहूँ अबला, पै अनीति लखे कहि आवतहै । मिलि मोहनसों रतिकी बतियाँ, करि क्यों नहीं चोप चढ़ावतहै॥ अस्कंद भनै यह यौवन रंग, सदा सखि जोर जनावतहै। पर प्रीति प्रतीतिमें लाज कहा, जो घरी फिरि फेर न आवतहै ॥ ७७६ ॥

दोहा ।

सुनत सहेलिनसों जबै, पिय मिलिबेकी बान ।
रहत बाल शिरनाइकै, दाबि कपोलन पान ॥

उग्रता लक्षण–दोहा ।

कहत उग्रतातासुको, निरदयपन नहिंहोइ ।
रसग्रंथनमें वरणिकै, कवि कोविद सब कोइ७७८॥

उग्रताका उदाहरण–सवैया ।

बजी है सुनैको सुचेत रहै, यह तीक्षणकामके बाण सजी है। सजी है कहा वश आपनो री, कुलकानि तौ याही सनेह तजी है ॥ तजी है यहू नेहसे वसके, असकंद भनै रसरंग मजी है । मजी है कठोर रजी विषसों, बिसवासिन बाँसुरी फेर बजी है ॥ ७७९ ॥

दोहा ।

रे विसवासी भौंर तू, इत कत आवत दौर ।
क्यों रोवतसों फिरत है, मोंहिं रुवावत और७८०॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

आवे घनघोर जोर दिशन दबाये दौर,
धुरवा धुकार करै नीर वर झिरकै ।
चातक चकोर मोर दादुर मचाये शोर,
चंचला चमंकिरहै नेकहू ना थिरकै ॥
भनै असकंद करी विधिने कठोरताई,
पावस पठाई रहै कैसे धीर धरकै ।
बोलै अधरात जात कोकिला कसाइनसी,
कूक देत करत करेजिनकी किरकै ॥७८१ ॥

दोहा ।

मनमानी आनी हिये, करि विदेशमें प्रीत ।
निरदैपन हमसों कियो, अरी साँवरेमीत ॥७८२॥

निद्रालक्षण—दोहा ।

कहत सोइबो सुपनको, सोई निद्रा जान ।
जब अपात नाड़ी चलै, सो कवि करत बखान७८३

निद्राका उदाहरण–कवित्त।

सुमन छरीसी है परीसी परी सोवै बाल,
स्वेदकण जाल वार मुक्ताहल वृंद वृंद ।
मुकुर कपोल गोल अधर अमोल बिंब,
नैन अरविंद वार अलक फणिंद नंद ॥
भनै असकंद वार डारिये निकाई कोटि,
रतिकी लुनाई औ लुनाई उपमा अमंद ।
गातकी गुराई पै ललाई वार कुंदनकी,
मुख प्रतिबिंबपै सुवार वार डारै चंद॥ ७८४॥

दोहा।

बाल परी परयंक पर, सोवत अधिक अनंद ।
कुच पकरत चुम्बन करत, हिय हरषित नँदनंद॥

पुनर्यथा–कवित्त।

कंचनपलँग पाये जडित जवाहिरके,
तापर सुमनसेज साजि मखमलकी ।
सोवति अनंदसों निशंकित मयंकमुखी,

अंग अंग उड़त तरंग परमलकी ॥
भनै असकंद तनु शोभित प्रस्वेद बुंद,
जलज समेत यों प्रभा है कंजदलकी ।
चकित चकोर रहैं मोहि चितचोर रहैं,
मंद भई चाँदनी सुचंद निरमलकी ॥७८६॥

दोहा ।

अमल कपोलनकी प्रभा, कमल अरुणसम जान ।
चञ्चरीक गुंजत फिरैं, पुंज पुंज सुखमान ॥७८७॥

व्याधि लक्षण-दोहा ।

कामविरहते होत जहँ, तनु संतापित आइ ।
व्याधि कहत ताको सुकवि, रसग्रंथनमें गाइ७८८॥

व्याधिका उदाहरण-कवित्त ।

सदन विसेज परी वदन भयो है मंद,
मदन बढ़ाइ ज्वाल अनिल अकूतरी ।
छिनछिन आह रहै तुव चितचाह रहै,
देखतही राह रहै चित्रकैसी पूतरी ॥

भनत अस्कंद वैन चातक सुनैते बाल,
उझक परै है झाक झरफन सूतरी ।
विरह व्यथाकी कथा वरणी न जात मोपै,
लोटिलोटिजात जैसे लोटन कबूतरी ॥७८९॥

दोहा ।

दूनी दूनी बढ़ति है, छिन छिन विरह बलाइ ।
दरश नीर पाये विना, सो अब किमि सियराइ७९०

पुनर्यथा-कवित्त ।

रहत सुप्राण ताके रावरी विलोकै वाट,
सुमन कमान आन हूक सरसत है ।
हिय हहरात लेत विरह उसासहीते,
परत प्रकाश चंद गात झुरसत है ॥
भनत अस्कंद चारु चंदन गुलाबनीर,
अतर गँभीर सीर नाहिं परशत है ।
बरसत मेह जोर झलन झलान तऊ,
वाके गेह ग्रीषमकी ज्वाल दरशत है ॥७९१॥

दोहा ।

वाके विरह वियोगकी, दशा कही नहिं जाइ ।
चंद चाँदनीमें परी, खरी त्रिया बिलळाइ ॥ ७९२ ॥

अपस्मारलक्षण-दोहा ।

श्वास बढ़ै गृहदुःखते, गिरै कंप महिआन ।
फेन कढ़ै मुखते वही, अपस्मारकी बान ॥ ७९३ ॥

अपस्मारका उदाहरण-कवित्त ।

वंशीधर बांसुरी बजावतही जाइ कढ़े,
झाँकत झरोखा रही सूधोही सुभावरी ।
ताहीतन हेर शर ऐसे नैनसैननसों,
भनत अस्कंद भई विकल सुसाँवरी ॥
झूमिगिरी घूमि नैन मुखते सुफेन बहै,
कंपित सुगात बात कहत न बावरी ।
ताक्षणते सेजपै परीहै चित्रकीसीलिखी,
जाक्षणते मूठसी लगीहै डीठरावरी॥७९४॥

दोहा ।

लेत उसाँस घरी घरी, परी विकल अकुलाइ ।
मदनतीर तीखे लगे, घाव न परतलखाइ ॥ ७९५ ॥

पुनर्यथा-सवैया ।

काहू समै वृषभानुकी नंदनी द्वारपै ठाढी हती सुखपाइकै । श्याम कढ़े तितही जुरे नैन लगी हिय डीठ सुबाणसी आइकै ॥ त्यों अस्कंद भनै वशमैनके, चैन परी न रही मुरझाइकै । कंपितगात गिरी महिमें, हियघायलसी मनमें अकुलाइकै ॥ ७९६ ॥

दोहा ।

कहा भयो कैसो भयो, खड़ी कहै ब्रजनार ।
प्रीतिरीति जानै नहीं, कोटिन करै विचार ॥ ७९७

आवेग लक्षण-दोहा ।

चाहत वेग जु नेहते, या डरहीते मान ।
सुकवि कहत आवेगहैं, ताको करत वखान॥७९८॥

आवेगका उदाहरण--सवैया ।

देखी शिषा सखियानकी वान, शृँगार बनाइवेकी मनमानी । बैठि अकेली सँवारत केश लगी हिय चाहकी राह दिखानी ॥ त्यों अस्कंद भनै इतनेमें, सुनी मनभावतेकी मृदुवानी । आरसी वोढ़नी काकई छोड,छुटीननदीके गरे लपटानी ।

दोहा ।

सुनत श्याम मग सखि वचन, लटपटाइ उठि धाइ
अटा चढ़ी झांकतझरफ, चट कपाट खटकाइ ।

पुनर्यथा--कवित्त ।

आज श्याम निकरो अचानक ई मारगहो,
वाँसुरी बजाय गाय मधुर मलारहै ।
कीरतिकिशोरी भोरी भनत अस्कंद भई,
गोकुल के चंदको चकोर अनुहारहै ॥
इत उत देखि चलै मग पग द्वैक रही,
तन मनहीकी सुधिबुधि ना सम्हारहै ।

बोरीहीसी फिरत ठगोरी कर ख्याल लौना,
नंदको ढिठौना पट टोना गयो डारहै ॥ ८०१॥

दोहा ।

उठिधाई सुनि बाँसुरी, आई कुंजन धौर ।
पात पात ढूँढ़त फिरै, सुमनहेतु जिमि भौंर ॥

त्रासलक्षण-दोहा ।

अहित कौनहूते जहाँ, भय विशेष हिय होइ ।
काहूको कितहूँ कछू, त्रास कहावत सोइ ॥ ८०२ ॥

त्रासका उदाहरण-कवित्त ।

बैठी सखियानमें सुमान हिय ठान त्योंहीं,
गरब गुमान भरी भौंहन चढ़ाइकै ।
त्योंही घन घुमड़त उमड़त आये दौरि,
बरसत जोर नीर झलन झपाइकै ॥
भनत अस्कंद भई चंचला चमंक तैसी,
तड़ाकि तड़ाक घोर सुनिउठि धाइकै ।
तजिकै सयान भई अति भइ मान प्यारी,

पियको मिलीहै अंक हियसों लगाइकै॥८०४॥

दोहा।

चतुर चबाइनके डरन, होत दूबरी देह।
मिलि न सकत नँदनंदको, हिय गुरुजनकी तेह॥

पुनर्यथा–कवित्त।

झूलत हिंडोरे नवलाड़ली सखीन मध्य,
प्रफुलित कुंजनमें अधिक अनंदहै।
मोर करैं शोर घनघोर मृदु पौन जोर,
वरसत मेह यों फुहारनके वृंदहै॥
भनत अस्कंद लाल सैनदै बुलायो आइ,
डरवश ज्वाब बाल आवत न छंदहै।
चंद ऐसो वदन विलोकि नँदनंदनको,
ताको भयो तुरत मुखारविंद मंदहै॥८०६॥

दोहा।

मधुर वचन भाष्यो सखी, ये आये घनश्याम।
सडर सुनत ताही हिये, लपटानी वह वाम ८०७

उन्माद लक्षण-दोहा ।

वचन विरथ रोदन हँसन, सुरत भूलिवो जान ।
कहत ताहि उनमादहैं, जे कविजन बुधवान ॥

उन्मादका उदाहरण-सवैया ।

पागी हिये पर पूरण प्रीति सुराधिके लागी रहै धुनि श्यामकी । रोवै हँसै करै आपुही मान सुनैहरमेंहू वही रट नामकी ॥ साजत सेज भनै अस्कंद, सुभेंटै न चीन्हैं सखी निज धामकी । मौन रहै क्षण बोलै कछूक कछूको कछू यों व्यथा बढ़ी कामकी ॥ ८०९ ॥

दोहा ।

यों मंदिर वृषभानुको, इत न कुंज घनश्याम ।
लाज न आवत नेकहू, टेरत लै लै नाम ॥८१०॥

जड़ता लक्षण-दोहा ।

ज्ञान आचरण नामकी, रहै सामरथ नाहि ।
सुने लखे हित औ न हित, कहिये जड़ता ताहि॥

जड़ताका उदाहरण–कवित्त ।

देखनके काज ब्रजराजको नवेली वाम,
ठाढ़ी रही मगमें मृगीसी पल मारैना ।
ताही समै वंशीधर बाँसुरी बजाई आय,
मधुर मलार गाइ लाज उर धारैना ॥
भूली गौन ज्ञान सुधि गेहकी न वाहि कछू,
भनै अस्कंद और कारज विचारैना ।
यकटक टारै नाहिं सखिन निहारै नाहिं,
छूटत छराके छोर एकहू सम्हारैना ॥८१२।

दोहा ।

छबि छाके वाके लगे, दृग अनियारे जोर
दोहुनको दोहू लखैं, जैसे चंद चकोर ॥ ८१३ ।

चपलता लक्षण–दोहा ।

थिर ह्वै अनुरागादितै, रहै न मन इकठाम
चाहै चित आचरणको, सोइ चपलता नाम ।

चपलताका उदाहरण–कवित्त ।

लगन लगीहै हिय मगन मनोज वारी,
सरस विहारी संग चाहत अनंदको ।
भनत अस्कंद रूप रतिकी हरणवारी,
मौज मतवारी छोड़ सब दुखद्वंदको ॥
भौंरनकी अवली निवारत चकोरनकी,
खोलि मुख ढाँप खोलि करि छलछंदको ।
विकल निकुंजनमें ढूँढ़त फिरत ऐसो,
भरमत भौंरि जैसे कंज मकरंदको ॥ ८१५ ॥

दोहा ।

इत उत फिरत मनोजवश, झँकत झरोखन ऐन ।
परी आन पिंजर मनौ, तूती नवल नचैन ८१६॥

वितर्क लक्षण–दोहा ।

कीजै जहाँ विचार मन, उर उपजत संदेह ।
सो विकर्त कविजन कहत, रसग्रंथनके नेह ॥

वितर्कका उदाहरण–कवित्त ।

हौंतौ चलिआई जल यमुना अन्हाइबेको,

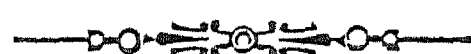
सखिन अकेली भली सूधेही सुभाइहै ।
नजर न आवै वन सघन सिवाइ कछू,
इत चली आवै देख अति सुख पाइहै ॥
भनत अस्कंद झूठी मूठी अनूठी रूठी,
यतन अनेक कौन सुमति बचाइहै ।
अरुण कपोल गोल लोल अति मोल बोल,
नैन सैन मदन उमंगको छिपाइहै ॥ ८१८ ॥

दोहा ।

कितहु रम्यो कैसो भयो, कहाँ गयो किहि ठौर
काननलौं कानन परी, नमन बाँसुरी दौर८१९ ।

इति श्रीशिवसुत षोडशनाम मताप अनुभारतीज्ञः श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरि विरचिते रसमोदकाभिधे काव्ये श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनरासिक हृदयानंददायने अनुभावमकरणं चतुर्थोल्लासः ॥ ४ ॥

पंचमोल्लासः ५.



अथ स्थायीभाव-दोहा ।

उर उपजत अनुकूल रस, ह्वै परिपूरण आइ ।
है सब भावनते शिरे, ते स्थायी भाइ ॥ ८२० ॥
रति कहिये पहिले द्वितिय, हासी तीजे शोक ।
क्रोध कह्यो उत्साह पुनि, भय गलानि अवलोक॥
फिर अचरज अरु खेद कहि, थायी भाव प्रमान ।
नौऊ रसके नौ इतै, वरणे कवि बुधवान ८२२

रतिलक्षण-दोहा ।

पूरण हियमें होत जहँ, प्रीति आपनी चाह ।
सो प्रवीण रति कहतहैं, जे पंडित कविनाह८२३

रतिका उदाहरण-कवित्त ।

इत उत नजरि बचाइ गुरुलोगनकी,
सजत शृँगार अंग भूषण सिहारिकै ।

बढ़त उमंग मैन सरस तरंग रूप,
दरशत प्रीति रीति रसवश डारि कै ॥
चाह करि मिलन मनोरथ हियेमें ठानि,
भनत अस्कंद सेज साजति सुधारिकै ।
साँवरी सलोनी वह मूरति मनोहरकी,
छवि छकिरहत प्रमोदित निहारिकै ॥ ८२४।

दोहा ।

करन लगी उर चाह पिय, धरन लगी मन धीर
परन लगी तीखी नजर, डरन कामकी पीर ।

पुनर्यथा—सवैया ।

सखियानके संग कहूँ कबहूँ, विहसै रसक
बतियाँसो करै । मनमंदिर बैठी अकेली कहूँ
साजिअंग शृँगार प्रमोद भरै ॥ अस्कंद भनै
हियचाह बढ़ी, मिलिबेको करै मन छोड़ि डरै
मनमोहन मूरति मोहनीपै, अँखियानते रंग चुवो
परै ॥ ८२६ ॥

दोहा ।

प्रेमलता पूरण हिये, बोई मदन जमाइ ।
श्यामरूप तुव अमी विन, कहुँ नजाय कुम्हिलाइ ॥

हास लक्षण-दोहा ।

बने बनाये रूप अरु, कछु कछु भीत प्रकास ।
हँसन होत तासों प्रगट, सो कहि हासविलास ॥

हासका उदाहरण-कवित्त ।

धरिकै सखीको रूप एक समै नंदलाल,
निकरे करि ख्याल बरसानेकी खोरीहै ।
तहाँ ललताने बात राधिकै जनाई जाइ,
उन बुलवायो गई भीतरलै भोरीहै ॥
भनत अस्कंद पहिंचानकै विशाखहूने,
पदम बतायो लखै चरित बड़ोरीहै ।
हँसि इठलाइ रहै गोपिनके वृंद वृंद,
मृदु मुसक्याइ रहीकीरति किशोरीहै ॥८२१॥

दोहा।

विहसि कहै कीन्ह्यो भलो, ऐसो चरित विचार।
कौन मारिहै कंसको, तुम तो भये सुनार॥

हासपुनर्यथा-कवित्त।

कीरतिकिशोरी छरीदारको बनाये वेष,
श्याम ढिग आइ कह्यो भौंहनि चढ़ाइकै।
लूटि लूटि खायो दधि कौनके कहेते यहाँ,
मरम न पायो अब पायो वरियाइकै॥
कंसने बुलायो तोहिं भनत अस्कंद लियो,
कर गहि जाइ अलि मृदु मुसक्याइकै।
डर हिय मान कछू फिर पहिंचान प्यारी,
हँसत लगायो अंक अति सुख पाइकै॥८३१॥

दोहा।

मिलत लख्यो सखियानने, विहसि कही यह साँच।
चोपदारकी रीति यह, प्रथम लेतहै लाँच॥८३२॥

शोक लक्षण--दोहा ।

दुख प्रगटै हित हानिते, अहित लाभते आइ ।
सो स्थायीभाव में; शोक कहत कविराइ ॥८३३॥

शोक उदाहरण--कवित्त ।

येतोहै न सोच कछू ऐसे गढ़ लंकहीको,
मेघनाद आदि जोपै निश्चर भयेहैं छार ।
करि पदप्रीति रीति सुमति विचारनते,
पायो जो विभीषणनेराजकाजहीको भार ॥
भनत अस्कंद एक रावण अतंकी विन,
कापर करौंगी साजि अंग अंगन शृँगार ।
हित हिय जानि वैन विरह मंदोदरीके,
करुणानिधान करी करुणा कछू विचार ८३४

दोहा ।

पिय आयो परदेशते, गयो परोसी यार ।
व्यभिचारिण व्याकुल भई,पतिसों कियो विगार॥

क्रोध लक्षण--दोहा ।

शत्रुनके अपमानते, चित विकार कछु होइ ।
अहित हियेके हर्षको, क्रोधकहावत सोइ ८३६॥

क्रोधका उदाहरण--कवित्त ।

आये भृगुराज कान परत अवाज कह्यो,
नृपगण देखयो जमाव जिन जोरयो है ॥
भनत अस्कंद नैन अरुण कराल करि,
ठोकि भुजदंड कंध परशामरोरयो है ॥
फारिडारा तुरत विदारि डारौं अंग अंग,
भूमिपै पछारिडारौं शत्रु वह मोरयो है ।
खोलि खोलि पृथकबताव नतौ मारौं सब,
बोल जड़ जनक पिनाक जिन टोरयो है ॥

दोहा ।

क्रोध देखि भृगुराजको, भागी सकल समाज ।
ज्यों समूह गजराजके, परयो आइ मृगराज ॥

उत्साह लक्षण—दोहा ।

लखत महाभट प्रत सुभट, चोव बढ़ै चितचाह।
सहरष अनहित वीरको, सो कहिये उत्साह ८३८॥

उदाहरण—कवित्त ।

एक समै बाणासुर कैद अनिरुद्धै कियो,
ताही समै कृष्ण द्वारकासे उठिधाये हैं ।
करि करि कोप वीर दौरत दुहूँ दलसे,
प्रबल प्रचंड चोप चोपन चढ़ायेहैं ॥
भनत अस्कंद अनी विचली निशाचरकी,
करुणा कर टेर दीन वचन सुनायेहैं।
लेकर त्रिशूल नन अरुण कराल करें,
हरष हियेमें हर बैल चढ़ि धायेहैं ॥ ८३९ ॥

दोहा ।

दोऊ दल बाजे बजे, हर्ष बढ़े हिय वीर ।
उत कोटिन यादव चमू, इत भूतनकी भीर८४०॥

भयलक्षण–दोहा ।

अपनेही करतव्यते, हिय करिडर अकुलाइ ।
ताहीको भय कहत कवि, लक्षण लक्ष बनाइ ॥

भयका उदाहरण–कवित्त ।

विष रस मूल जान हियमें प्रमोद ठान,
आयोहै सुरेशभेष मुनिगण वानोहै ।
तारापति पीछे होके तमचुर बोल बोल्यो,
गौतम न जानो वह कपट विहानोहै ॥
परशत अंग कोप दरशत देख आये,
भनत अस्कंद देन शाप उर ठानोहै ।
इंद्र गयो सूख छंद वंद भूलगयो सबै,
चंद भयो मंद हिये अति अकुलानोहै ८४२ ।

दोहा ।

इत उत मोहन चक्र चित, डरके वश अकुलाइ
ग्वालिनके घरमें घुसे, ऐंचि ऐंचि दधि खाइ ।

ग्लानि-लक्षण ।

सुमिरि परश मन समुझ जहँ, चीज़ घिनाही देख ।
घिन उपजै कवि कहत हैं, ताहि गलानि विशेख ॥

ग्लानिका उदाहरण-सवैया ।

काहू समै मदपान किये, दशशीश गयो चलि सिंधु किनारे । न्हात विलोकि त्रिया सुरकी, अस्कंद भनै इमि वैन उचारे ॥ जाय कहौ अपने अपने, पतिसों चलो वेगहि संग हमारे । तासों उड़ी दुरगंधि महा, मुखफेर रहीं सबरी मनहारे ॥ ८४६ ॥

दोहा ।

नभवाणी सुनि द्विज सबै, मनमें रहो घिनाइ ।
भानु प्रताप अयानको, शाप दई रिसियाइ ॥

आश्चर्य लक्षण-दोहा ।

देखत अजब चरित्र वा, मिलत सुमिर सुनि कान ।
विस्मय होइ हिये कछू, सो आश्चर्य बखान ॥ ८४७ ॥

आश्चर्यका उदाहरण-कवित्त ।

द्रुम कदलीके युग्म शोभित तड़ाग तापै,
श्रीफल फरेहैं कौन पावत प्रभाकोहै ।
तापर कपोल राजै शुक पिक मोद मान,
चंदरवि संयुत विराजत समाकोहै ॥
भनत अस्कंद कंजकलित घटाघनकी,
तारेहैं समूह तापै सकत छिपाकोहै ।
लाल चलि देखो यह कौतुक अनूप ख्याल,
परम मनोहर विचित्र रचनाकोहै ॥ ८४८ ॥

दोहा ।

कछु गजगतिके आहटन, क्षीणहोत मृगराज ।
सुनत वचन इमि सखीके, चकित भये ब्रजराज॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

सजिकैं शृँगार औ सवाँर माँग मोतिनसों,
भाल लाल बेंदाचारु भूषण सुधारेहै ।
धरकर आनन विचित्र चित्रसारी बीच,

सोवत विशाल बाल रति छबिवारेहै ॥
भनत असकंद ब्रजराज आज देखो चलि,
चकित रहोगे उपमा न मानवारेहै ।
प्रफुल्लित कंजपै सुचंदहै प्रमोदमान,
चंदपै सुभानु उये घनपै सुतारेहै ॥ ८५० ॥

दोहा ।

नववर कंचनलता पर, चक्रवाक युग आइ ।
बैठे करत प्रमोदको, शोभा सरस दिखाइ॥८५१॥

निर्वेद लक्षण-दोहा ।

वेश्यारतके कामके, श्रमते मन पछिताव ।
उपजै हिय निर्वेद कहि, समरसथायी भाव८५२॥

निर्वेदका उदाहरण-सवैया ।

नहीं ज्ञानहु ध्यान सुजानौ कछू, करि हेतु भलो तप कीन्ह्यो नहीं । नहिं छोड़ि विषयरसकी चरचा, पदपंकजमें चित दीन्ह्यो नहीं ॥ नहिं

गायो गुविंदके गीतनको, अस्कंद भनै प्रभु
चीन्ह्यो नहीं । मन कीन्ह्यो कहा इतना करिकै
जुपै रामको नाम सुलीन्ह्यो नहीं ॥ ८९३ ॥

दोहा ।

सरसविनोद निशिदिन करत, चित लगाइचितहार
रामनाम मन एक क्षण, क्यों नहिं लेत गँवार ।

पुनर्यथा–कवित्त ।

छलबल और काज निरस प्रसूननमें,
चित्तको लगाइ फेर इत उत टारै ना ।
फिर पछताइ आइ कठिन कठोर हीमें,
गुंजत रहत नेक सुमति विचारै ना ॥
भनत अस्कंद तू अनंदकर प्रेम ठान,
बात सब तेरे हाथ क्यों अब सुधारैना ।
भ्रमत कहाधौं फिरै छोड़ मकरंदमूल,
भौंर मन शंभु कंज पदन बिसारैना ॥ ८९५

दोहा।

पग्यो रहै निशिदिन सदा, विषरसहीको मान।
करै एकहू क्षण न मन, शंभु उमाको ध्यान ८५६॥

इति श्री शिवसुत षोडशनाम प्रताप अनुभारतीज्ञः श्रीमन्महाराज कुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरिविरचिते रसमोदकाऽभिधेकाव्ये श्रीमहाराजाधिराज श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनरसिकहृदयानंददायिने स्थायीभावप्रकरणं पंचमोल्लासः ॥ ५ ॥

षष्ठमोल्लासः ६.



अथारसनिरूपणम्--दोहा।

मिल विभाव अनुभावके, हाव भाव सब आइ।
संचारिनके वृंदमय, रस पूरण थिर भाइ॥
ज्यों विकार हेमंतऋतु, नीर बरफ दरशाइ।
रसस्वरूपथिरभाव तिमि, परनित कहि कविगाइ॥

कहि संयोग वियोगरस, सो शृँगार पुनिहास।
करुण रौद्र पुनि वीरको, चार प्रकार विलास॥
भय बिभतस अद्भुत कहे, शांत सरस रस रूप।
नवरसके ये नामहैं, लक्षण लक्ष अनूप॥ ८६०॥

शृंगारलक्षण-दोहा।

स्थायी रत भावहै, जाको सो शृंगार।
संचारी अनुभाव मिलि, अनुविभाव सुखसार॥
प्रीति अपर पर जाइ जो, रति मन लगन सुजान।
थायि भाव शृंगारको, वरणत कवि बुधवान॥
सो शृँगाररस भाव थिर, पूरण रत जहँ होइ।
आलंबन अरु दूसरो, उद्दीपन कहि सोइ॥ ८६३॥
आलंबनके नायिका, नायक तहाँविचार।
सखी सखा वन वाग ऋतु, उद्दीपन निरधार॥८६४॥
मृदुमुसक्यान विनोदयुत, हाव भाव तहँ मान।
है शृँगार अनुभावके, वरणत सुकवि सुजान॥
उन्मादादिक भाव जे, संचारिनके लाइ।

श्याम देवता श्याम रँग, सो शृँगाररस गाइ ८६६ ॥
सोद्वै भाँति बखानहीं, मिलन शृँगार सँयोग ।
अटक मिलनकी होत कछु, सो शृँगार वियोग ॥

संयोग शृंगार–सवैया ।

हरै हँसि जोरत नैननको, रसरंग भरी बतियाँ करि चाहि । सजै इक एकके अंबर अंग, वरी सुघरीकि सराहि सराहि ॥ भनै अस्कंद छके मदमें, बढ़ै मैन तरंग उमंग अथाहि । करै नित मोद प्रमोदित होत, दुवो रितिप्रीति निबाहि निबाहि ॥ ८६८ ॥

दोहा ।

प्रेम पयोनिधिके भये, युगल मीनसम मोद ।
सरस रूप रतिकामते, दंपति करत विनोद ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

सकल शृँगार साजि देखि रतिमैन लाज,
वैद बढ़ सीकरत प्रीतिरति रातेहैं ।

विहरत मोदमान कोटिन कलान ठानि,
मृदु मुसक्याइ चख चपल चलातेहैं।
भनत अस्कंद प्रेम उठत तरंग रंग,
बढ़त अनंग रंग अंग दरशाते हैं।
लखि लखि होतहैं निहाल एक एकनपै,
सरस नवेली लाल युग रसमाते हैं ॥ ८७०।

दोहा।

अति मदमाते प्रेममय, निशिदिन आठौ याम
है चकोर है चंदलौ, देखत श्यामा श्याम ।

वियोगश्रृंगार लक्षण—दोहा ।

जहँ बिछुरन दोहूनकी, दोहुन व्यापत आइ
विप्रलंभ श्रृंगारसों, विरहदशा सम पाइ ॥ ८७२।

वियोगश्रृंगारका उदाहरण—

कवित्त।

बैठि निज मंदिर विसूरति पियाकी वाट,
गणित गनावति मुहूरत जवाई सों ॥

ज्योंज्योंहोतरातत्योंत्योंअतिअकुलाताहिये,
धीरना धरात काम बढत सवाई सों ॥
भनै असकंद तैसी शरद हिमंत बीते,
शिशिरको अंत औ वसंतकी अवाई सों ॥
भरिभरिरहै प्यारी विरह भभूकन सों,
जरि जरि उठत कलानिधि कसाई सों८७३॥

दोहा।

विरहविथा कासों कहौं, पिय छाये परदेश ।
अबलौं घर आये नहीं, वाधक मदन कलेश ॥

सवैया।

देखो जितै तित फूलिरहे वन बागचहूँदिशि फूल सुहाये। तापर देतहै कोइल कूक सुहूक उठै दिय मैन बढ़ाये ॥ त्यों अस्कंद भनै अलि पुंजके पुंज सु गुंज करै फिरै धाये ॥ मोहिं सतावतहै विरहा अबलौं सखी श्याम घरै नहीं आये ॥

दोहा ।

विन माधो आधी घरी, कल न परत पलएक ।
विरह व्यथा छिन छिन बढ़ै, अनत कराई टेक ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

येरी वीर धीर तनु नाहिं मनमोहनके,
करि निठुराई गये आई ऋतु वेश लूह ।
पापी पपीहा पिय पिय करि पुकारे जोर,
चहुँधा दिखात मालतीके फूल फूले जूह ॥
भनत अस्कंद तरु सफल सलोलिनपै,
कोइल कजाखी करि करत करारी कूह ।
झौरन रसाल वेश मौरन रसाल तापै,
अति विकाराल रूप देखे है अली समूह ८७७।

दोहा ।

बोलै पिक डोलै विटप, त्रिविध सुगंध समीर
गुंज करै अलि कुंजमें, मीन हिलोरे नीर ।

पुनर्यथा–कवित्त।

नटखट बातैं करि झटपट लीन्होंमोहिं,
खटपट मचाकै गये दीन्ही तजि गोकुला।
कीन्हीहूँ न कीन्ही चीन्हीमनदै सुहीनी भई,
तनकी दिखात ऐसी तनुकी नवो कला॥
भनत अस्कंद देख ताको चंद मंद होत,
तारागण वृंद साथ ऊवत समो कला।
अबलौंनआयो सो रमायो मन भायो कियो,
आयोरी वसंत कूक दीन्ही आन कोकिला॥

दोहा।

जग जाहिर जानत सबै, यह सनेहकी रीति।
पै नकीजिये रेदई, निरमोहीसों प्रीति॥ ८८० ॥
सो विवोक शृंगार यह, तीन भाँति निरधार।
कहि पूरब अनुराग पुनि, मान प्रवास प्रकार॥

पूर्वअनुराग लक्षण–दोहा।

व्याकुलता जो मिलनते, प्रथम होइ कछु आइ।

सो पूरव अनुराग कहि, रसग्रंथन में गाइ ॥८८२।

पूर्वाअनुरागका उदाहरण–कवित्त ।

धीरज सुधार तेरे प्रेम हिय वाके बस्यो,
कसन कसौटी रूप कंचन भलो बनो ।
भनत अस्कंद मंज कंज कर देख तेरे,
अलिमकरंद चाहि वा मन यही ठनो ॥
लगन लगी है तुव लगन लगीहै खरी,
मगन मनोज तैसो विरह विलोकनो ।
सघन मयूरचंद चाहत चकोर जैसे,
सदृश दिखात नेम बढ़त घनो घनो॥८८३॥

दोहा ।

सुमन जुराफासे भये, राधा माधो राध
प्रेमनेम दोहुन बढ्यो, मिलिबेकी हिय साध८८४।

पुनर्यथा–कवित्त ।

प्रथम विलोकतही दृगन लगाई लाग,
श्रवण डराई डीठ बाँसुरी बजैया पै ।

मतगुण गावत न और मत भावतहै,
विरह भभूक हूक उठत जुन्हैयापै ॥
भनत अस्कंद अंग वढ़त तरंग काम,
सरस उमंग हिये धीरज धरैयापै ।
झटकन आवै अलि खटकर ह्वैहै मन,
अटक रही है छबि लटक कन्हैयापै ॥८८६॥

दोहा ।

कहा वान मेरी सखी, येरी परी विचार ।
जित देखत तित दृगनहो, मूरति मृदुल मुरार ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

ऐसी बरजोरी कहूँ होरीमें सुनी है वीर,
मेलिकै अबीर मूठी ऊपर उड़ाइगो ।
रोरी मलि मृदुल कपोल गोल गालनमें,
लोने गोल लोचनसों सैनन बताइगो ॥
भनत अस्कंद छैल छलिया छबीलो वह,
मुरली बजाइ कै सनेह सरसाइगो ।

छोड़ि पिचकारी घोरि केसर अबीर मोपै,
नंदको किशोर चोर चितलै चुराइगो॥८८७

दोहा ।

कछु दैगयो न लैगयो, चित चुराइ चितचोर
अरे निरदयी निरदयी, कैसो कठिन कठोर ८८

पुनर्यथा—दोहा ।

ज्यों ज्यों त्रिविध समीर चल,तनु परशतहै आइ
त्यों त्यों लगन सनेहकी,दूनी ही दरशाइ॥८८९

मान लक्षण—दोहा ।

जो त्रिय पियके दोष ते, हियमें ठानै मान
त्रिविध भाँति सो जानिये, लघु मध्यम गुरु मान

लघुमान लक्षण—दोहा ।

रोष करै त्रिय पीयसों, परत्रिय देखत देष
सो लघुमान बखानहीं, कविजन चतुर विशेष

लघुमान उदाहरण—सवैया ।

दधि बेचन आइ गुवालिनसों दृग जोरत दे

विषाद बढ्यो । पलकापर पौढ़ रही रिसकै चितमें कछु नेक न मान चढ्यो॥अस्कंद भनै भरि अंक लियो कहियेतो सयान कहाँते पढ्यो । मुखसारी हरीते उघारयो जबै, मनो धानके खेतते चंद कढ्यो ॥ ८९२ ॥

दोहा ।

कछुक पियासँग रिस करी, परी पलँग पर जाइ ।
अंक भरत खोल्यो वदन, देखत इंदु लजाइ ॥

मध्यम मान लक्षण–दोहा ।

जो पियके मुखते सुनै, और त्रियाको नाम ।
होत मान मध्यम छुटै, सौंह करे अभिराम८९४॥

मध्यम मानका उदाहरण–कवित्त ।

बूझत बतायो हौंतो सहज सुभावहीते,
प्रति प्रति नाम लै नक्षत्रन गनायोहै ।
तापर इतेक रिस ठानि रसखान प्यारी,
कौन अपराध जानि मान हिय छायोहै ॥

भनत अस्कंद सौंह करन कहाँलौं कहौं,
तुव उर संभ छोड़ि कौन मन भायोहै ।
कर परशाइ तापै दुविध मिटाइलीजै,
वचन विचित्र सुनो वदन हँसायोहै ॥ ८९५ ॥

दोहा ।

सौ सौ सौंहन के करे, ह्याँलग आई बाम ।
भूल न लीजौ श्याम अब, पर तिरियाको नाम८९६

गुरुमान लक्षण–दोहा ।

पिय रत औरी नारि लखि, उपजत है गुरुमान
छूटत पाँइनके परे, वरणत बुद्धि निधान ॥८९७

गुरुमानका उदाहरण--कवित्त ।

विनय हमारी मानिलीजै तौन लीजै दोष,
बनत न बात करैं ऐसी मत टेकहूँ ।
तुव मुख चंदको चकोर ब्रजचंद आली,
अधर सुधारस तृषारिन सु दे कहूँ ॥
भनत अस्कंद रहै मेरी बान एरी वीर,

भूषण शरीर साजि येतो यश ले कहूँ ।
मानरी कहाँ लौं कहौं मानरी सुएक याम,
रजनी व्यतीत नीरजनैनी न नेकहूँ ॥८९८॥

दोहा ।

चल नाहीं नाहीं न कर, न कर अली यह टेक ।
सौत न वाहीं चल अबै, गलवाहीं लै नेक ॥ ८९९॥

पुनर्यथा--कवित्त ।

तोहिं बुलवायो मोहिं हेत सों पठायो कह्यो,
नेहको घटायो सो तो नेकहू न नीको है ।
चल अब नीको है सुकान्ह वश कीको तुव,
शशि मुख नीको वह पियासो अमीको है ॥
भनत अस्कंद सो मजा न कछु फीको यह,
रिसान कह नीको तू मान डर कीको है ।
मान कर नीको अब न मान कर नीकोरी,
सुमान कर नीको व मान कर नीको है ९००

दोहा।

मान न कर अब हे अली, मान सु कर यह बात।
मान सु कर नीको अधिक, बढ़त मान वह गात॥

पुनर्यथा–कवित्त।

सघन लतान कुंज रहस मचायो कान्ह,
तोहिं बुलवायो आई मैं चल समाज तै।
तू तो अतिचतुर सुजान रसरीति जानै,
कर ना विलम्ब अंग भूषण सुसाज तै॥
भनत अस्कंद दियो उत्तर न ताहि कछू,
बोली अनखाइ कहा करत सुआज तै।
कौन मति ऐसी बात कहत अनैसी बाल,
कबहूँ न रूठी नई रूठी ब्रजराज तै॥१०२॥

दोहा।

बनै न बात प्रवीणबल, मनमें आनँद आन।

कहा देउँगी जाइकै, उत्तर उतै सुजान ॥ १०३ ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

चोप चल्यो रसके वशमें, चसक्यो नहिं काहु सनेह लगाये। का दियो चंद चकोरनको, जो सुधा लियो ताहि अँगार चुगाये ॥ त्यों अस्कंद मयूरनको घन, का कियो बार पुकार मचाये। हे अलि बात कहौं किहिभाँति वृथा अलि गुंज गुलाबके पाये ॥ १०४ ॥

दोहा ।

जे सनेह चाहत घनो, तिनहिं न व्यापत पीर ।
उदधि माँझ मुकतान हित, पैठिजात मतिधीर ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

आई पठाई लिवाइबेको सब, जानती रीति कहा कहेमें है। देखेविना यो मनोहर रूप, टरै पल साल सुकैसे बितै है ॥ त्यों अस्कंद कहै

सुन वैन, कहा उर सौत प्रतीति न लैहै । सैहै न मान गुमान भटू, हम जाव मनोज व्यथा न बढ़ैहै ॥ १०६ ॥

दोहा।

सौतनकी परतीत हिय, बढ़ीलालके ऐन।
कहा भटू तुमसों परी, जाव कहे इमि वैन १०७॥

दोहा।

जो सौतिन सँग हित कन्यो, पिय न कीजिये मान।
जानतहै रसरीतिको, सब विधि चतुर सुजान ॥
सेज सवाँरि शृँगार सजि, हिय मिलाप सुखमान।
जान आन पति स्यान त्रिय, दुख विछोह पछिताना।
सो प्रवास कहिये पिया, जो विदेशमें होइ।
ताते दुख नारीनको, अतिशय जानो सोइ ११० ॥
सो प्रवास द्वै भाँतिको, विजन कहत बनाइ।
इक भविष्य इक भूतहै, रसग्रंथनमें पाइ ॥ १११ ॥

भविष्यप्रवासकाउदाहरण-सवैया ।

अब कौन कहौ तुम्हैं कैसी भई, मति कौन लई कहा वैन कहौ । ऋतु माधवी फैलरही चहुँ ओर, करै अलि गुंज विदेश चहौ ॥ यह कोयल कूक सम्हारिहै को, अस्कंद भनै मिलिमोद लहौ । विन कारज काज विचारिबेकी, यह टेक कुटेक तजौ न गहौ ॥ ११२ ॥

दोहा ।

चरचा सुनत विदेशकी, बाल रही दुख पाइ ।
ज्यों पंकज रवि अंतमें, सहज जाइ कुम्हिलाइ ॥

भूतप्रवासकाउदाहरण-कवित्त ।

वनविन परश नवीन वन पत्र शाखा,
मृदुल मनोहर वितान न लतानभो ॥
कल कल पिकन मलिंदन मचायो जोर,
शोरकरि राख्यो तहाँ बैठक प्रमानभो ।

भनत अस्कंद वैन चातक विदेश छाये,
उनबिन विरह महीपति सुजानभो ॥
सेवकन मानभो सरोज गुणवानभो,
सुगुरुजन भानभो निशापति दिवानभो ॥

दोहा ।

जित देखो मधुऋतु फबी, चहूँ ओर दरशात ।
पिक पापी तापर करत, बोलि बोलि उतपात ॥

पुनर्यथा-सवैया ।

या ऋतुराज समाजको साज, सखी विरहानल आन पठायो । त्यों असकंद भनै अलि गुंज्जसु, कोइल कोकिल शोर मचायो ॥ औधि गई चलि आवनकी, मनमानै न नेक कछू समझायो ॥ नाथ कहाइकै गोपिनके अब, कूबरी संग सनेह लगायो ॥ ११६ ॥

दोहा ।

अरेनिरदयी निरदयी, ऐसी लगन लगाइ ।

कुबजाके रस वश भये, फिर न लई सुधि आइ ॥
विरह अवस्था दश कहीं, जो वियोग शृंगार ।
षटसंचारिनमें कही, अब वरणतहौं चार ॥११८॥
कहि अभिलाष सुगुण कथन, अरु उद्वेग प्रलाप।
जे राखे पंडित कविन, रसग्रंथनमें थाप ॥११९॥

अभिलाष लक्षण-दोहा ।

चाह करै अति मिलनकी, जो त्रिय पिय हिय ऐन।
अभिलाषा तासों कहत, कछु ललचौहे वैन ॥

अभिलाषका उदाहरण-कवित्त ।

क्षण क्षण आवत विचार मन ऐसो सखि,
छोड़ि कुलकान और काज चित दीजै ना ।
वेई केलि कलन मनोभव तरंगनमें,
अधर सुधाको छोड़ि और रस पीजै ना ॥
भनत अस्कंद देखि हँसन बतान बाँकी,
मृदु मुसक्यान नाम लाजको सुलीजै ना ।

मोहनकी मूरति विशाल मनमोहनीको,
हियसों लगाइ जुदो एक पल कीजै ना॥९२१॥

दोहा ।

वदन इंदु घनश्यामको, मो मन भयो चकोर ।
इकटकही देखत रहौं, यों चित चाहत मोर ॥

गुण कथन लक्षण-दोहा ।

गुण बखान जो विरहमय, करै सुपियकी चाह ।
जतन सहित गुणकथनसो, वरणतहै कविनाह ॥

गुणकथनका उदाहरण-कवित्त ।

खेलन चली ज्यों फाग सखिन समाज लैकै,
ताही समै श्याम धूमधाम करि आगयो ।
भनत अस्कंद नैन सैनन घलाघलमें,
रूपकी झलाझलमें मन धौं कहागयो ॥
करि सरवोर रंग केसर झकोरनसों,
अंग अंग मदन उमंगहि बढ़ागयो ।

नजर बचाकर छिपाकर गुलाल लाल,
अंकभरि कुचन कपोलन लगा गयो॥१२४॥

दोहा।

वा बनवारी कुंजमें, गजब गुवालिन आइ।
हँसि हेरन मुसक्यानमें,मो मन लियो चुराइ१२५

उद्वेग लक्षण–दोहा।

चितन लगत कहुँ विरहवश,मन अतिही अकुलाइ।
सो उद्वेग बखानहीं,कविजन ताहि बनाइ॥१२६॥

उद्वेगका उदाहरण–कवित्त।

इत उत जाइ धाइ चढ़त अटाननपै,
मन पछताइ नहीं धीरज धरतहै।
कछु न सुहाइ चित अति अकुलाइ ताको,
सखिन सहेलिनसों बात न करतहै॥
भनत अस्कंद जैसे लगत वसंत हीमें,
विन मकरंद अलि दौरत फिरतहै।

कल क्षण परत न एक पल एक ठाम,
श्यामविन राधा भौंरि भाँवर भरतहै॥१२७॥

दोहा ।

खान पान भूषण वसन, दिवस न रात सुहाइ ।
जब सनेह लगजातहै, निरमोहीसों जाइ ॥१२८॥

प्रलाप लक्षण-दोहा ।

कहत निअर्थिक वैन जहँ, विरहीजन दुखपाइ ।
तासों कहत प्रलापहैं, जे प्रवीन कविराइ १२९ ॥

प्रलापका उदाहरण-कवित्त ।

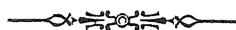
तारन बतावै इंद्रवधुन समाज फैली,
चंदहि बतावै रवि सुमत तरंगसों ।
रैनहि बतावै दिन दिनहि बतावै रात,
पाननको पात कहै विरह उचंगसों ॥
भनत अस्कंद श्याम नाम तुव टेर टेर,
सुतरु तमालनके मोहत कुरंगसों ।
काम कर व्याकुल न धीरज धरत बाल,

देख घन उठत सुभेटन उमंगसों ॥ १३० ॥

दोहा ।

जब जब मदन उमंग उठि, विरहरूप दरशाइ ।
पिय पिय करि त्रिय ननद हिय,लपटजातअकुलाइ

नवरस निरूप्यते ।



अथ हासरस–दोहा ।

अस्थायीको हास जो, सो रस हास बखान ।
कूदब कहब कुरूपता, तहँ विभाव मत जान ॥
हँसिबोई अनुभाव कहि, उच्च मंद मुसक्यान ।
तहँ संचारिनको हरष, और चपलता आन ॥
रंग श्वेतहै हासरस, नारद देव बखान ।
ताको वरणौं विधि सहित,सुनि हरषैं बुधवान१३४

हासका उदाहरण–कवित्त ।

चरित विवाहमें गिरीश गिरिजाके भयो,

नेगी नेग माँगत दुहूँदिश चुकाइकै ।
देतजात अलख निरंजन कहाँलौं कहौं,
जापै द्विज और कछू माँग्यो हिय चाइकै ॥
भनत अस्कंद शंभु नजर बचाइ एक,
फुंकरत साँप दियो करमें गहाइकै ।
देखतही उझक झपाक तजि ठाढ़ो भयो,
विहस उठीहै सभा अति सुखपाइकै ९३८ ॥

दोहा ।

बाल बजावत बाँसुरी, लख्यो त्रिभंगी रूप ।
विहँसि कह्यो यह कूबरी, को सतसंग अनूप ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

एक समै हरि शंभुके पास, चले हियमें अति मोद बढ़ाइकै । ते चले आवत ते उतते, अस्कंद भनै उनके गुण गाइकै ॥ भेंटतही खगके पति देख, भजे तजि अंग भुजंग डराइकै । कौतुकलौं सुर औगण भूत,हँसे जितके तितही मुसक्याइकै॥

दोहा।

हम जानी नँदलालहौ, पै दलालके पूत।
विहँसि कह्यो ब्रजबालने, फिरत लगावत सूत॥

करुणारस लक्षण-दोहा।

अस्थायीको शोक मिलि, करुणारस पहिचान।
आलंबनको निरस रस, विरह उदीपन जान॥
अनुभावहिको महिपतन, अरुरोदन जो भाव।
संचारी निर्वेद तहँ, वरणे कहि कविराव॥
रंग कबूतरके लसत, वरुण देवता तास।
करुणा रस इहिविधि कहैं,जे कवि सुमति हुलास॥

करुणारसका उदाहरण-कवित्त।

माऱ्यो इंद्रजीतको अनंत बलवंत वीर,
भनत अस्कंद जाकी शूरनमें थाप है।
जाइ भुज निकट गिरी है सो सुलोचनाके,

रोदन सहित परी महिमें सुकाँप है ॥
वंदि सब छूटी दुखद्वंद्वमैं भई है भूर,
भाँवर भरत ताके कहिके प्रताप है ।
शिरधुनि कहत सुहाय विधि कीन्ह्यो कहा,
निपट विहाल करै विकल विलाप है॥१३९॥

दोहा।

लखत जटायूको मरण, रघुपति करुणा कीन ॥
दीनबंधु दुखके दरन,परमधाम तिहि दीन१४०॥

रौद्ररस लक्षण–दोहा।

क्रोधभाव थायी लहै, वहै रौद्ररस माहि ।
आलंबन है अरुजुरन,उद्दीपन कहि ताहि॥१४१॥
कुटिलभौंह दृग अरुणई, अधर दावि अरुभाव ।
गर्व और कहि चपलता, तहँ संचारी भाव १४२॥
रक्तवरण रस रौद्रहै, रुद्र देवता तास ।

ताको लक्षण लक्षकर, वरणौं सुमतिप्रकाश॥

रौद्ररसका उदाहरण–कवित्त।

बढ़त विवाद भयो अंगद सुकोपमान,
वचन दशाननसों कहत रिसाइकै।
येरे मतिमंद मेरे देख भुजदंड तोहिं,
खंड खंड डारौं करि दाँतन चबाइकै॥
भनत अस्कंद यो त्रिकूटाचल टारिडारौं,
मारिडारौं निश्चर सँहारिडारौं धाइकै।
फारिडारौं धरणी रसातल पताल मध्य,
तुरत पठाउँ दुष्ट लंकहिं दबाइकै॥ १४४॥

दोहा।

कटकटाइ कर पटकि महि, बोल्यो वचन कराल।
जानतहौं दशशीश तुव, निश्चय चाह्यो काल१४५

वीररस लक्षण–दोहा।

थायीको उत्साह जहँ, वहै वीररस जान॥

सो कहि चार प्रकारसों, युद्ध वीर इक मान१४६॥
दया वीर कहि पुनि कह्यो, दान वीर पहिचान ।
धर्मवीर नीको अमित, भाषत बुद्धिनिधान १४७॥
आलंबन रिपु कौतु रण, युद्धवीर महँ जान ।
सैना शोर सुनै बढ़ै, उद्दीपन अनुमान ॥ १४८ ॥
दृग लाली अरु फरकबो, अंग तहाँ अनुभाव ।
संचारी तहँ उग्रता, गर्व असूया भाव ॥ १४९ ॥
इंद्रदेव कुंदन वरण, युद्ध वीरको ऐन ।
ताको कहत उदाहरण,सुनत होइ मति चैन१५०॥

युद्धवीरका उदाहरण—कवित्त ।

आयो कुंभकरण विसैन रणवीर गाढो,
युद्ध करिवेकी क्रुद्धकरि विकरालहै ।
धरि धरि खान लाग्यो कपिन समूह यूह,
कूह करि भागे भालु निपट विहालहै ॥
भनत अस्कंद रामचंद्र कर चाप लीन्ह्यो,

दौरत दबाइदेत दिग्गज सुकालहै ।
झपट झपेट ताकी रुकत न नेक तऊ,
गिरत न भूमि शर निकरेकपालहै ॥ ९८१ ॥

दोहा ।

इत रिसरातो पवनसुत, उत दशशीश प्रचंड ।
भिरत दुहुँनके हालगो, अतल वितल महिमंड ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

प्रबल प्रचंड धायो छायो शोर मंडलमें,
आयो मेघनाद नाद करत झडाकसे ।
हाहाकार माची सब भागे सुर देखवाको,
इंद्र करि कोप शर छाडत सडाकसे ॥
भनत अस्कंद लखि उपमा पुराणनकी,
युद्ध भयो प्रबल सुभटन चड़ाकसे ।
भागत लखत दूर लागत गयंद शूर,

फूटैं मूड़खलनके तड़के तड़ाकसे ॥ ९६३ ॥

दोहा ।

कोटिन भटके बीचमें, अनिरुध एक प्रचंड ।
लै कपाट मारत भयो, दुष्ट करे सब खंड ॥

दयावीर लक्षण-दोहा ।

दयावीर विच देखि वो, है विभाव दुख दीन ।
हावभाव मृदु बोलबो, अरु करिबो दुख छीन ॥
तहँ संचारीभाव धृत, और चपलता जान ।
दयावीर वर्णन करै, इहिविधि बुद्धि निधान ॥

दयावीरका उदाहरण-कवित्त ।

मच्छह्वै आयो कहूँ कच्छ ह्वै आयो कहूँ,
धारचोहै वराह रूप सुखद सुहायो है ।
बावन भयोहै अरि रावण भयोहै कहूँ,
बोध नरसिंह रूप विकट बनायो है ॥
ह्वैकैअनुराग आय क्षत्रिन जतायो कहूँ,

भनत अस्कंद कृष्णचंद यशगायोहै ।
जब जब दीननपै संकट परयोहै आइ,
तब तब दीनबंधु तुरत बचायोहै॥१६७॥

दोहा ।

दीन सुदामा देखिकै, दया करी अभिराम ।
कृपासिंधु करिकै कृपा, दीन्हें कंचनधाम ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

करुणा निधानके समान कौन दूसरोहै,
गीध गणिकासे धर्मधामको पठायेहैं ।
भारत प्रचंड दल दोहूँनके बीच परे,
भारहीके अंड घंट तूरिकै बचाये हैं ॥
भनत अस्कंद करी द्रौपदी पुकार जबै,
चीरको बढ़ाय द्वारका से आप धाये हैं ।
दीननके कारज सुधारत हमेश आये,
या हितसों दीनबंधु विरद कहायेहैं ॥ १६९ ॥

दोहा ।

अरि विचार कीन्ह्यो नहीं, ऐसे दीनदयाल ।
दीन विभीषण जानिकै, तुरत कियो प्रतिपाल ॥

दानवीर लक्षण-दोहा ।

दानवीरको जानिये, याचक ज्ञान विभाव ।
धनको कछू न लेखिबो, सोईहै अनुभाव॥९६१॥
संचारिनके भाव जहँ, वीडा हरष मिलाइ ।
दानवीर वर्णन करै, इहिविधि कवि सुख पाइ ॥

दानवीरका उदाहरण-कवित्त ।

दीन्ह्यों गढ़लंकऔ निशंक करिदीन्ह्यों वंक,
रावण को नेकहू कृपाकरि निहारयोहै ।
दीन्ह्यों जलबुंद गंग भागीरथ संग जाके,
चरित सुनेते यमराज मन हारयो है ॥
भनत अस्कंद दीन्ह्यो हिरणाकुशहि राज,
भस्मासुर काज नहीं नेकहू विचारयोहै ।

येरे मन ध्यान आन करुणानिधान जान,
शंकर समान कौन दानदेनवारयोहै ॥९६३॥

दोहा ।

दीन्ह्यो शुंभनिशुंभको, आप दान वरदान ।
चक्रवर्ती महिमें कियो, कोहै शंभु समान॥९६४॥

धर्मवीर लक्षण–दोहा ।

धर्मवीरके जानिये, वेद पुराण विभाव ।
अरु ताहीकी विधि चलव, स्मृति लौ अनुभाव ॥
संचारीके भाव जो, तिनमें को धृतभाव ।
रसग्रंथनमें कहतहैं, जे प्रवीण कविराव॥ ९६५ ॥

धर्मवीरका उदाहरण–कवित्त ।

आये हरिद्वारपै स्वरूप धरि बावनको,
मोको यह जानीजात छलयो विशेषई ।
दान मत दीजै यह मानिमत लीजै मोर,

और इत हेरौ तुम्हैं कुमति कहा ठई ॥
शुक्रने सिखायो तौन मनमें न लायो कछू,
भनत अस्कंद झारी करसों उठालई ।
पैज प्रण पाल्यो नेक उरसे न हाल्यो बलि,
धरम निबाह्यो पीठ पगन नपादई ॥ ९६६ ॥

दोहा ।

रामचंद्र सँग वन गये, लक्ष्मण धर्मनिबाहि ।
को ऐसो प्रण पालिहै, भरतरूप अवगाहि९६७॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

राम वन फिरत विलोकत प्रणाम कीन्ह्यों,
देखन गईती तहाँ करि भ्रम भारी है ।
भनत अस्कंद कहा कौतुक विलोकि आई,
बोली करजोरि वही सुमति तुम्हारी है ॥
ध्यान धर देख जानि कीन्ह्योहै सियाको रूप,

दीन्ह्यो तजि तुरत सतीको त्रिपुरारी है।
धरम धुरंधर सो धरम निवाहिवेको,
शंकर समान ऐसो कौन प्रणधारी है॥९६८॥

दोहा।

यदपि प्रथम प्रण पालिकै, ऐसो धरम निवाह।
कीन्ह्यो है त्रिपुरारिने, गिरिजा संग विवाह ९६९॥

भयानक रस लक्षण-दोहा।

थायीको भय जासुमें, सुरस भयानक जान।
कछू भयंकर देखिबो, सो विभाव तहँ मान॥
तहँ जो तनुको काँपबो, सोई है अनुभाव।
मोहादिक तहँ कहतहैं, कवि संचारीभाव॥९७०॥
ताको कहिये देवता, कालसुक्यैला रंग।
रसग्रंथनमें देखिकै, वरणत सुमति उमंग॥९७१॥

भयानकका उदाहरण-छप्पय।

फटत शेषशिर चटक पीठ कच्छप अति

गाढ़िय। डग डग दिग्गज डुलत शंक त्रैलोकहि बाढ़िय॥ समर मध्य करि कोप कालमूरति वह धारिय।एक डाढ़ कर भूमि एक नभ बिच्च पसारिय॥इमि भनत नृपति अस्कंद गिरि, मेरु हलत नहिं को डरिव। तहँ शुंभ निशुंभहि आदिदै, शत्रु भक्ष कालिय करिव॥ १७२॥

दोहा।

पुच्छ शीशधर क्रुद्ध करि, गरज्यो सिंह अपार।
सुनत भयानक शब्द वह, निश्चर भये सँहार॥

पुनर्यथा--कवित्त।

इतउत असुर गिरेहैं घूमि घाइलसे,
विकल सुत्रासमान सुनत अरारयोहै।
उठत सुएकनको बूझत न एक एक,
थर थर कंपत ससात मन हारयोहै॥
भनत अस्कंद और कौतुक कहालौं कहौं,

हरिणाकुश महीको उदर विदारचोहै ।
धरणि हलीहै खम्भ चटकफटचोहै जब,
विकट भयंकर नृसिंहरूप धारचोहै ॥१७४॥

दोहा ।

मेघनादको शिर हत्यो, अट्टहाटकरिहास ।
भालु कपिनके उरविषे, व्यापिगई तहँ त्रास ॥

वीभत्सरस लक्षण–दोहा ।

सो विभत्सरस जानिये, थायी जासु गिलान ।
पीब रुधिर दुरगंध अति, तेविभाव तहँ जान ॥
कंपादिक रोमांच तहँ, नाक मूँदि अनुभाव ।
तहँ संचारी मूरछा, मोह असूया भाव ॥ १७७ ॥
वाको सुर सब कहतहैं, महाकाल रँग नील ।
ताको वरणन करतहौं, समझौ सुजन सुशील १७८

वीभत्सरसकाउदाहरण–कवित्त ।

आयो छल करन अघासुर पठायो कंस,

बैठ्यो मग वदन पसारि अति भारीहै ।
भनत अस्कंद तहाँ ग्वालनकी भीर मग,
पैठेसब किलकत हाँक दैदै तारीहै ॥
मूत्र मल थूक ताकी अतिदुरगंध महा,
पित्त कफ लार की न नेकहू विचारीहै ।
सखनसुकष्ट जानि उरमें सुकोप ठानि ॥
फारिडारचोतुरत चड़ाक गिरिधारीहै १७९॥

दोहा ।

दुरगंधादिकको कछू, कीन्ह्यो नहीं विचार ।
सुरसाके मुखमें धस्यो, तुरताहि पवनकुमार ॥

अद्भुतरस लक्षण–दोहा ।

अचरज थायीभावको, सो अद्भुतरस जान ।
असंभवतको देखिवो, सो विभाव तहँ मान ॥
कँपनो वचन विचित्र अरु, रोम उठव अनुभाव ।
शंका मोह वितर्कते, कहि संचारीभाव ॥ १८२ ॥

पीत वरणहै जासुको, देव विरंचि वखान।
ताको कहत उदाहरण, सो अद्भुतरस जान ९८३॥

अद्भुतरसका उदाहरण–कवित्त।

देख्यो दधिखात ग्वालबालनके संग जबै,
करि भ्रमभारी ताहि हितसों हितैरह्यो।
बछरा चुराइ जाइ बंदकरे कंदरमें,
भनत अस्कंद कृष्ण गुणको गितै रह्यो॥
आयो इत देखिवेको करि अनुराग भयो,
अद्भुत चरित्र ताको मनधौं कितै रह्यो।
रचिकै त्रिमंडली सुकुंडली लिये करमें,
देखि ब्रह्ममंडली कमंडली चितै रह्यो॥९८४॥

दोहा।

अद्भुत भयो चरित्र जब, कियो शम्भुने गान।
भये विष्णु तहँ नीर सुन, सो गंगाजल जान९८५

पुनर्यथा--कवित्त ।

कोप करि अमित प्रचंड कर बुंद एक,
तुरत अगस्त्य शोषलीन्ह्यों सिंधुपानी है।
शंकर पिनाक जबै खंडन कियोहै राम,
नृपति समाजनकी सुमति भुलानी है ॥
भनत अस्कंद कृष्णचंदने फणिंद नाथ्यो,
वामन बढ्योहै ताहि सब जग जानी है ।
शम्भुके जटान बीच गंगाजी भुलानी रहीं,
रावणको फेंकदीन्ह्यो जठरि पुरानी है॥९८६॥

दोहा ।

लाल भाल लीलो उचटि, चटि समीरके लाल ।
रामचंद्रको लैगयो, अहिरावण पाताल ॥ ९८७॥

शांतरस लक्षण--दोहा ।

थायीको निर्वेद कहि, सोइ शांतरस जान ।

तहँ विभाव गुरु तपोवन, साध संग उर आन ॥
रोम उठव अश्रूपरत, तहँ अनुभाव विचार ।
संचारिनके धृत हरष, वरणत बुद्धि अगार ॥
नारायण है देवता, तासु रंगहै श्वेत ।
सोइ शांतरस जानिये, वरणत प्रेम समेत॥१९०॥

शांतरसका उदाहरण सवैया ।

वही भाष्यो विरंचि चतुर्मुखह्वै, अरु वेद पुराणन बाच्यो वही । वही पालत पोषत जीवनको जग झूठो सबै अरु साँचो वही । वही संतशिरोमणि एक लख्यो,अस्कंद निरूपकै जाच्यो वही। वही पूरण ब्रह्म निरंजनको, जित देखो उतै रँगराँच्यो वही ॥ १९१ ॥

दोहा ।

वही भक्तरस जानिये, वही जगत कर्तार ।
वही शक्त चर अचरपै, वही शक्त आधार १९२

पुनर्यथा-सवैया ।

शत्रुनके मुख भंजिबेको, जन आपनेके दुख-द्वंद्व दरैया । संतति संपति भूरि करै, गुणगान करै भवसिंधु तरैया ॥ त्यों अस्कंद भनै प्रणपालक, या कलिको मल पाप हरैया । या जगमें हम जाँचलियो, रघुनंदन एक अनंद करैया१९३

दोहा ।

एक नजरही के लखे, जो करिदेत निहाल ।
सो प्रभु मन तेरो अरे, शंकर दीनदयाल॥१९४॥

पुनर्यथा-सवैया ।

चार पदारथके फलदायक, हैं सब लायक दुःख दरैया । पातक छार अनेक करैं, भ्रमजाल हरैं यमजाल टरैया ॥ आतुर शत्रुको अत्र हनै, अस्कंद भनै भुवभार धरैया । या जगमें जन आपनेको, रघुनंदन येक अनंद करैया १९५ ॥

दोहा ।

तनु पुलकित, हरषित सुमन, हिये प्रेम सरसाइ ।
धन्य धन्य नर धन्य वे, राम कहत सुख पाइ ॥

कवित्त ।

जो मैंने किये हैं छल पातक अनेक तो मैं,
तेरही भरोसे एक नाम अवगाहेके ।
ज्ञानहू न जानौं कछू ध्यानहू न जानौं नेक
कीन्ह्यों जौन काज तौन सुमति सराहेके ॥
भनत अस्कंद गुण गावत सुरेश तेरे,
सुनियो महेश हो दिवैया हित चाहेके ।
आपने करे जो कर्म आपहीं भुगतौं गा तो,
हौं हूँ करतार करतार तुम काहेके ॥ ९९७॥

दोहा ।

याचेंते तुम देत हौ, बिनयाचें नहिं देत ।

हौ वरजोरी शंभु नित, नाम तुम्हारो लेत९९८॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

रंजन मुनिन्द्र और खंडन सुरारि वृंद,
भरै सुख भूरि दुख दारिद दरनहैं ।
तेजधर सूर अघ तिमिर सुनाश करे,
पूरण प्रकाश करै शोभाके धरनहैं ॥
भनत अस्कंद ध्यान धरत महेश शेष,
पावत न वेद भेद पंकज वरनहैं ।
छोड़ि छल छंद मोद मान कर वंद ऐसे,
आनँदके कंद नँदनंदन चरनहैं ॥ ९९९ ॥

दोहा ।

सुख संपतिको देतहैं, बड़े गरीबनिवाज ।
गोकुल चंद गुविंद मन, नंदलाल ब्रजराज १०००

पुनर्यथा-सवैया ।

मनोरथ प्रेमसे पूरो करै, अरुहेत करै करिदेत

निहाल । हरै कलिकष्ट अरिष्ट सबै, औ बढ़ावत कीरति बुद्धि विशाल ॥ भनै अस्कंद अनंद करै गुण औगुणहै जे करै नहिं ख्याल । सदा जनको प्रतिपाल करै सो कृपा करै दीनपै दीनदयाल ॥

दोहा ।

जासु तेज दिनकर लसत, विदित अवनि आकाश
प्रगट चराचरमें लख्यो, पानी पवन प्रकाश ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

निशिदिन आठो याम हरष हियेमें करि,
पागो रहै कुमति कुसंगत सुभाव रे ।
मानत न नेक तेरी कौन यह टेक तू तो,
बूझत अबूझ नहीं तनक बचावरे ॥
कुटिल कुपाट कर्म कुटिल करेहैं जौन,
भनत अस्कंद तिन्हैं अबतौ भुलावरे ।
येरे मन जगत प्रभाकर कृपानिधान,
गौरीपति सुखद गुणानुवाद गावरे ॥१००३॥

दोहा ।

विधि साँचो राँचो वही, बाँचो वेद पुरान ।
तिह याँचौ अस्कंदगिरि, शंकर कृपानिधान ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

मंगल प्रदायिनी अमंगल नशायिनीहै,
शम्भु ठकुरायिनी हमेशहू सुरक्ष है ।
शेष गुणगावत सुरेश मुनि ध्यावत सु,
दास प्रणपाल करै कारज ततक्ष है ॥
भनत अस्कंद दुख द्वंद्व सबै दूर करै,
भरत अनंद सो अपक्षनकी पक्ष है ।
गच्छ करि आतुर सुभक्ष करि शत्रुनको,
जक्तमें शिवाकी शक्ति राजत प्रत्यक्षहै १००५

दोहा ।

ऋद्धि सिद्धि पावै घनी, होइ सुपूरण काम ।
सिंह वाहिनी दाहिनी, जोकोइ आठो याम १००६

पुनर्यथा-कवित्त ।

आश करि याचत सुराचत हमेश भक्त,
सकल सुपास कर अमित विलास कर ।
ऋद्धि सिद्धि सहित सु अष्ट नवनिद्धि और,
वचन प्रसिद्ध स्वच्छ बुद्धिको प्रकाश कर ॥
भनत अस्कंद जक्त अंब तू कृपा करकै,
अष्टभुज मूरति सु उरमें निवास कर ।
पातक निराश कर शत्रुनको नाशकर,
दुष्ट उपहास कर विघन विनाशकर ॥१००७॥

दोहा ।

जगदंबे अंबे सुनौ, विनै करै कर जोर ।
देहु सुक्ख सुत संपदा, तेज ज्ञान गुण जोर १००८॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

हरिजात शोक दुखदारिद विदरिजात,
टरिजात गज व गुनाह डरि डरि जात ।

छरिजात कुमति कुसंग तिमि टरिजात,
संपदा करोरि सो कुबेर धरि धरि जात ॥
भनत अस्कंद प्रेम पूरण करै जो मन,
सृष्टिके अनेकन अरिष्ट दरि दरिजात।
नामके लिये ते पाप जरि जरि जात जैसे,
लगत समीर वोस बुंद ढरि ढरि जात॥१००९॥

दोहा।

उमा शम्भु उरमें बसैं, सुवश प्रेमके आन।
महिमा अगम अपार है, को करिसकत बखान ॥

पुनर्यथा-कवित्त।

याच्यों अस्कंद प्रेम पूरण हियेमें करि,
देहु सुत संपति कृपा करि कृपालु जस्तु।
कीजिये मनोरथ दयानिधि दयानिधान,
जन प्रणपालक कहावत पढी न वस्तु ॥
विनय सुनेते मन अधिक प्रसन्न ह्वैकै,

गौरी ह्वै गिरीशक ह्वै सेवक सुयेज मस्तु।
तेजवान अमित सुरूप सुत बुद्धहोहि,
कुल बलवान धन धान्य समृद्धि रस्तु १०११

दोहा।

जो याचै ताको मिलै, ऐसो यह उपदेश।
भनत कुवँर अस्कंद गिरि, ऐसे उमा महेश१०१२॥

कवित्त।

हिम्मतबहादुर अतिप्रबल प्रचंडकरे,
शिष्य सहजादगिरि सुयश अपारा है।
कंचनगिरि कुँवर सुकामतागिरीश करै,
तेज बल बुद्धिवान धरम सुधाराहै॥
तिनकेभयेहैं सुत शंकरकृपाते चारु,
गुणन गँभीर नाम देवी गिरिधाराहै।
तासुत महेशकी कृपाते अस्कंदगिरि,
विरच्यो अनूप रसमोदक हजाराहै॥१०१३॥

दोहा ।

दशनौसै अरु पाँचको, संवत भादौमास ।
शुक्लपक्ष द्वादश रवौ, पूरण ग्रंथप्रकाश ॥१०१४॥
राधा माधवको कियो, यामें रूप शृंगार ।
भूल चूक जो होइकछु, लीजौ सुजन सुधार १०१५

इति श्रीशिवसुत षोडश नाम प्रतापअनुभारतीज्ञः
श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरि विरचिते
रसमोदकाऽभिधेकाव्ये श्रीमहाराजाधिराज राधाकृ-
ष्णविहारे कविजन रसिक हृदयप्रमोददायिने
नवरसभाव प्रकरणं नाम
षष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

इति रसमोदक हजारा सम्पूर्ण ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

विक्रय्यपुस्तकें।

नाम.	कि० रु० आ०
रसिकप्रिया सटीक	१—४
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१—४
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद] ...	०—८
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद] ...	०—६
दंपतिवाक्यविलास—जिसमें सब देशांतर की यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खंडन कियाहै दोहा कवित्तोंमें (सुभाषित)	०—१२
नैषधकाव्य मनहरण छन्दोंमें राजा नल दमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चारित्र	१—०
सुन्दरीतिलक (श्रृंगाररसके चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबूहरिश्चन्द्र संगृहीत)	०—६
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०—८

काव्यरत्नाकार (एक २ समस्यामें रोचकता पूर्वक अनेक कवियोंकी चातुरीके कवित्त) ०—८

भाषाभूषण (नायकाभेद मधुर छंदबद्ध)... ०—२

अनुरागरसभाषा नारायणस्वामीकृत पद्योंमें ०—३

गोपीवियोगकी बारहखडी [लालाशालि-ग्रामकृत दत्तलालकी बाराखडी सहित ... ०—२

नखशिख शिखनख—इसमें भगवान्का शृंगार नखसे ले शिख पर्यन्तका कवित्तों में वर्णितहै...... ... ... ०—१।

काव्यमंजरी ... ... १—८

संपूर्ण पुस्तकोंका "बड़ासूचीपत्र" अलगहै देखना हो तो आध आनेका टिकट भेजके मँगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी—बंबई